ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – 570 006.

Karnataka State Open University
Manasagangothri, Mysore - 570 006.

अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी

M.A. Previous HINDI
Course / Paper - V

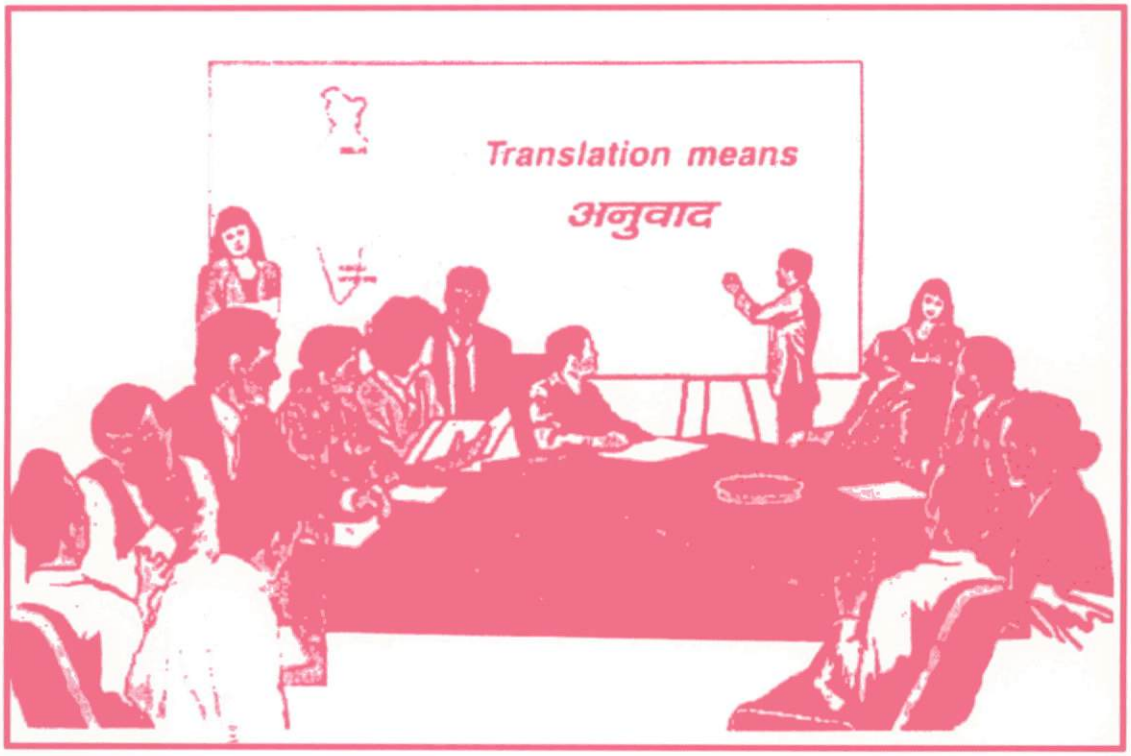

Block - 2

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾತಂತ್ರೀಕರಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ **1986**

ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ದೂರಶಿಕ್ಷಣ ಪದ್ಧತಿಯಲ್ಲಿ ಬಹುಮಾಧ್ಯಮಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತದೆ. ..... ವಿದ್ಯಾಕಾಂಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಕಲಿಕಾ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ಬದಲು, ಜ್ಞಾನ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವವರ ಬಳಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ವಾಹಕವಾಗಿದೆ.

ಡಾ || ಕುಳಂದೈಸ್ವಾಮಿ

The Open University system has been initiated in order to augment opportunities for higher education and as an instrument of democratising education.

National Education Policy 1986

The Open University system makes use of Multi-media in distance education system. ..... it is a vehicle which transports knowledge to the place of learners rather than transport people to the place of learning.

Dr. Kulandai Swamy

प्रथम एम.ए. - कोर्स पाँचवाँ

Course - V, Paper - V

2

''अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी''

'' अनुवाद ''

Unit No. 6 to 9		Page No.
अनुक्रमणिका.		

इकाई	06	अनुवाद की शैलियाँ	1 - 27
इकाई	07	आदर्श अनुवादक की योग्यताएँ एवं गुण	28 - 67
इकाई	08	अनुवाद की समस्याएँ	68 - 108
इकाई	09	अनुवाद के विभिन्न सिद्धांत	109 - 134

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो.एम.जी.कृष्णन
उप कुलपति तथा अध्यक्ष
क.रा.मु.वि.विद्यालय,
मैसूर - 6

प्रो.एस.एन.विक्रमराज अरस
डीन (शैक्षणिक) - संयोजक
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ.कांबले अशोक
अध्यक्ष:, हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि.विद्यालय
मैसूर - 6
संयोजक

डॉ.मिथाली भट्टाचार्य
रीडर, हिन्दी विभाग
ज्ञानभारती, बेगलूर वि.विद्यालय
बेंगलूर - 56
संपादिका

पाठ्यक्रम के लेखक

डॉ.सरगु कृष्णमूर्ति
प्रोफेसर
बेंगलूर विश्वविद्यालय

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, शैक्षणिक अनुभाग द्वारा निर्मित ।

सभी अधिकार सुरक्षित । कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना, इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में अनुलिपित या किसी अन्य माध्यम द्वारा प्रतिकृति नहीं किया जाएगा ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर - 6 से प्राप्त की जा सकती है ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से **रजिस्ट्रार**
(प्रशासन) द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ब्लाक परिचय

प्रिय विद्यार्थी,

आपने **ब्लॉक - एक** में अनुवाद की परिभाषा एवं प्रतीकांतर, अनुवाद का महत्व, प्रक्रिया तथा अनुवाद कला, विज्ञान और तंत्र, अनुवाद के प्रकार आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली । अब आप **ब्लॉक - दो** में अनुवाद की शैलियाँ, आदर्श अनुवादक की योग्यताएँ एवं गुण, अनुवाद की समस्याएँ तथा अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ. कांबले अशोक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6.

इकाई छः

अनुवाद की शैलियाँ

6.0. प्रस्तावना

6.1. उद्देश्य

6.2. अनुवाद की शैलियाँ

6.2.1. अनुवाद की शैली का अर्थ

6.3. मूल शैली लाने का प्रयत्न

6.3.1. मूल पाठ की शैली के आनयन की आवश्यकता

6.3.2. मूल की शैली

6.4. शैली - भिन्नता की अनिवार्यता

6.4.1. रचना के अनुसार शैली भेद

6.4.2. हिन्दी में शैली भेद

6.4.3. पर्याय शैली

6.4.4. मूल शैली में परिवर्तन

6.4.5. मूल पाठ के अनुसार शैली में परिवर्तन

6.4.6. शैली भेद का ज्ञान

6.4.7. वैयक्तिक रुचि

6.4.8. छंद

6.5. शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद की शैली

6.6. तथ्य प्रधान साहित्य के अनुवाद की शैली

6.7. तत्सम तद्भव शैली

6.8. शैली तत्व

6.8.1. ध्वनि सौंदर्य

6.8.2. अलंकार शैली तत्व

6.8.3. शैली का स्वरूप

6.9. शैली का अनुवाद

6.9.1. अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना

6.10. शैली मनुष्य है

6.11. निष्कर्ष

6.12. सारांश

6.13. अभ्यास प्रश्न

6.14. संभाव्य उत्तर के अंश अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

6.15. शब्दावली

6.16. संदर्भ ग्रन्थ और निबन्ध

6.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत घटक में आप को इस तथ्य की जानकारी दी जाती है कि मूल पाठ के विषय, विधा एवं उद्दिष्ट पाठक समाज के अनुसार अनुवाद की शैली बदलती है । आप इस सूर्य सत्य का अवगाहन करेंगे कि अनुवाद में शैली का वही स्थान है, जो स्थान मनुष्य के कलेवर में उसके वदन का होता है । यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि शैली के बिना अनुवाद में कथ्य की कल्पना नहीं की जा सकती है । इन शैलियों के ज्ञान से आप सफल अनुवादक बन सकेंगे । मूल पाठ के अनुसार अनुवाद की शैली ग्रहण की जाती है ।

6.1. उद्देश्य

अनुवाद कला के दो प्रमुख घटक हैं - कथ्य और कथन । कथन का संबंध शैली से है । कथ्य यदि आत्मा है, तो कथन शरीर है । शरीर के बिना आत्मा का भौतिक अस्तित्व नहीं है । इसी प्रकार शैली के बिना कथ्य की कल्पना नहीं की जा सकती है । प्रस्तुत घटक में शैली शब्द का प्रयोग रचना विधान के अर्थ में किया जा रहा है । इस घटक में यह निरूपित किया जा रहा है कि अनुवाद में शैली पक्ष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है । शैली से संबंधित विभिन्न अंशों का विश्लेषण इस घटक में किया जा रहा है ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी ने अभिव्यक्ति के विधान के अर्थ में शैली का विवेचन किया है । विषय के अनुसार शैली का चयन होना चाहिए । साहित्यिक विधाओं के अनुवाद में अलंकृत शैली का प्रयोग किया जाता है, जब कि शास्त्रीय विषयों का अनुवाद अभिधात्मक सरल शैली में किया जाता है । अनुवाद का

प्रमुख लक्ष्य मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में निकटतम रूप में प्रस्तुत करना है । अतः मूल पाठ की शैली ही अनुवाद की शैली होती है । काव्य की शैली अलंकृत होती है, जब कि रसायन शास्त्र के ग्रंथ की शैली अलंकृत न होकर अभिधात्मक होती है ।

पाठक को अनुवाद की शैली के विभिन्न आयामों से परिचित कराना ही प्रस्तुत घटक का उद्देश्य है । इसमें अनुवाद की शैली के सफल संधान में ध्यातव्य तत्व, उन तत्वों के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार और शैली संप्रदायों का पूर्ण विवरण दिया जा रहा है ।

6.2. अनुवाद की शैलियाँ

अनुवाद का क्षेत्र आधुनिक युग में वैश्विक रूप ले रहा है । ज्ञान - विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की उन्नति के साथ अनुवाद का वृक्ष चारों दिशाओं में बढ़ रहा है । अनुवाद की शैलियाँ इन शाखाओं की भिन्नता, स्तर, रचनाविधान आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न स्वरूप ग्रहण कर रही हैं ।

6.2.1. अनुवाद की शैली का अर्थ

अनुवाद के संदर्भ में शैली शब्द के कई अर्थ हैं, यथा -

1) **अनुवाद की प्रकृति के आधार पर**

शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, छायानुवाद, व्याख्यानुवाद आदि ।

इस अर्थ में शैली का प्रयोग भेद या प्रकार के अर्थ में होता है ।

2) **सरलता एवं कठिनाइयों के आधार पर**

सरल शैली, कठिन शैली, मिश्र शैली ।

3) **श्लिष्टता के आधार पर**

संश्लिष्ट शैली अर्थात् समास भूयिष्ठ शैली, विश्लिष्ट शैली याने व्यास शैली । इस अर्थ में शैली का अर्थ अभिव्यक्ति की शैली है ।

4) **रोचकता की दृष्टि से**

अन्य अर्थों में भी शैली शब्द का प्रयोग होता है, यथा – सुंदर शैली, रोचक शैली, सुबोध शैली, आलंकारिक शैली, मधुर शैली, मोहक शैली, लाक्षणिक शैली, व्यंजना शैली, सरस शैली, सामान्य शैली, चित्र शैली आदि ।

5) **गद्य पद्य की दृष्टि से शैली भेद**

गद्य पद्य की दृष्टि से भी शैली के भेद होते हैं, यथा - गद्य शैली, पद्य शैली, चंपू शैली, काव्यात्मक गद्य शैली, पद्य गंधी शैली, अभिधात्मक पद्य शैली आदि ।

6) **भाषा की दृष्टि से शैली भेद**

भाषा के अनुसार भी शैली-भेद होते हैं, यथा-संस्कृत शैली, संस्कृत भूयिष्ठ शैली, हिन्दुस्तानी शैली, लोक शैली आदि ।

6.3. मूल शैली लाने का प्रयत्न

अनुवाद के दो पक्ष हैं - कथ्य एवं कथन । समतुल्य पर्याय, प्रतीक आदि की सहायता से स्रोत भाषा की मूल सामग्री की प्रतिस्थापना लक्ष्य भाषा में की जाती है । यह श्रमसाध्य कार्य है । इससे भी कठिन कार्य मूल शैली का आनयन है । शैली के विभिन्न तत्वों का अनुवाद असिधाराव्रत है । उपमान, प्रतीक आदि के समतुल्य शब्दों के न मिलने पर, शैली के विकृत होने की संभावना है ।

शब्दालंकार से विभूषित शैली का अनुवाद बायें हाथ का खेल नहीं है, यथा - **कलित ललित कर कमल विमल में रम्य रम्य रेखाएँ हैं** - उपर्युक्त पंक्ति का अनुवाद अंग्रेज़ी में कथ्य की दृष्टि से किया जा सकता है । इसमें जो आलंकारिक शैली है, लक्ष्य भाषा में उसका आनयन अत्यंत कठिन है ।

6.3.1. मूल पाठ की शैली के आनयन की आवश्यकता

अनुवाद का अर्थ स्रोत भाषा के शब्दों के बदले में लक्ष्य भाषा के समानार्थक शब्दों का संयोजन मात्र नहीं है । मूल भाषा में अभिव्यक्त विचार मात्र का ही नहीं, बल्कि उसकी शैली का भी लक्ष्य भाषा में प्रतिष्ठापन अत्यंत आवश्यक है । मूल शैली के अनुसार लक्ष्य भाषा में समतुल्य शैली आवश्यक है, अर्थात् मूल भाषा में मधुर शैली का प्रयोग हुआ हो तो लक्ष्य भाषा में भी मधुर शैली का प्रयोग आवश्यक है । **'मंजुल मोहक मुख मयंक है'** पंक्ति में मुख वर्णन में मधुर शैली का प्रयोग हुआ है । अंग्रेज़ी में इसका तर्जुमा करते समय अनुवादक को इसी प्रकार के वृत्यनुप्रास व रूपक अलंकारों से समंचित माधुर्य मंडित शैली का प्रयोग करना होगा, अन्यथा आम्र रस के बदले में अनुवाद में स्वादविहीन रस मिलेगा । Her face is beautiful like moon - कहने से मूल कथ्य का रस अनुवाद में नहीं आ सकता है । लक्ष्य भाषा में निकटतम रूप में मूल शैली का प्रयोग होना चाहिए ।

6.3.2. मूल की शैली

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में - काव्यानुवाद की सबसे जटिल समस्या

मूल की शैली है, जिसके निर्माण में काव्य परंपरा, मिथक, आलंकारिक प्रयोग आदि का हाथ रहा है । डॉ.प्रभाकर माचवे के अनुसार अनुवाद ऐसा हो कि शैली की दृष्टि से मूल के अत्यंत निकट पहुँच सके । उनके अनुसार मूल की मुक्त छन्द शैली को, यहाँ तक कि पूर्ण विराम, अल्प विराम आदि चिह्नों को भी जहाँ तक हो सके, अनुवाद में ज्यों का त्यों रखना चाहिए । डॉ. जी. गोपीनाथनजी के शब्दों में काव्य भाषा की दृष्टि से अनुवादक को अपने युग के काव्य के मुहावरे को पकड़ना भी ज़रूरी है, जिससे कि पाठकों के लिए वह अधिक ग्राह्य हो सके । काव्य भाषा का बुनियादी तत्व शब्द होता है । शब्द की अर्थ ध्वनि और नाद सौंदर्य पर ध्यान देना चाहिए ।

6.4. शैली-भिन्नता की अनिवार्यता : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मिताली जी के शब्दों में भेद और भिन्नता संसार का एक शाश्वत लक्षण है । सभी मनुष्य एक जैसे नहीं होते । इसी प्रकार जगत में कई प्रकार के फूल और फल हैं । शैली में भी कई भेद दृग्गोचर होते हैं, यथा - चंदबरदाई की जोश से लड़वाने और भड़काने वाली शैली रासो काव्य के लिए आवश्यक है । राम के पवित्र चरित्र के गायन में तुलसी की शैली सरल भणिति अपनाती है । दरबारी कवि केशवदास की शैली आलंकारिकता, काल्पनिकता, ध्वन्यात्मकता और पांडित्यपूर्णता से समंचित है । विषय - स्तर, रुचि, संप्रदाय आदि के अनुसार शैली तत्व में भिन्नता का आना अत्यंत स्वाभाविक है । इसके अनुवाद में भी मूल शैली के अनुसार भिन्नता अपनानी पड़ती है । मैथिलीशरण गुप्त की कविता के अनुवाद में सरल, सुन्दर एवं आलंकारिक शैली का प्रयोग औचित्य की दृष्टि से प्रशंसनीय है । हल्दीघाट के कवि की - ''चढ़ चेतक पर तलवार

उठा-रखता था भूतल पानी को । राणा प्रताप सिर काट-काट करता था सफल जवानी को'' - पंक्तियों के अनुवाद की शैली ओज, तेज, प्रभाव एवं प्रवाह से युक्त होनी चाहिए । विषय व कवि के अनुसार शैली बदलती है । अनुवाद में भाषा एकरूप वस्त्र नहीं पहनती या किसी दल के सदस्यों की तरह समाकार नहीं होती । भिन्नता प्रकृति का लक्षण है । भिन्न-भिन्न रूपों और रंगों की तरह भिन्न-भिन्न शैली स्रोत होते हैं । शैली-भेद रचना के अनुसार अनिवार्य होता है । शिकार से संबंधित रचना में गौड़ी वृत्ति होती है । प्रेम संबंधी रचना में माधुर्य गुण होता है । ऐसी रचनाओं के अनुवाद में मूल शैली को अपनाना पड़ता है । वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में सीधी सादी सरल शैली का प्रयोग होना चाहिए । आलंकारिक शैली वैज्ञानिक अनुवाद की हत्या कर देगी । Electricity will be supplied immediately - इसके अनुवाद की शैली जितनी सरल होगी, श्रोता अर्थात् नागरिक उतनी जल्द विषय ग्रहण कर सकता है । इसका अनुवाद सरल होना चाहिए, यथा - बिजली की आपूर्ति जल्द की जायेगी' । इसके बदले में -विद्युदापूर्ति शीघ्रातिशीघ्र की जायेगी '- इस वाक्य में समास के कारण भाव प्रेषण कुंठित हो गया है । विद्युदापूर्ति का अर्थ शीघ्र समझ में नहीं आयेगा । उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रचना के अनुसार शैली में भेद आवश्यक एवं अनिवार्य है ।

6.4.1. रचना के अनुसार शैली भेद

उपर्युक्त विषय को हम और भी स्पष्ट करना चाहते हैं । संसार के समस्त रचनाओं के दो प्रकार हैं -

i) शैली प्रधान रचना
ii) तथ्य प्रधान रचना ।

शैली प्रधान रचना में तथ्य भी होता है । साथ ही साथ शैली को समुचित स्थान दिया जाता है । साहित्य की सभी विधाएँ इसके अंतर्गत आती हैं । इसमें तथ्य का प्राधान्य होता है । उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्म कथा, ललित निबंध आदि में तथ्य अथवा सूचना की अभिव्यक्ति में सुंदर आकर्षक शैली का प्रयोग किया जाता है ।

तथ्य प्रधान रचना में तथ्य को अत्यंत प्रधान स्थान दिया जाता है । शैली सरल होती है । इसमें शैली की उपेक्षा नहीं होती । अलंकार, अनुप्रास, प्रतीक आदि से उसे सुन्दर बनाने की चेष्टा नहीं की जाती है । इसमें तथ्य मुख्य है और शैली गौण । रसायन शास्त्र, गणित, अर्थ शास्त्र आदि सूचना प्रधान या तथ्य प्रधान साहित्य के अंतर्गत आते हैं ।

6.4.2. हिन्दी में शैली भेद

विषय व रुचि के अनुसार वर्गीकृत पूर्वोल्लिखित सभी शैलियाँ हिन्दी में विद्यमान हैं । शब्दों के आधार पर हिन्दी भाषा की शैलियाँ इस प्रकार हैं -

i) खड़ी बोली शैली
ii) संस्कृत शैली
iii) हिन्दुस्तानी शैली ।

शैली - रूप के चयन में अनुवादक को सावधानी बरतनी पड़ती है । हिन्दी से अन्य भाषा में अनुवाद करते समय समतुल्य शब्द प्राप्ति की समस्या का सामना करना पड़ता है । हिन्दी में 'चल' शब्द के विध्यर्थक रूप में चार शब्द आते हैं 'चल, चलो, चलिए, चलें ।' अंग्रेज़ी में इन सब के लिए एक ही

शब्द है 'गो' (Go). हिन्दी के चार शब्दों के अर्थ में अंतर है जिनकी अभिव्यक्ति एक 'गो' शब्द के द्वारा संभव नहीं है ।

6.4.3. पर्याय शैली

भारतीय भाषाओं में स्त्री शब्द के लिए कई पर्याय हैं । इन सभी पर्यायों का अर्थ 'स्त्री' है , फिर भी प्रत्येक शब्द में अर्थ भेद है यथा -

स्त्री, औरत, महिला, नारी, अबला, वनिता, कामिनी, भामिनी, भामा, देवी, रंजनी, त्रिया, गंधवती आदि । ये सभी समतुल्य शब्द हैं, समानार्थक नहीं । इन शब्दों से युक्त वाक्य का अनुवाद करते समय इनके समानार्थक शब्द अंग्रेज़ी में नहीं मिलते हैं । अंग्रेज़ी में उपलब्ध Female, Lady, Woman - शब्दों में से कोई शब्द उपर्युक्त शब्दों का समानार्थक शब्द नहीं है ।

6.4.4. मूल शैली में परिवर्तन

किसी-किसी रचना का अनुवाद करते समय उद्दिष्ट पाठकों के आधार पर भिन्न-भिन्न शैलियाँ अपनानी पड़ती हैं, अर्थात् महात्मा गाँधी की आत्मकथा का अनुवाद करते समय सार्वजनिक उपयोग के लिए मूल शैली का प्रयोग कर सकते हैं, किन्तु छोटे बच्चों के लिए बहुत ही सरल शैली में अनुवाद करना पड़ता है । उसी प्रकार किशोरी-किशोरों के उपयोग के लिए इसी आत्मकथा का अनुवाद नाति कठिन शैली में करते हैं, जब कि युवकों के उपयोगार्थ प्रणीत रचना में अलंकृत एवं स्तरीय शैली का प्रयोग करते हैं । अल्प शिक्षित व्यक्तियों के लिए सरल शैली तथा चित्र शैली का प्रयोग करना पड़ता है । इस प्रकार मूल शैली में परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है ।

इसी प्रकार विभिन्न समुदायों के उपयोग के लिए अनूद्य कृतियों में भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है । नाटक के अनुवाद में शैली परिवर्तन अधिक दिखाई देता है । अभिनेय नाटकों की भाषा सरल एवं मुहावरेदार होनी चाहिए, जबकि केवल पठन के लिए अनूद्य नाटकों की भाषा अधिक स्तरीय हो सकती है ।

6.4.5. मूल पाठ के अनुसार शैली में परिवर्तन

शाहजहाँ एवं मुमताज महल के जीवन से संबंधित अंग्रेज़ी रचना का अनुवाद करते समय अरबी - फारसी मिश्रित हिन्दी शैली का प्रयोग करना चाहिए, यथा - आलम पनाह शाहजहाँ अपनी बेगम की मुस्कान देखकर खुश हुए । इसी प्रकार राजा दुष्यंत और शकुंतला के मिलन का वर्णन करते समय उनकी संस्कृति की भाषा का प्रयोग करना पड़ता है, यथा - सम्राट दुष्यंत अपनी प्रेयसी का मुखचंद्र देखकर हर्ष - सागर में डूब गए । इसमें संस्कृत मिश्रित शैली के साथ - साथ अलंकृत शैली का प्रयोग हुआ है ।

6.4.6. शैली भेद का ज्ञान

डॉ.वी.एस.नरवणे के शब्दों में - ''प्रत्येक भाषा में अनेक प्रकार की शैलियाँ होती हैं । अनुवादक को इन सभी का ज्ञान होना आवश्यक है । यह भी जानना आवश्यक है कि उसकी भाषा में वे किसके सदृश हैं । कई अनुवादक तो यह भी सोचते हैं कि वे बंगला में रचित टैगोर के गद्य को सरलता से रूपान्तरित कर सकते हैं । रवीन्द्रनाथ ने दर्जनों प्रकार की बंगला कृतियाँ लिखी हैं । विशुद्ध काव्य सदृश शैली, गीतात्मक कल्पना प्रधान शैली एवं प्रवचन शैली

जो क्रमशः गूढ़ तर्क पूर्ण शैली, निर्भीक तर्कपूर्ण शैली एवं शास्त्रीय शैली, प्रचुर मात्रा में व्यंग्य से परिपूर्ण उत्तम हास्य के आनंददायक शब्द चित्र छोटे - छोटे वाक्यों से परिपूर्ण गंभीर विचारपूर्ण लेखों की शैली आदि प्रयुक्त हैं । क्या वह वास्तव में इन सभी प्रकारों की बंगला एवं समान स्तर की हिन्दी भली भाँति जानता है, ताकि टैगोर के गद्य के साथ न्याय कर सके ।

6.4.7. वैयक्तिक रुचि

अनुवादक अपने कार्य में कई तत्वों से बँधा हुआ है, यथा - छंद, गुण, शब्द शक्ति, शब्द-चयन, लोकोक्ति चयन, वाक्य रचना विधान, शैली प्रकार आदि । वैयक्तिक रुचि भी उसकी शैली को निर्धारित करती है । इसी वैयक्तिक शैली निर्वहण से अनुवाद कार्य में सृजनात्मकता का रूपायन होता है । अत्यंत सरल शैली में लिखते हुए कतिपय अनुवादक अपने व्यक्तित्व और प्रतिभा की किरणें प्रसारित करते हैं । इसी शैली प्रक्रिया के कारण उसकी रचना में मौलिकता मुस्कुराती है ।

6.4.8. छंद

छंद के उचित चयन से भी शैली की सुभगता में नये पंख लग जाते हैं । प्रत्येक भाषा के अलग-अलग छंद होते हैं । छंद के अनुसार शैली का रूप बदलता है । प्रसादजी चौपाई, श्रृंगार, ताटंक, ललित आदि छंद पसंद करते हैं, जबकि हरिऔध शार्दूलविक्रीडित, मंदाक्रांता, द्रुतविलंबित जैसे छंदों को अपनाते हैं । मैथिली शरण गुप्तजी के छंदों का चयन हरिऔध के चयन से भिन्न है ।

कतिपय अनवादक अनुवाद में मूल काव्य के छंदों का ही प्रयोग करते हैं । बच्चन, शेक्सपियर के नाटकों के अनुवाद में मुक्त छंद का प्रयोग करते हैं । 'रामचरित मानस' के अनुवाद में कन्नड़ कवयित्री श्रीमती एम. एस. सरोजम्मा ने मूल छंद दोहा, चौपाई, हरिगीतिका, सोरठा आदि का प्रयोग किया है । छंदों के चयन विधान से शैली में परिवर्तन आ जाता है ।

6.5. शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद की शैली :

डॉ.मिताली जी का मत

शैली प्रधान रसात्मक विधाओं की भाषा में भिन्न-भिन्न शैलियाँ दृग्गोचर होती हैं । विषय के अनुरूप शैली बदलती है । साहित्यिक विधा शैली का रूप निर्धारित करती है । शैली-प्रधान साहित्य रचना में मूल लेखक की रुचि भी शैली की निर्धारिका बनती है । इस प्रकार के साहित्य के अनुवाद में मूल शैली के स्वरूप की अवहेलना नहीं की जा सकती । स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा दोनों के अनुसार शैली निर्धारित होती है । डॉ. मिताली भट्टाचारजी अत्यंत संतुलित विचार व्यक्त करती हैं कि प्रेमचंद के उपन्यासों के अनुवादों में सरल मुहावरेदार शैली का प्रयोग होना चाहिए । हरिऔध के 'प्रिय प्रवास' का अनुवाद कन्नड या तेलुगु में संश्लिष्ट शैली में किया जा सकता है । नेहरूजी के 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' के लिए हिन्दुस्तानी शैली उचित है । उपन्यास, कहानी आदि का अनुवाद हिन्दी में अरबी-फारसी शब्दों से मिश्रित खड़ी बोली शैली में होना चाहिए । आलोचना सहित्य के अनुवाद की शैली तत्सम शब्द भूयिष्ठ होती है ।

6.6. तथ्य प्रधान साहित्य के अनुवाद की शैली

रसात्मक साहित्य के अनुवाद में भावानुवाद की शैली अपनायी जाती है, जबकि तथ्यात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए शब्दानुवाद शैली उचित है । तथ्य प्रधान साहित्य के अनुवाद में किसी भी हालत में श्लेष, यमक आदि से युक्त शैली का प्रयोग बिलकुल नहीं होना चाहिए । ऐसी कृतियों के अनुवाद में अधिकतः पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है । रसायन शास्त्र, भौतिकी, गणित, सांख्यिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में सरल शैली का प्रयोग होना चाहिए । समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि तथ्य प्रधान हैं, तथापि उनकी शैली में सौंदर्य को भी स्थान दिया जाता है । वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में पारिभाषिक शब्द अधिक होते हैं, जबकि काव्य, उपन्यास आदि में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है ।

6.7. तत्सम तद्भव शैली

मूल पाठ की शब्दावली के अनुसार लक्ष्य भाषा में तत्सम शैली या तद्भव शैली अपनायी जाती है । बंगाली उपन्यास यदि तत्सम शब्दावली से युक्त हो, तो उसके अनुवाद में तत्सम शैली अपनायी जानी चाहिए । इसी प्रकार मूल पाठ में तद्भवों का आधिक्य हो, तो उसका अनुवांद तद्भव शैली में किया जाता है । स्रोत भाषा की मूल सामग्री के विषय के अनुसार भी तत्सम अथवा तद्भव शैली स्वीकृत की जाती है ।

6.8. शैली तत्व

भाषा की पर्याय संपत्ति के अनुसार शब्द चयन होता है । हिन्दी शब्द समूह में पर्यायों की संख्या अधिक है । इस भाषा में देशजों के अतिरिक्त संस्कृत तत्सम शब्द संख्या भी अधिक है । अतः अनुवाद में पर्यायों का प्रयोग अधिक संख्या में किया जाता है । शैली के प्रमुख तत्वों में शब्द चयन, छंद, शब्दशक्ति, अलंकार, औचित्य, गुण, वृत्ति, रीति आदि तत्व आते हैं । इन सभी तत्वों का निर्वहण औचित्य के धरातल पर होना चाहिए ।

6.8.1. ध्वनि सौंदर्य

अनुवाद में मूल कृति में निहित ध्वनि सौंदर्य अथवा नाद सौंदर्य का आनयन बाएँ हाथ का खेल नहीं है । ध्वनि सौंदर्य का निर्वहण न हो, तो अनुवाद अर्धनग्न वपु-सा हो जाता है । निम्नलिखित पंक्तियों में छेकानुप्रास एवं वृत्यनुप्रास के कारण जो नाद सौंदर्य आया है उसे अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रतिस्थापित करना अन्यंत कठिन है -

1) झिनि झिनि झिनि झिनि बीनी चदरीयाँ

2) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अंबर तल में ।

6.8.2. अलंकार शैली तत्व

अनुवाद में अलंकार शैली तत्व निर्वहण साधारण अनुवादक के बस की बात नहीं हैं । यमक और श्लेष अलंकारों का अनुवाद कभी-कभी दोषपूर्ण हो जाता है । अर्थालंकार का अनुवाद हो सकता हैं । अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि

अलंकारों का अनुवाद बहुत ही कठिन है । स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा एक ही परिवार की हों तो अलंकारों का अनुवाद सुलभ हो जाता है, जैसे बंगाली का अनुवाद हिन्दी में सरलता से किया जा सकता है, जब कि अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते समय अलंकारों का अनुवाद कठिन हो जाता है । यमक का एक उदाहरण दिया जा रहा है -

कन्द मूल भोग करै, कन्द मूल भोग करै
तीन बेर खाती तै वे, तीन बेर खाती है ।

इसमें कंद, मूल, भोग व बेर शब्दों का प्रयोग दो दो विभिन्न अर्थों में किया गया है । इसका अनुवाद अलंकार-निर्वहण के साथ अन्य भाषा में करना बहुत ही कठिन है । इसी प्रकार श्लेष का अनुवाद तभी संभव है, जब लक्ष्य भाषा में भी स्रोत भाषा के शब्दों के समतुल्य दो तीन अर्थ वाले शब्द मिलते हैं जैसे –

श्री मोहन राज हरी सराजेन्द्र सुराजाजि ।
नमामि ते नर भाव सत्याग्रह जयराजि ।।

उपर्युक्त कविता का अनुवाद तभी संभव है, जब अंग्रेज़ी में ऐसे श्लेषार्थक पर्याय शब्द मिलें ।

6.8.3. शैली का स्वरूप

संरचना शैली के कई स्वरूप हैं, यथा - आलंकारिक स्वरूप, सरल स्वरूप, वाक्य विधान स्वरूप आदि । इसी प्रकार इसका एक अन्य रूप है - व्याकरणिक संरचना । लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त संरचना स्वरूप अपनाने से भाव की व्यंजना सक्षम रूप से होती है । वाक्य रचना के संबंध में यही बात कही जा सकती है । मूल पाठ में सरल वाक्य हो तो उसका अनुवाद सरल वाक्य में

करना कभी-कभी उचित होता है । साधारणतः वाक्य शैली में मूल शैली को ही स्थान देते हैं । शब्द रूप में भी उसी रूप को अपनाना चाहिए, जिसमें भाव व्यंजकता अधिक होती है । औचित्य आदि के अनुरूप शब्द रूप का चयन होना चाहिए, यथा, यूरोप के देश, यूरोपीय देश, दुःखप्रद, दुःखद, दुःखदायक, दुःखप्रदायक, कई रूपों में अनुवाद में एक उचित रूप को अपनाना पड़ता है, जैसे -

मैं मिलूँगा ।
मैं ही मिलूँगा ।
मैं मिलूँगा ही ।

प्रसंग के अनुसार इनमें से उचित रूप का प्रयोग होना चाहिए ।

6.9. शैली का अनुवाद

डॉ.नगेन्द्र कहते हैं कि शैली का अनुवाद अधिक कठिन है । इसकी अपेक्षा वस्तु का अनुवाद सरल है । शैली का महत्व जिस चीज में जितना अधिक होगा, उसका अनुवाद उतना ही कठिन होगा । जहाँ वस्तु का महत्व अधिक है वहाँ अनुवाद सरल होगा । शैली का रूपान्तर करना कहाँ संभव है - इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए । 'इमेज' या बिम्ब में मूर्त विचार या भाव को हम शब्दबद्ध करते हैं या शब्द मूर्तित करते हैं - वही शैली है । शैली की अपेक्षा विचार अधिक सूक्ष्म होते हैं । शैली में मूर्त विचारों का प्रकटीकरण होता है, अतः वह स्वयं में ही कठिन है । किसी भी अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति असंभव होती है । शैली अपने आप में एक अपूर्ण अभिव्यंजना है । अतः अपूर्ण को दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना और भी अपूर्ण और कठिन है ।

6.9.1. अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना

डॉ.नगेन्द्र के शब्दों में अभिधा समय और स्थान से प्रभावित है । लक्षणा का अर्थ अपेक्षाकृत भिन्न है । वह व्यक्ति गधा है - ऐसा प्रयोग करना लक्षणा है और इसका अर्थ समझने में थोड़ी और कठिनाई होती है । इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति बहुत अधिक मूर्ख है । अभिधा का अर्थ एक ही होगा, लेकिन व्यंग्यार्थ अनेक होंगे । 'घण्टा बज गया' का अर्थ एक ही होगा, लेकिन व्यंग्यार्थ अनेक रूपों में समझ लेते हैं । लक्ष्यार्थ के अनुवाद में कठिनाई होती है । अभिधा तो धारणा है, जैसे पानी । लक्षणा बिंब है, जैसे आब । उपमान, रूपक - इन सबका भाषा के प्रयोग में ध्यान रखकर और भाषा के संस्कारों को सामने रखकर अनुवाद करना चाहिए । हवा का अर्थ है तेज़ी - अर्थात् घोड़ा हवा हो गया ।

6.10. शैली मनुष्य है

जिस प्रकार शैली मूल कृति को शोभा प्रदान करती है, उसी प्रकार अनूदित कृति को भी सर्वांग सुंदर बनाती है । अंग्रेज़ी में ठीक ही कहा गया है -

Style is Man. Man is Style.

अर्थात् शैली ही मनुष्य है, मनुष्य ही शैली है । शैली सौ प्रकाश पुंज लेकर यह बताती है कि अनूदित कृति कैसी है । अनुवाद में उचित समन्वित शैली प्राण प्रतिष्ठा करती है ।

6.11. निष्कर्ष

अनुवादक के सम्मुख यह समस्या पुराने अश्वत्थभूत की तरह खड़ी हो जाती है कि वह अनुवाद में किस शैली का प्रयोग करे । इसका पता नहीं चलता । शैलियाँ कई प्रकार की हैं, यथा - अलंकृत शैली, सपाट शैली, सरल शैली, मूल पाठ की शैली, लक्ष्य भाषा शैली, अनुवाद के पाठकों एवं श्रोताओं के लिए प्रिय शैली, अनुवाद के उद्देश्य से संबंधित शैली आदि । इन में से किस शैली का प्रयोग करे ? ऐसे संदर्भों में वही शैली अच्छी होगी, जो सर्वमान्य तथा सर्वप्रिय हो । सर्वमान्यता व सर्वप्रियता असंभव है । जहाँ तक हो सके, शैली में समन्वय लाने का प्रयत्न होना चाहिए, अर्थात् ऐसी शैली का प्रयोग करे, जो मूल भाषा में प्रयुक्त विधा की शैली, मूल रचना की शैली, लक्ष्य भाषा में विद्यमान उस विधा की शैली, उद्दिष्ट क्षेत्र में प्रचलित शैली, अनुवादक की रुचि से मिलती जुलती शैली - इन सब का समन्वय आवश्यक है ।

6.12. सारांश

शैली के संबंध में यह उक्ति प्रसिद्ध है - "Style is Man and Man is Style" - अर्थात् शैली मनुष्य है और मनुष्य ही शैली है । इसी प्रकार साहित्यिक रचना में रचना की शैली ही रचयिता है । अनुवाद में भी शैली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है । शैली देखकर हम बता सकते हैं कि अनुवादक अपने कार्य में कहाँ तक सफल हुआ है । अनुवाद के संदर्भ में शैली शब्द के कई अर्थ हैं, यथा - प्रकृति के आधार पर शब्दानुवाद, भावानुवाद आदि ; सरलता और कठिनता के आधार पर सरल शैली, कठिन शैली आदि । अनुवाद

की अन्य शैलियाँ भी हैं, यथा - सुंदर शैली, पद्य शैली, गद्य शैली आदि । विषय के अनुसार अनुवाद की शैली बदलती है, जैसे वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक विषयों के अनुवाद में भावानुवाद की शैली उपयुक्त नहीं है । इन विषयों के अनुवाद में उचित शब्दानुवाद शैली अपनानी पड़ती है । शास्त्रीय विषयों के अनुवाद में सरल शैली अपेक्षित है, जबकि काव्यानुवाद में अलंकृत शैली आवश्यक है । कथ्य के अनुसार कथन शैली अपनानी चाहिएं ।

मूलपाठ को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करने हेतु शैली चयन में सावधानी बरतनी पड़ती है, अन्यथा मूल सामग्री की प्रतिस्थापना सुचारु ढंग से नहीं होगी । मूल शैली को अपनाना उचित होगा । अनुवाद की सफलता मूल शैली के संतुलित आनयन पर निर्भर है । मूल शैली की उपेक्षा श्रेयोदायक नहीं है ।

विभिन्न रचनाओं के अनुवाद में भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग अनिवार्य है । वैज्ञानिक विषय के अनुवाद में शैली नितांत सरल होनी चाहिए । साथ ही साथ पारिभाषिक शैली में पर्यायों का प्रयोग होना चाहिए, यथा - Tests conducted in the laboratory reveal the following results - प्रयोगशाला में संपन्न परीक्षण निम्नसूचित परिणाम सूचित करते हैं । इसके बदले में किसी भी प्रकार की अन्य कठिन शैली नहीं होनी चाहिए ।

काव्यनुवाद में शैली सुंदर, सम्मोहक और अलंकार-युक्त होनी चाहिए । Her face is as beautiful as Moon - इस रसात्मक उक्ति का अनुवाद विभिन्न सुंदर शैलियों में किया जाता है यथा - उसका मुख चंद्रमा जैसा सुंदर है । इस उक्ति का अनुवाद अन्य शैलियों में हो सकता है यथा - उसका मुखमंडल मंजुल

है, सुंदर मयंक जैसा । यह आलंकारिक शैली शास्त्रीय विषयों के अनुवाद में एक दम वर्ज्य है ।

मूल लेखक के अनुसार भी शैली बदलती है । कबीर की बानी का अनुवाद समास शैली में नहीं होना चाहिए, जबकि तुलसी की कविता का अनुवाद संश्लिष्ट शैली में हो सकता है । वीर रस की कविता के अनुवाद में ओज गुण प्रधान शैली अपेक्षित है, जबकि छायावादी कविता का अनुवाद मधुर शैली में होना चाहिए । उद्दिष्ट पाठक समाज के अनुसार अनुवाद की शैली में परिवर्तन हो सकता हे ।

इस निबंध में शैली में वैयक्तिक रुचि, तत्सम, तद्भव शैली, शैली में ध्वनि सौंदर्य का प्रभाव, शैली समन्वय आदि का आकलन किया गया है ।

6.13. अभ्यास प्रश्न

I] अनुवाद की विभिन्न शैलियों का विवेचन करते हुए शैली चयन में अपेक्षित औचित्य दृष्टि का निरूपण कीजिए ।

II] काव्यानुवाद में अपेक्षित शैली के तत्वों का निरूपण कीजिए ।

6.14. संभाव्य उत्तर के अंश अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

I] अनुवाद की विभिन्न शैलियाँ : शैली चयन में औचित्य

देश, काल, रचयिता एवं विषय के अनुसार अनुवाद की शैली पृथक्-पृथक् रूप धारण करती है । मूल पाठ सरल शैली में हो, तो उसका अनुवाद भी सरल होना चाहिए । अत्यंत शिक्षित समाज के लिए अपेक्षित अनुवाद

की शैली संश्लिष्ट हो सकती है । इसी प्रकार विषय के अनुसार अनुवाद की शैली में परिवर्तन आवश्यक है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद में शब्दानुवाद शैली अपेक्षित है । किसी भी हालत में इस प्रकार के अनुवाद में अलंकृत शली, मुहावरेदार शैली, प्रतीक शैली आदि का प्रयोग नहीं होना चाहिए ।

इस प्रश्न के उत्तर में निम्नसूचित अंश अपेक्षित हैं –

अ] अनुवाद की विभिन्न शैलियाँ

i) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर

अं) शब्दानुवाद शैली
आ) भावानुवाद शैली
इ) सारानुवाद शैली
ई) छायानुवाद शैली
उ) व्याख्यानुवाद शैली आदि

आ] सरलता एवं कठिनता के आधार पर

क) सरल शैली
ख) कठिन शैली
ग) मिश्र शैली

इ] श्लिष्टता के आधार पर

घ) संश्लिष्ट शैली अर्थात् समास शैली
ङ) विश्लिष्ट शैली अर्थात् व्यास शैली

ई] गद्य - पद्य की दृष्टि से शैली भेद

च) गद्य शैली
छ) पद्य शैली
ज) काव्यात्मक गद्य शैली

झ) चंपू शैली

ञ) पद्यगंधी गद्य, शैली

उ] रोचकता की दृष्टि से

ट) सुंदर शैली

ठ) रोचक शैली

ड) सुबोध शैली

ढ) व्यंजना शैली

ण) मधुर शैली

त) लाक्षणिक शैली

थ) सरस शैली

द) उदात्त शैली

ध) आलंकारिक शैली

न) चित्र शैली

ऊ] भाषा की दृष्टि से शैली भेद

प) संस्कृत शैली

फ) लोक शैली

ब) बोली शैली

भ) हिन्दुस्तानी शैली

उपर्युक्त शैलियों का सोदाहरण आकलन अपेक्षित है ।

शैली चयन में अपेक्षित औचित्य दृष्टि का विवेचन उत्तर को समग्र बनाता है, -

i) रिपोर्ताज के अनुवाद में संक्षेप शैली

ii) पत्रकारिता के संदर्भ में सरल शैली

iii) तार की भाषा के संदर्भ में तार शैली

iv) काव्यानुवाद में सरस शैली

v) उपन्यास के अनुवाद में सरल शैली

vi) नाटक के अनुवाद में नाटकीयता से समंचित शैली

vii) शास्त्रीय विषयों के अनुवाद में तथ्य प्रधान शैली

viii) शैली प्रधान विषयों के अनुवाद में सरस सुन्दर शैली

उपर्युक्त शैलियों की उपादेयता का निरूपण सोदाहरण होना चाहिए ।

II] काव्यानुवाद में अपेक्षित शैली के तत्व

काव्यानुवाद में शैली के निम्नसूचित तत्व अपेक्षित हैं -

1) काव्यानुवाद की भाषा सुंदर और सरल होनी चाहिए ।
2) मूल कविता में प्रयुक्त प्रतीक, अलंकार, उपमान आदि की प्रतिस्थापना लक्ष्य भाषा में अपेक्षित है ।
3) संभव एवं उचित हो तो मूल कविता में प्रयुक्त छंद का प्रयोग अनुवाद में भी होना चाहिए ।
4) मूल छंद का प्रयोग न करें तो लक्ष्य भाषा में प्रचलित उपयुक्त छंद का प्रयोग होना चाहिए ।
5) भाव की स्पष्ट अभिव्यंजना के लिए मुक्त छंद का प्रयोग किया जां सकता है ।
6) शब्द प्रयोग में रस के अनुसार औचित्य निर्वहण आवश्यक है, जैसे 'श्रृंगार' रस वर्णन में महिला शब्द के लिए कामिनी शब्द का प्रयोग एवं वीर रस में वीरांगना शब्द का प्रयोग ।
7) शैली मुहावरेदार होनी चाहिए ।
8) मूल कविता में प्रयुक्त उपमान का समतुल्य समानार्थक प्रतिशब्द लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त होना चाहिए ।
9) मूल पाठ की सांस्कृतिक गंध की रक्षा होनी चाहिंए ।

इन सबका विवेचन सोदाहरण अपेक्षित है ।

6.15. शब्दावली

i)	स्तर	-	Standard
ii)	शब्दानुवाद	-	Verbal Translation
iii)	मिश्रशैली	-	Mixed Style
iv)	रोचकता	-	Fascination
v)	प्रतीकात्मक शैली	-	Symbolic Style

vi)	मयंक	-	Moon
vii)	काव्य परंपरा	-	Poetic Tradition
viii)	दरबारी कवि	-	Court Poet
ix)	आपूर्ति	-	Supply
x)	जीवनी	-	Biography
xi)	आत्मकथा	-	Autob iography
xii)	अभिनय	-	Acting
xiii)	वैयक्तिक रुचि	-	Individual Taste
xiv)	मुहावरेदार शैली-		Idiomatic Style

6.16. संदर्भ ग्रंथ और निबंध

निबंध

i) अनुवाद और शैली - श्री आनंद प्रकाश खेमाणी
ii) अनुवाद में शैली का स्थान - डॉ. मिताली भट्टाचार्यजी
iii) अनुवाद : एक कला - डॉ. तीर्थ वसंत
iv) अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ. वी. एस. नरवणे
v) साहित्य का अनुवाद - डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी
vi) साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - डॉ. नगेन्द्र

ग्रंथ

1) अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2) अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन

NOTES

NOTES

NOTES

इकाई सात

आदर्श अनुवादक की योग्यताएँ एवं गुण

7.0. प्रस्तावना

7.1. उद्देश्य

7.2. अच्छा अनुवादक बनने के लिए आवश्यक योग्यताएँ

7.2.1. निरंतर अभ्यास

7.2.2. लक्ष्य-भाषा एवं स्रोता-भाषा का पूर्ण ज्ञान

7.2.3. भाषा प्रयोग में प्रयुक्ति स्तर

7.2.4. व्याकरण का ज्ञान

7.2.5. अनुवाद कार्य में निष्ठा

7.2.6. अनुवाद कार्य में आसक्ति

7.2.7. उचित भाषा शैली

7.2.8. विषय का ज्ञान

7.2.9. संस्कृति का ज्ञान

7.2.10. अनूद्य विषय का सम्यक् ज्ञान

7.2.11. परिवेश का ज्ञान

7.2.12. पुनरूक्ति निवारण

7.2.13. मूल पाठ की प्रतिस्थापना

7.2.14. अनुवादक की दोहरी प्रीति

7.2.15. निकटतम शब्दों की पहचान

7.2.16. समानार्थक शब्दों का चयन : डॉ.मिताली जी का मत

7.2.17. उचित पदबंध का चयन

7.2.18. उचित लोकोक्ति का प्रयोग

7.2.19. उचित मुहावरों का चयन

7.2.20. प्राचीन एवं नीवन शैलियों का प्रयोग

7.2.21. मूल कृति का पुनरावलोकरन

7.2.22. सफल अनुवाद में यथार्थता

7.2.23. अनुवाद में कलात्मकता

7.2.24. प्रांजलता एवं स्पष्टता

7.2.25. समतुल्यता

7.2.26. पूर्वाग्रह - मुक्ति

7.2.27. रोचकता एवं प्रभविष्णुता

7.2.28. पुनःपठन एवं संशोधन : डॉ.मिताली जी का मत

7.2.29. शब्द कोश का प्रयोग

7.2.30. पारिभाषिक शब्दावली

7.2.31. मूल कृति से अनुवाद

7.2.32. बहु प्रचलित शब्द प्रयोग

7.2.33. शब्दानुवाद एवं भावानुवाद का संयोग

7.2.34. व्याकरण नियमों का पूर्ण ज्ञान

7.2.35. छोड़ने एवं जोड़ने की प्रवृत्ति

7.2.36. स्रोत भाषा के मूल पाठ के दोष की समस्या

7.2.37. अनुकरण की समस्या

7.2.38. मानसिकता

7.2.39. भ्रामक धारणा का निवारण

7.2.40. मूल लेखक की मानसिकता

7.2.41. मूल लेखक को मन में प्रतिस्थापित करने का सामर्थ्य

7.3. असफल साहित्यकार अनुवादक हो जाता है

7.4. श्रेष्ठ अनुवादक

7.5. सफल अनुवादक

7.5.1. अच्छे अनुवादक की प्रमुख योग्यता

7.6. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर अधिकार

7.7. निष्कर्ष

7.8. सारांश

7.9. संभाव्य प्रश्न

7.10. अभ्यास के प्रश्नों से संबंधित उत्तर

7.11. शब्दावली

7.12. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

7.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत घटक में आपको आदर्श अनुवादक में अपेक्षित विभिन्न योग्यताओं एवं गुणों का परिचय दिया जा रहा है । आज के वैज्ञानिक युग में आप को सफल अनुवादक बन कर ज्ञान-विज्ञान की किरणें विभिन्न भाषाओं में संव्याप्त करनी चाहिए । इस तथ्य पर प्रकाश डाला जा रहा है कि आदर्श अनुवादक बनने के लिए आप को कई योग्यताएँ एवं गुण हासिल करने पड़ते हैं , यथा स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का ज्ञान, व्याकरण, विषय का संपूर्ण अवगाहन उचित शब्द चयन, पुनः क्रोडीकरण आदि । इन विषयों का ज्ञान आपके मन व मस्तिष्क को अत्यंत उज्ज्वल बना सकता है ।

7.1. उद्देश्य

अनुवादक आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि मूल लेखक । रसात्मक साहित्य के अनुवाद के संबंध में भी यही मत खरा उतरता है । अपने इस महत्वपूर्ण स्थान-मान के कारण अनुवादक का उत्तरदायित्व बढ़ गया है । सफलता की सीमा तक पहुँचने के लिए उसमें विशेष गुण एवं योग्यताएँ आवश्यक हैं । इन्हीं गुणों एवं योग्यताओं के संबंध में इस घटक में प्रकाश डाला गया है । डॉ.मितालीजी के अनुसार अनुवादक वह विद्युद् यंत्र है जो एक भाषा में निहित ज्ञान की किरणों को अन्य भाषा में पहुँचा सकता है ।

अनुवादक में प्रमुखतः विषय का तथा स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का ज्ञान अपेक्षित है । गृहीत विषय के प्रति प्रेम, श्रद्धा, ज्ञान-पिपासा, सतत परिश्रम,

अध्ययन की ललक आदि गुणों का अनुवादक में रहना आवश्यक है । बहु भाषा ज्ञान, विषय की पूरी जानकारी, व्याकरण का समग्र ज्ञान, अनुवाद तंत्र का परिज्ञान, सरल एवं सुबोध भाषा प्रयोग का निरंतर निर्वहण, अनुवाद का सतत अभ्यास, स्तरीय भाषा ज्ञान, संस्कृति परिवेश, प्रसंग आदि का ज्ञान, मूल पाठ की पुनः प्रतिष्ठापना, मौलिक पहुँच, निकटतम शब्दों की पहचान, अनुवाद प्रक्रिया में निष्ठा आदि गुण एवं योग्यताएँ सफल अनुवादक में अपेक्षित हैं । इस इकाई में संप्रदत्त विवेचन का उद्देश्य यह है कि इसे पढ़कर पाठक अनुवाद कला का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें तथा सफल अनुवादक बनकर अनुवाद के माध्यम से ज्ञान विज्ञान का आलोक समूचे संसार को प्रदान करें । आदर्श अनुवाद अक्षर जगत् का आभूषण है । इसी प्रकार अच्छा अनुवादक के अक्षर संसार के लिए अमूल्य उपलब्धि है । अनुवाद ज्ञान-विज्ञान के प्रसार का महान साधन है । अच्छा अनुवादक बनने के लिए कई योगयताएँ, लक्षण एवं गुण आवश्यक हैं ।

7.2. अच्छा अनुवादक बनने के लिए आवश्यक योगयताएँ

डॉ.मिताली जी के अनुसार अच्छा अनुवादक बनने के लिए निम्नसूचित गुण एवं योग्यताएँ अपेक्षित हैं -

i) अनुवाद कार्य में निष्ठा
ii) अनुवाद में आसक्ति
iii) निरंतर अभ्यास
iv) स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान
v) भाषा प्रयोग में प्रयुक्ति स्तर
vi) व्याकरण का ज्ञान
vii) उचित भाषा शैली का प्रयोग
viii) विषय का ज्ञान
ix) संस्कृति का ज्ञान

x) परिवेश का ज्ञान
xi) पुनरुक्ति वर्जन
xii) प्रसंग ज्ञान
xiii) मूल पाठ की प्रतिस्थापना
xiv) उचित शब्द चयन
xv) वाक्य रचना विधान
xvi) मौलिकता
xvii) लिप्यंतरण प्रक्रिया की पहचान
xviii) लिप्यंतरण में लक्ष्य भाषा ध्वनि प्रयोग
xix) प्राचीन एवं नवीन शैलियों का प्रयोग
xx) मूल कृति का पठन
xxi) निकटतम शब्दों की पहचान
xxii) समानार्थक शब्द चयन
xxiii) उचित पदबंध का प्रयोग
xxiv) पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान
xxv) मूलकृति से अनुवाद करने की प्रवृत्ति
xxvi) बहु प्रचलित शब्द प्रयोग
xxvii) शब्दानुवाद एवं भावानुवाद दोनों का प्रयोग
xxviii) स्पष्टता नियोजन
xxix) प्रतीकात्मक शब्द ज्ञान
xxx) समतुल्यता निर्वहण
xxxi) पूर्वाग्रह एवं हठवादिता से मुक्ति
xxxii) रोचकता एवं प्रभविष्णुता
xxxiii) पुनः पठन एवं संशोधन
xxxiv) शब्द कोश का सतत प्रयोग
xxxv) इकाइयों की पहचान
xxxvi) पुनः सृजन
xxxvii) भाषा विज्ञान का सम्यक् ज्ञान
xxxviii) अर्थ सम्प्रेषण निष्ठा
xxxix) व्याकरणात्मक रचना

xxxx) प्रभाव साम्य
xxxxi) पुनः क्रोडीकरण
xxxxii) व्याकरण का पूर्ण ज्ञान

7.2.1. निरंतर अभ्यास

अभ्यास मनुष्य को समर्थ एवं पूर्ण बनाता है । लिखते-लिखते लिखावट सुधर जाती है । गाते-गाते स्वर सुधरता है । अनुवाद का निरन्तर अभ्यास करने से अनुवादक कथ्य एवं कथन की पुनःप्रतिस्थापना में निष्णात बन जाता है । मूल लेखक के हृदय के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए सतत अभ्यास की आवश्यकता होती है ।

7.2.2. लक्ष्य-भाषा एवं स्रोत-भाषा का पूर्ण ज्ञान

सफल अनुवादक के लिए लक्ष्य भाषा एवं स्रोत भाषा का पूर्ण ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । आदर्श अनुवाद वही है, जिसमें स्रोत भाषा में रचित विषय का पुनः कथन लक्ष्य भाषा में इस प्रकार हो कि लक्ष्य भाषा का पाठक अनुवाद पढ़कर मूल भाषा के पाठक के समान आनंद प्राप्त करे । दोनों भाषाओं का जब तक पूर्ण ज्ञान नहीं होता, तब तक अनुवादक अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता । ऐसे अनुवादक का कार्य लक्ष्य भाषा के लिए अभिशाप बन जाता है । स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द, प्रतीक आदि के लिए लक्ष्य भाषा में उपलब्ध समानार्थक शब्द प्रतीक, पदबंध, मुहावरे और लोकोक्तियों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है ।

7.2.3. भाषा प्रयोग में प्रयुक्ति स्तर

अनुवादक के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वह विषय के अनुरूप भाषा की प्रयुक्ति का स्तर अपना ले । विषय के अनुरूप भाषा प्रयुक्ति से अनुवाद में प्रांजलता समुद्भूत होती है । साहित्यिक अनुवाद, शासकीय/शास्त्रीय अनुवाद आदि में प्रयुक्ति स्तर भिन्न-भिन्न होते हैं ।

7.2.4. व्याकरण का ज्ञान

अनुवादक को स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा के व्याकरण के नियमों एवं तत्वों का पूर्ण ज्ञान हो तो अनुवाद अत्यन्त स्तरीय बनता है । प्रत्येक भाषा की शब्द रचना, वाक्य गठन, संबंध तत्व निर्वहण, लिंग, वचन, कारक, उपसर्ग, प्रत्यय-प्रयोग-विधान आदि के विशिष्ट सूत्र होते हैं । इन सब की जानकारी प्राप्त कर अनुवादक को अपने कार्य में नई चेतना उत्पन्न करनी चाहिए । क्रिया रूप, लिंग, समास आदि का ज्ञान अनुवादक के लिए अत्यन्त आवश्यक है । I write with my pen - वाक्य का अनुवाद करते समय लिंग प्रयोग पर ध्यान देना पड़ता है । Pen के लिए पर्याय लेखनी है जिसका लिंग स्त्रीलिंग है । लिंग ज्ञान न हो तो ''मैं अपनी लेखनी से लिखता हूँ'' के बदले ''मैं अपने लेखनी से लिखता हूँ'' लिख देगा ।

7.2.5. अनुवाद कार्य में निष्ठा

निष्ठा रूपी विद्युत से मूल चेतना का प्रकाश निःसृत होता है । निष्ठा से अनुवाद कार्य में नई चेतना उत्पन्न होती है । स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की इकाइयों का ज्ञान निष्ठा से ही प्राप्त किया जाता है ।

7:2.6. अनुवाद कार्य में आसक्ति

आसक्ति के बिना कोई कार्य सफल नहीं हो सकता है । सफल अनुवाद के लिए सर्वप्रथम गुण रुचि है । स्रोत भाषा में निहित विषय की प्रतिस्थापना लक्ष्य भाषा में करने हेतु आसक्ति आवश्यक है । ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ एवं प्रोक्ति की जानकारी आसक्ति से ही संभव है ।

7.2.7. उचित भाषा शैली

उचित भाषा शैली का तात्पर्य है शास्त्रीय विषयक एवं साहित्यिक विधाओं के अनुरूप शैली का प्रयोग एवं मूल पाठ की शैली की रक्षा । सफल अनुवादक में यह निश्चय करने का गुण होना चाहिए कि किस विधा एवं विषय के लिए किस प्राकर की शैली का प्रयोग हो । समकालीन कविता के अनुवाद की शैली में अनुवादक अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग कर सकता है । कहानी एवं उपन्यास के अनुवाद की शैली में कठिन शैली का प्रयोग नहीं होना चाहिए । वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली समंचित सरल शैली का प्रयोग करना चाहिए ।

7.2.8. विषय का ज्ञान

सफल अनुवादक वही बन सकता है, जिसे स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का संपूर्ण ज्ञान हो । केवल भाषा ज्ञान से अनुवाद सफल नहीं हो सकता । अनुवाद को सफलता के शिखर तक पहुँचाने के लिए अनुवादक में विषय का पूर्ण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है । विषय का ज्ञान नहीं हो तो अनुवादक मूल पाठ के साथ न्याय नहीं कर सकता और विभिन्न शास्त्रों की पारिभाषिक

शब्दावलियों का अर्थ पूर्णतः हस्तंगत नहीं कर सकता । कार्यालय विषय का ज्ञान नहीं हो तो विश्वविद्यालय के कुलसचिव शब्द का अनुवाद नहीं कर सकता । 'कुल सचिव' न लिखकर 'पंजीयक' लिखेगा । इसी प्रकार चिकित्सा शास्त्र patient का अनुवाद प्रशान्त के रूप में करेगा । Patient said to the head का अनुवाद, वाक्य में विद्यमान Head का अनुवाद सिर के रूप में करेगा । इस प्रकार का अनुवाद हास्यस्पद हो जाता है ।

7.2.9. संस्कृति का ज्ञान

संस्कृति संबंधी विषयों का अनुवाद करते समय प्रतीक और मिथक का सहारा लेना पड़ता है । रवीन्द्रनाथ ठाकर के गीतांजली काव्य का अनुवाद करते समय भारतीय संस्कृति और दर्शन से संबंधित शब्दावली का प्रयोग औचित्य की दृष्टि से समंजस है । इसी प्रकार भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों का अनुवाद करते समय एक संकल्पना या नाम के लिए उपलब्ध शब्दों में से सांस्कृतिक बिम्ब से समंचित शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है ।

'मंगल-सूत्र' शब्द का अर्थ वह पवित्र सूत्र है, जिसे विवाह के समय वधू को वर पहनाता है । हिन्दू संस्कृति का यह तत्व नहीं जानने वाला अंग्रेजी में इसका अनुवाद Thread of Welfare के रूप में करेगा । इसी प्रकार लिंग का अर्थ कोकशास्त्र की शब्दावली में करेगा । धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को नहीं जाननेवाला अनुवाद में महाराजा राम के बदले बादशाह राम, रानी कौसल्या के लिए बेगम कौसल्या शब्दों का प्रयोग करेगा । दक्षिण में दाल के रस के लिए सांबार प्रसिद्ध है । औचित्य दृष्टि न होने पर सांबार के लिए अनुवाद में

सालना या शेरवा शब्द का प्रयोग करेगा । इस प्रकार संस्कृति ज्ञान निर्वहण न होने पर अनुवाद अस्पष्ट बनेगा ।

7.2.10. अनूद्य विषय का सम्यक् ज्ञान

तकनीकी, वैज्ञानिक तथा अन्य विषय प्रधान अनुवादों में अनूद्य विषय का सम्यक् ज्ञान बहुत ही अनिवार्य है । वैज्ञानिक अनुवाद में अनुवादक का वैज्ञानिक होना आवश्यक है । डॉ.जी.गोपीनाथन कहते हैं कि साहित्यिक अनुवाद में भी अनुवादक का मूल पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किए गए सांस्कृतिक तथा आस्था संबंधी प्रत्ययों से परिचित होना आवश्यक है । साथ ही कतिपय कृतियों के शिल्पविधान संरचना तथा तकनीक के विषय में भी अनुवादक को आलोचना शास्त्र का अध्ययन करना आवश्यक है ।

डॉ.जी.गोपीनाथनजी मार्के की बात बताते हैं कि मूल लेखक के साथ अनुवादक की सहानुभूति अथवा तादात्म्य अनुवाद की सफलता के लिए आवश्यक है । यद्यपि अनुवादक के लिए तटस्थता आवश्यक है, तथापि उसमें मूल लेखक के प्रति श्रद्धा का भाव होना भी वांछनीय है । जैनेन्द्र कुमार के शब्दों में अनुवादक को मूल लेखक के व्यक्तित्व में पहले अपने को खो देना चाहिए । फिर उसी में आत्मभाव उत्पन्न कर अपनी भाषा के माध्यम से उस भाषा भाषी के प्रति अपने को समर्पित करना पड़ता है । अनुवादक को सबसे पहले मौलिक रचना का प्रभाव अपने ऊपर उत्पन्न कर लेना चाहिए । इससे उसमें वह सशक्तता और नवीनता आयेगी, जो मूल रचना पढ़ने पर अनुभव हुई होगी । यदि वह ऐसा करता है तो अनूदित रचना मूल के अधिक निकट होगी ।

बाइंबिल के अधिकांश अनुवादों की सफलता का रहस्य श्री पॉल.पी.वर्गीज़ के अनुसार अनुवादकों और मूल लेखकों में परस्पर तादात्म्य है । वैज्ञानिक तथा अन्य सूचनापरक अनुवादों में केवल विषय का ज्ञान एक सीमा तक पर्याप्त होगा । किन्तु कविता तथा अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद में मूल लेखक के विचारों के साथ सहानुभूति, अन्तर्दर्शन और संभावना का होना बहुत ही आवश्यक हो जाता है ।

अनुवादक एक सहृदय-पाठक तथा स्रष्टा दोनों हो जाता है । वह मूल लेखक की आत्मा के साथ एकाकार होने की योगप्रक्रिया अपनाता है ।

7.2.11. परिवेश का ज्ञान

आदर्श अनुवादक में परिवेश का पूर्ण ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । स्रोत भाषा के मूल पाठ में जो परिवेश वर्णित है, उसके अनुसार लक्ष्य भाषा में उचित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, वरना मूल पाठ का प्रभाव घट जायेगा । मूल पाठ में रास लीला का वर्णन हो तो लक्ष्य भाषा में मूल भाषा के **गोपाल कृष्ण** शब्द के स्थान पर **गिरिधर** शब्द का प्रयोग करें तो रास लीला का आनंद कम हो जायेगा । लक्ष्य भाषा में परिवेश के अनुरूप कुंज विहारी शब्द का प्रयोग हो सकता है । इसी प्रकार **अकबर के दरबार** के प्रसंग का अनुवाद करते समय **सम्राट, मंत्री** आदि शब्दों के बदले **आलम पनाह, वज़ीर** आदि शब्दों का प्रयोग होना चाहिए । अनुवाद करते समय प्रसंग के अनुरूप शब्दों का निवेशन लक्ष्य भाषा में करना चाहिए । पूर्वापर प्रसंगों के ज्ञान के बिना स्रोत भाषा के मूल पाठ का अनुवाद लक्ष्य भाषा के लिए अभिशाप बन जायेगा । पूर्वापर प्रसंगों

का ज्ञान सफल अनुवाद के लिए अत्यंत आवश्यक है । महात्मा गाँधीजी की जन सेवा के प्रसंग का अनुवाद करते समय प्रसंगों के औचित्य पर ध्यान देकर "He is serving the people" का अनुवाद ''वह लोगों की सेवा कर रहा है' ठीक नहीं है । महात्मा गाँधीजी के लिए प्रयुक्त "He" का अनुवाद हिन्दी में बहुवचन में करना चाहिए यथा, ''वे लोगों की सेवा कर रहे हैं ।'' इसी प्रकार 'Emperor Shahjahan honoured the Persian Poet' का अनुवाद 'सम्राट शाहजहान ने फारसी कवि का सम्मान किया'' की जगह ''जहाँपनाह शाहजहाँ ने फ़ारसी शायर का सम्मान किया'', प्रसंग के अनुसार उचित होगा ।

7.2.12. पुनरुक्ति निवारण

पुनरुक्ति निवारण का गुण सफल अनुवादक के लिए अत्यंत आवश्यक है । पुनरुक्ति एक दोष है । यह दोष अनुवाद को असुन्दर बनाता है । यदि स्रोत भाषा में ही पुनरुक्ति दोष है तो उसको हटा देना ही औचित्यपूर्ण है । मूल पाठ की पुनरुक्ति के वर्जन में यह देखना चाहिए कि मुख्यांश का वर्जन तो नहीं हो रहा है । इसी प्रकार लक्ष्य भाषा में मूल पाठ को निविष्ट करते समय इस विषय का ध्यान रखना चाहिए कि एक ही संज्ञा शब्द की पुनरुक्ति बार बार न हो, यथा - पाँच बार राम शब्द का प्रयोग हुआ हो ता लक्ष्य भाषा में पुनरुक्ति वर्जन हेतु श्री राम, राघव, दशरथनंदन, सीतापति, कौसल्या कुंमार, रघुवीर आदि श ों के प्रयोग से सोने में सुगंध उपजती है ।

7.2.13. मूल पाठ की प्रतिस्थापना

अनुवाद का मूल उद्देश्य ही मूल पाठ की प्रतिस्थापना है । मूल को अमूल बना दे तो अनुवाद का लक्ष्य सफल नहीं होगा । मूल विषय को हृदयंगम बनाकर मूल लेखक की भाव तीव्रता का अनुभव करता हुआ जब तक अनुवादक अपने आप को मूल लेखक की आवेश दशा में नहीं डालता, तब तक अनुवाद में मौलिकता की रक्षा नहीं हो सकती । आदर्श अनुवाद में मूल पाठ की प्रतिस्थापना होनी चाहिए । चन्द्रमति पुत्र के शव पर सिर रखकर रो रही है । इस प्रसंग के वर्णन का अनुवाद करते समय अनुवादक को चाहिए कि वह मूल लेखक की भावमुद्रा और चंद्रमति के शोक के साथ पूर्णतः तादात्म्य स्थापित करे । तभी मूल पाठ की भाव तीव्रता की प्रतिस्थापना अनुवाद में हो सकती है ।

7.2.14. अनुवादक की दोहरी प्रीति

श्री जैनेन्द्र कुमार के अनुसार अनुवाद में मूल कृति के साथ अभिन्नता होनी चाहिए । वह इस रस में भीग जाये, डूब जाये । अनुवाद उसके लिए प्रीति का काम हो, निरे परिश्रम का न हो । वह अपनी इच्छा से कृति का चुनाव करे और अपने में अनुवाद की स्वतः प्रेरणा का अनुभव करे । मूल के प्रेम के साथ ही अनुवाद में उस भाषाभाषी के प्रति भी प्रीति की आकुलता होनी चाहिए, जिसमें अनुवाद किया जाता है । अनुवाद की पूरी सफलता के लिए यह दोहरी प्रीति आवश्यक है । अतः जैनेन्द्रजी अनुवाद के कार्य को बहुत अधिक महत्व देते हैं । मौलिक लेखन में इकहरी प्रीति से भी काम चल सकता है । अनुवाद स्वगति से

तो चल नहीं सकता । उसे उक तरह का योग साधन ही कहना चाहिए ।

7.2.15. निकटतम शब्दों की पहचान

एक भाषा में अभिव्यक्त भाव को अन्य भाषा में पुनः व्यक्त करना सरल कार्य नहीं है । कथ्यतः एवं कथनतः अनुवाद में समानता होनी चाहिए । समतुल्यता से अनुवाद में प्राण-प्रतिष्ठा होती है । शैली की दृष्टि से भी अनुवाद शालीन होना चाहिए । डॉ.मिताली जी कहती हैं कि स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में कई पर्याय शब्द होते हैं, इन पर्यायों से निकटतम अर्थ से समंचित, सुंदर एवं सार्थक शब्द का प्रयोग करने से अनुवाद में रंग आ जाता है । मूल शब्द की आत्मा को ध्वनित करने वाला पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त करने से अनुवाद की शोभा में नई आभा आ जाँती है । स्रोत भाषा में 'Rama has taken a lotus' वाक्य का अनुवाद करते समय Lotus शब्द के समतुल्य वाक्य का प्रयोग लक्ष्य भाषा में होना चाहिए । लक्ष्य भाषा में Lotus के कई शब्द हैं, यथा-कमल, राजीव, नीरज, वनज आदि । स्थान और संदर्भ के अनुसार इनमें से एक उचित शब्द का चयन करना चाहिए । यहाँ वाक्य में Rama शब्द होने के कारण अनुप्रास सौंदर्य लाने हेतु राजीव पर्याय का चयन होना चाहिए - राम ने राजीव पुष्प को लिया है । निकटतम शब्दों के चयन में शब्द सौंदर्य, सांस्कृतिक समरूपता, औचित्य आदि का ध्यान रखना चाहिए यथा - 'यह मुमताज महल का प्रासाद है 'कहने के बदले' यह मुमताज का महल है' कहने में औचित्य का निर्वहण होता है ।

7.2.16. समानार्थक शब्दों का चयन : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मिताली जी के शब्दों में शक्ति साहित्य के अनुवाद में कई पर्यायों का प्रयोग करना पड़ता है । वैज्ञानिक अनुवाद में एक संकल्पना के लिए निर्धारित एक ही प्रतीक या समतुल्य शब्द होता है । यही शब्द अनुवाद में बार-बार प्रयुक्त होता है । प्रशासनिक अनुवाद में भी एक ही समानार्थक शब्द होता है जैसे - Secretary सचिव, Accountant General - महालेखापाल । इन शब्दों का प्रयोग बार-बार करना पड़ता है, जब कि साहित्यिक अनुवाद में कई पर्याय हमारे सम्मुख आते हैं, यथा - Sun शब्द के लिए सूर्य, रवि, दिनकर, मार्तांड, भानु आदि शब्द हैं । विषय, संदर्भ आदि के अनुसार इनमें से एक उचित शब्द को चुन लेना चाहिए । व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अनुवाद नहीं करना चाहिए । समानार्थकता - सिद्धान्त यहाँ काम नहीं करता ।

7.2.17. उचित पदबंध का चयन

अनुवादक को चाहिए कि स्रोत भाषा में प्रयुक्त पदबंध के लिए लक्ष्य भाषा में उचित पदबंध का प्रयोग करे । कभी-कभी पदबंध का मुहावरे के रूप में भी प्रयोग होता है । 'Enjoy at the cost of others' -- यहाँ 'At the cost of others' पदबंध के लिए समुचित पदबंध लक्ष्य भाषा में चुनना चाहिए । 'At the cost of others' के लिए 'दूसरों की कीमत पर' 'दूसरों के मूल्य पर' आदि पदबंध उपलब्ध हैं ।

7.2.18. उचित लोकोक्ति का प्रयोग

अनुवाद में उचित लोकोक्ति का प्रयोग न करे तो लक्ष्य भाषा विकृतियों

की निधि बन जायेगी । अनुवादक का कर्तव्य है कि उचित लोकोक्ति का चय करे । चयन करते समय स्रोत भाषा की लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में जो निकटतम लोकोक्ति हो, उसी को ग्रहण करे, यथा -"Where there is a will there is a way." इसके लिए हिन्दी में ये लोकोक्तियाँ, 'जहाँ चाह वहाँ राह' अथवा 'जहाँ मन वहाँ मार्ग' हैं । इस प्रकार की समतुल्य लोकोक्तियों का प्रयोग होना चाहिए ।

7.2.19. उचित मुहावरों का चयन

साहित्यिक अनुवाद में मुहावरों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में चारुता प्रवर्धित होती है । स्रोत भाषा में प्रयुक्त मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में उपलब्ध समानार्थक एवं समतुल्य मुहावरे का चयन होना चाहिए । उदाहरण - He is in hot water. 'In hot water' - एक मुहावरा है जिस का अर्थ है - घोर संकट' । इसका अर्थ साधारण प्रतिस्थापन में 'संकट' होगा । किन्तु इस साधारण अनुवाद से मूल पाठ के सौंदर्य की गरिमा विकसित नहीं होगी । इसके समानार्थक मुहावरे को लक्ष्य भाषा में ढूँढना चाहिए । समीपस्थ प्रतिस्थापन यह है - वह काँटों में फँसा है । वह दो पाटों के बीच में फँस गया है । वह नदी और पहाड़ के बीच में फँसा हुआ है ।

7.2.20. प्राचीन एवं नवीन शैलियों का प्रयोग

अनुवादक को चाहिए कि वह मूल ग्रंथ की तत्कालीन शैली के साथ - साथ समकालीन शैली का भी प्रयोग करें । प्राचीन कृतियों के अनुवाद में दोनों शैलियाँ अपनानी पड़ेंगी ।

7.2.21. मूल कृति का पुनरवलोकन

अनुवादक में यह गुण होना चाहिए कि वह मूल कृति का बार-बार अवलोकन करे, जिस से कि मूल लेखक के हृदय की धड़कनें पहचान सके । मूल पाठ के पुनरवलोकन से स्रोत भाषा की इकाइयों की जानकारी हासिल होती है ।

7.2.22. सफल अनुवाद में यथार्थता

योग्य अनुवादक अनुवाद को सजीव शक्ति के द्वारा प्रभावित करने का प्रयत्न करता है । डॉ.बी.यस नरवणे पाल वेलेरी की राय यों प्रस्तुत करते हैं - यथार्थता के अभाव में अनुवादक अनुवादक नहीं रहता । यथार्थता के अभाव में अनुवादक मूल रचना का केवल निष्ठा के कारण गला घोंट देता है और शवलेप करके निर्वात प्रदर्शन कक्ष में रख देता है ।

7.2.23. अनुवाद में कलात्मकता

''भूसा भरे गीध की अपेक्षा मैं एक जीवित गौरैया को अधिक पसंद करता हूँ'' – यह फ़िटजेराल्ड ने कहा था । फ़िटजेराल्ड के अनुसार अनुवाद में कलात्मकता न हो तो वह मृत कलेवर - सा हो जाएगा । कला की कमनीयता के आनयन के लिए रसात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को अपनी ओर से कुछ जोड़ना पड़ता है । फ़िटजेराल्ड ने अपने अनुवादों में कलात्मकता लाने हेतु कुछ ऐसे भाव भी जोड़ दिए हैं, जो मूल में नहीं हैं । ''कुछ छोड़ो कुछ जोड़ो'' सिद्धांत साहित्यिक अनुवाद में ग्राह्य हो सकता है, न कि सूचना-प्रधान साहित्य के अनुवाद में । रसात्मक साहित्यिक अनुवाद में अनुप्रास की छटा,

कल्पना प्रवणता आदि को स्थान देने हेतु इस सिद्धांत का पालन किया जाता है ।

7.2.24. प्रांजलता एवं स्पष्टता

अनुवादक की सफलता स्पष्टता एवं प्रांजलता पर आधारित है । अनुवादक को चाहिए कि मूल भाषा में व्यक्त विषय को लक्ष्य भाषा में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करे । स्पष्टता के न होने पर अनुवाद हास्यास्पद हो जाता है । स्पष्टता वस्तुतः अनुवाद की जान है । अतः अनुवादक का कर्तव्य है कि मूल लेखक के हृदय को अपने हृदय में स्थानांतरित कर ले और स्पष्टता के प्रकाश में उस हृदय को पुनः लक्ष्य भाषा में प्रतिष्ठापित करे ।

7.2.25. समतुल्यता

समतुल्यता के बिना अनुवाद में विकृति आ जाती है । अतः अनुवाद करते समय इस विषय पर ध्यान देना चाहिए कि अनुवाद भाव, इकाई, प्रतीक आदि स्तरों पर समतुल्य हो । साधारणतः भाव के स्तर पर अनुवाद मूल का समतुल्य होता है । किन्तु इतने से कार्य पूर्ण नहीं बनता । अनुवाद में कथ्य, कथन, प्रभविष्णुता आदि की समतुल्यता अपेक्षित है ।

7.2.26. पूर्वाग्रह - मुक्ति

किसी रचना के संबंध में आरंभ में ही एक राय निश्चित कर तत्पश्चात् उसका अनुवाद करने की चेष्टा सफल अनुवादक के लिए योग्य नहीं होती । अतः पूर्वाग्रह उवं हठवादिता के दोष से अनुवादक को मुक्त रहना चाहिए ।

पूर्वाग्रह के कारण अनुवादक फूल को धूल बना देता है । जहाँ तक हो सके, अनुवादक को हठवादिता से मुक्त होकर मूल कृति का अनुवाद करना चाहिए ।

7.2.27. रोचकता एवं प्रभविष्णुता

रोचकता एवं प्रभविष्णुता वस्तुतः अनुवाद की अंतरात्मा है । कथ्य एवं कथन की समतुल्यता केवल शरीर मात्र है, जब कि रोचकता तथा प्रभविष्णुता उस शरीर का चैतन्य है । जो अनुवाद जितना रोचक होता है, वह उतना ही लोकप्रिय बनता है ।

7.2.28. पुनःपठन एवं संशोधन : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मितालीजी के शब्दों में एक बार अनुवाद कर जो अनुवादक पोथी बंद कर देता है, वह सफलता के शिखर पर चढ़ नहीं सकता । सहन शक्ति से पुनः पुनः अनुवाद का पठन करते हुए उसमें संशोधन करना चाहिए । विवेक की कसौटी पर कसकर अनुवाद को समग्र बनाने का प्रयत्न आवश्यक है । मूल के साथ दो तीन बार अनुवाद की तुलना करते समय संभाव्य परिवतान को स्थान देना चाहिए । संशोधन वस्तु को सान पर चढ़ाने के समान है ।

7.2.29. शब्द कोश का प्रयोग

अनुवाद को मूल सापेक्ष तथा दोषरहित बनाने के लिए पर्याय ज्ञान एवं पर्याय चयन अत्यंत आवश्यक है । इकाइयों के पर्याय जानने हेतु शब्द कोश का सतत प्रयोग आवश्यक है । मूल के शब्दों का वास्तविक अर्थ जानने के लिए शब्दकोश दर्पण की तरह अत्यंत उपयोगी है । एकार्थ शब्दकोश के अतिरिक्त

अनुवादक को नानार्थ शब्द कोश एवं पर्याय शब्द कोश का प्रयोग भी करना चाहिए ।

7.2.30. पारिभाषिक शब्दावली

वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक शब्दों का अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए । अनुप्रास, यमक आदि के मोह में अन्य शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए । सरकार तथा शास्त्र द्वारा सुनिश्चित पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से अनुवाद शुद्ध एवं स्तरीय बनता है । 'सेक्रेटरी' शब्द के लिए सचिव शब्द का प्रयोग करना चाहिए । इसी प्रकार अथॉरिटी के लिए 'प्राधिकार' शब्द का प्रयोग होना चाहिए । यह शब्द मानक शब्द है । इनकी जगह अन्य शब्दों का प्रयोग अपराध माना जायेगा ।

7.2.31. मूल कृति से अनुवाद

मूलकृति से अनुवाद करने की प्रवृत्ति अनुवादक के शीर्ष को सफलता के किरीट से शोभित करती है । मूल कृति यदि बंगाली में हो तो बंगाली भाषा से उसका सीधा अनुवाद होना चाहिए। बंगाली की मूलकृति देवदास के तेलुगु अनुवाद का हिन्दी अनुवाद सुंदर एवं स्तरीय नहीं बनेगा, क्योंकि शरतबाबू के हृदय की ध्वनियाँ मूल बंगाली कृति में ही विद्यमान रहती हैं ।

7.2.32. बहु प्रचलित शब्द प्रयोग

एक सफल अनुवादक अप्रचलित एवं अल्पप्रचलित शब्द प्रयोग न कर सर्व स्वीकृत बहु प्रचलित शब्दों का प्रयोग करता है । ये शब्द अक्लिष्ट व

लोकमान्य होते हैं । जिस अनुवादक में बहुप्रचलित शब्दों का प्रयोग करने की जितनी क्षमता है, उसकी अनूद्य कृति उतनी ही सुंदर एवं स्तरीय बनती है ।

7.2.33. शब्दानुवाद एवं भावानुवाद का संयोग

केवल शब्दानुवाद मात्र करने से भाव को धक्का लगता है । इसी प्रकार केवल भावानुवाद करे तो कतिपय शब्द छूट जायेंगे । इन शब्दों के विलोप से चंद भावों की दीधिति लुप्त हो जाती है । आदर्श अनुवाद वह है जिसमें शब्दानुवाद के साथ-साथ भावानुवाद का भी सम्मिश्रण होता है ।

7.2.34. व्याकरण नियमों का पूर्ण ज्ञान

प्रत्येक भाषा की संरचना भिन्न भिन्न होती है । शब्द निर्माण, वाक्य रचना, लिंग, वचन, प्रत्यय, उपसर्ग, कारक, वाक्य प्रयोग आदि के विधि-विधान अलग अलग होते हैं । वाक्य का अनुवाद करते समय स्रोत भाषा के व्याकरण के ढाँचे से नहीं, बल्कि लक्ष्य भाषा के ढाँचे के अनुसार वाक्य निर्माण करना चाहिए, जैसे -

तेलुगु	-	कुक्क वच्चुचुन्नदि
हिन्दी	-	कुत्ता आ रहा है
अंग्रेज़ी	-	Dog is coming

तेलुगु में कुत्ते का कोई लिंग नहीं है । अतः पुरूषेत्तर लिंग में क्रिया की संरचना हुई है, जब कि हिन्दी में कुत्ते का लिंग पुल्लिंग होने के कारण क्रिया पुल्लिंग में प्रयुक्त है । इसी प्रकार लक्ष्य भाषा के नियमों के अनुसार वाक्य का निर्माण करना पड़ता है । उस भाषा के नियमों के अनुसार प्रत्यय, कारक, वाक्य आदि का प्रयोग होता है । अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के नियमों के

अनुसार शब्द क्रम निर्धारित होता है, यथा -

मैंने दो संतरे खाए

I ate two Oranges

हिन्दी में क्रिया वाक्य के अंत में आती है, जब कि अंग्रेज़ी व्याकरण के अनुसार क्रिया शब्द कर्ता के बाद आता है एवं कर्म शब्द क्रिया के उपरांत रख दिया जाता है । अनुवाद करते समय इन सभी नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है ।

7.2.35. छोड़ने एवं जोड़ने की प्रवृत्ति

छोड़ने एवं जोड़ने की प्रवृत्ति की समस्या अत्यंत जटिल है । अनुवादक प्रायः सोचता है कि अनुवाद करते समय मूल के कतिपय शब्दों को वह छोड़ सकता है । उसी प्रकार मूल भाषा की सामग्री को रूपांतरित करते समय अनुवाद में रोचकता एवं सजीवता लाने हेतु अपनी ओर से वह कुछ जोड़ सकता है । डॉ.मिताली भट्टाचारजी के शब्दों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति अपने आप में एक समस्या है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद में यह प्रवृत्ति भयंकर रूप धारण करती है । यह समस्या तब परिष्कृत होती है, जब अनुवादक अनुवाद में अपनी ओर से न कुछ जोड़ता है और न मूल का कोई अंश छोड़ता है । पर अकसर ऐसा नहीं होता । साहित्यिक अनुवाद में अकसर भाव को रोचक बनाने हेतु अनुवादक अपनी ओर से कुछ जोड़ देता है ।

फ्रिड्जेरॉलड ने उमर खय्याम की रूबाइयों के अनुवाद में आवश्यकता के अनुसार कुछ जोड़ा भी है और कुछ छोड़ा भी है । फलस्वरूप रूपांतरण

अनुवाद-सा दिखाई नहीं पड़ता । मूल रचना की प्राण प्रतिष्ठा उसमें हुई है ।

7.2.36. स्रोत भाषा के मूल पाठ के दोष की समस्या

कभी-कभी मूल पाठ में निहित दोष के निवारण की समस्या अनुवादक के सम्मुख आती है । स्रोत भाषा में यह दोष भाव रंजक नहीं होता । हो सकता है कि लक्ष्य भाषा में यह दोष बन जाये । अतः संदर्भ के अनुसार भी मूल भाषा का दोष लक्ष्य भाषा में यथातथा अपनाना पड़ता है । इसमें भी छोड़ने और जोड़ने की समस्या निहित है । पुनरुक्तवदाभास अलंकार रचना को रम्य बनाता है । किन्तु उसका अनुवाद अत्यंत कठिन बन जाता है । कभी-कभी यह दोष तोषदायक बनता है । हिन्दी वाक्य है - 'ये पुष्प सुमन हैं, मन भी हैं' । अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद करना अत्यंत कठिन है । हिन्दी के उपर्युक्त वाक्य के कई अर्थ हो सकते हैं । सुमन शब्द में श्लेष है - सुमन = पुष्प, अच्छा मन वाला, विद्वान, देवता आदि ।

7.2.37. अनुकरण की समस्या

प्लॉटो संसार को परमात्मा के स्वरूप का अनुकरण मानते हैं । उनके अनुसार मूल रचना भी अनुकृति ही है । अतः अनुवाद अनुकरण का अनुकरण है । तत्ववेत्ताओं के अनुसार अनुकृति पूर्ण नहीं होती । अर्थ भंग अनुकृति में हो जाता है । प्लॉटो कहते हैं कि अनुवाद पूर्ण सत्य तक कभी पहुँच नहीं सकता । उनके अनुसार मूल रचना स्वयं अनुकृति होने के कारण वह अपूर्ण होता है । अतः अनुवाद का सारा कार्य अपूर्णता को स्थापित करने का प्रयत्न मात्र है । कई विद्वान प्लॉटो के मत से सहमत हैं । वे अनुवाद को अराजकता फैलाने का

उपक्रम मानते हैं । कतिपय विद्वान प्लॉटो के इस मत से सहमत नहीं हैं । अनुवादक की प्रतिभा के अनुसार अनुवाद मूल से भी सुंदर हो जाता है । अनुवाद अनुकृति नहीं है । इन विद्वानों के अनुसार अनुवाद मूल भाव भंगिमा की प्रतिस्थापना है ।

7.2.38. मानसिकता

अनुवाद कार्य में अनुवादक की मानसिकता कभी-कभी समस्या का रूप धारण करती है । फ़िडजेरॉल्ड जैसे अनुवादक की मानसिकता सभी अनुवादकों में नहीं हो सकती है । फ़िडजेरॉल्ड अपने अनुवाद को स्रोत भाषा के मूल पाठ से कम महत्वपूर्ण नहीं मानते । किन्तु यह देखा जाता है कि अधिकतर अनुवादक अपने अनुवाद को मूल लेखक की कृति के समान नहीं मानते हैं । इस मानसिकता के कारण अनुवादक का अनुवाद कुण्ठित हो जाता है । उस अनुवादक में यह भ्रम बना रहता है कि कालांतर में एक दिन उसका अनुवाद अदृश्य हो जायेगा और मूल रचना ही संसार में बची रहेगी । यह भ्रम अनुवादक के लिए आत्महत्या के समान है । इस उपक्रम में उसकी प्रतिभा लड़खड़ाने लगती है । अनुवादक को सदा इस आस्था के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि उसका रूपांतरण कार्य मूल लेखक की रचना के समान सुंदर होगा ।

7.2.39. भ्रामक धारणा का निवारण

डॉ.वी.एस.नरवणे के अनुसार सर्वप्रथमतः एक स्वाभाविक भावना यह रहती है कि अनुवाद कितना ही अच्छा क्यों न हो, मूल रचना उसकी अपेक्षा

निश्चित ही ज्यादा स्थायी होगी । अनुवादक जानता है कि वह अपने लेखक के साथ अमरत्व की आशा नहीं कर सकता और हम में से विनीत व्यक्ति भी आत्म प्रदर्शन की भावना से मुक्त नहीं है । इलियट जीवित है, जब कि चैपमैर और पोप द्वारा किए गए अनुवाद विस्मृति के गर्त में खो गए । इसी प्रकार दीवान-ए गालिब और गीतांजलि समय आने पर अपने अनुवादों को पीछे छोड़ जायेंगे । इस तरह अनुवादक पूर्णतः यह धारणा लेकर चलता है कि उसका कार्य एक दिन निष्फल हो जायेगा । यह मानो प्रकृति के नियमानुसार पूर्व निर्धारित है कि वह काल के पाश का शिकार होगा और मूल रचना जीवित रहेगी । टॉल्स्टॉय और एलेमर माड अथवा क्रोचे और डगलस ऐसलाई के पारस्परिक संबंध से यह बात स्पष्टतः प्रकट होगी । परन्तु इन असामान्य स्थितियों में भी भाव बोध अपूर्ण ही रहेगा ।

7.2.40. मूल लेखक की मानसिकता

अनुवाद में वस्तुतः अनुवादक की मानसिकता, मूल लेखक की मानसिकता के साथ साथ आगे बढ़ती है । जब तक अनुवादक मूल लेखक की मानसिकता का परिचय प्राप्त नहीं करता, तब तक वह अनुवाद में मूल रचना का सौंदर्य प्रतिस्थापित नहीं कर सकता । मूल लेखक की मनोदशा, उसकी आस्था, उसके युग की दिशा-दशा आदि को जानकर उन्हें लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करना अत्यंत आवश्यक है । मूल लेखक के समाजिक , आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विचारों का सम्यक् ज्ञान न हो तो अनुवादक मूल रचना के सत्य को अनुवाद में नहीं ला सकता । मूल रचना की सुगंध लक्ष्य भाषा में लाने

का प्रयत्न सफल अनुवादक ही कर सकता है । कभी-कभी मूल लेखक की मानसिकता को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थपित करने हेतु मूल में प्रयुक्त शब्दों को ही प्रयुक्त करना पड़ता है, जैसे महाभारत में प्रयुक्त 'नर' शब्द को ही अनुवाद में स्वीकृत करना चाहिए । नर शब्द के दो अर्थ है - मनुष्य एवं अर्जुन । अनुवाद में नर शब्द के स्थान पर मानव शब्द का प्रयोग करे तो मूल का अर्थ वैभव कुंठित हो जाता है ।

7.2.41 मूल लेखक को मन में प्रतिस्थापित करने का सामर्थ्य

जब तक अनुवादक मूल लेखक को मन में प्रतिस्थापित नहीं करता, तब तक अनुवादक में स्रोत भाषा की मूल रचना में निहित शक्ति के स्फुलिंग, चरित्र की सुगंध और सौंदर्य की चंद्रिका अनुवाद में नहीं आ सकती । अनुवाद मूल लेखक के मन एवं आस्था का जीवंत प्रतिरूप होना चाहिए । वह मूल का छाया चित्र मात्र नहीं है, बल्कि मूल का जीवंत रूपान्तर है । मूल लेखक के मन की सारी संपत्ति जब तक अनुवादक अपने मन में पुनःस्थापित नहीं करता, तब तक मूल का माधुर्य रूपांतरण में नहीं ला सकता । अनुवाद कार्य में आद्यंत अनुवादक को मूल लेखक को अपने साथ-साथ लेकर उसके संसर्ग की शालीनता अनुवाद में प्रदान करनी चाहिए । इस प्रक्रिया के द्वारा अनुवादक लक्ष्य भाषा को अभूत पूर्व गरिमा प्रदान कर सकता है ।

7.3. असफल साहित्यकार अनुवादक हो जाता है

साहित्य-जगत में प्राचीन काल से ही इस प्रकार की अनेक मान्यताएँ प्रचलित रही हैं । ये हीन ग्रंथिवाले लोगों द्वारा व्यक्त की गई हैं, जिनमें कोई

तत्व की बात है ही नहीं । आलोचक इस क्षेत्र में कवियों और कथा-नाटक लेखकों के गुण दोषों का विवेचन करते हैं । साहित्यकार अपने दोषों को देखकर बहुत खीझते हैं और यह कहना शुरू करते हैं - असफल साहित्यकार आलोचक बन जाता है । अनुवादक को लेकर भी इस प्रकार अनेक बातें यूरोप में तथा अन्यत्र कही जाती रही हैं । डैनहम का कथन है - The few, but such as cannot write, translate. फ्रैंकलिन ने भी लगभग इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए थे ।

7.4. श्रेष्ठ अनुवाद

अनुवाद के क्षेत्र में भी ऐसे लोग हैं जो प्रतिभाशाली नहीं हैं या और काम में सफलता नहीं मिली तो अनुवादक बन बैठे । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सारे के सारे अनुवादक ऐसे ही हैं । रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद तथा बच्चन जैसे उच्च कोटि के साहित्यकारों ने भी अनुवाद किये हैं । असफल साहित्यकार घटिया अनुवादक निकल सकता है । बहुत से लोग साहित्य-रचना में सफल नहीं हुए, किन्तु अनुवाद में सफल हुए हैं । कई लोग साहित्य रचना तथा अनुवाद दोनों में असफल हुए और बहुत से लोग साहित्य रचना में सफल हुए हैं ।

7.5. सफल अनुवादक

कहा जाता है कि असफल साहित्यकार आलोचक बन जाता है । इसी प्रकार असफल साहित्यकार सफल अनुवादक हो सकता है । वस्तुतः मौलिक साहित्य लेखन तथा अनुवाद के लिए हर दृष्टि से समान गुणों की आवश्यकता

नहीं है । इसलिए दोनों क्षेत्रों में सफलता-असफलता प्रायः एक दूसरे से संबंध नहीं रखतीं ।

7.5.1. अच्छे अनुवादक की प्रमुख योग्यता

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक का योगदान काफ़ी महत्वपूर्ण है । अच्छे अनुवादक से प्रमुख रूप से तीन अपेक्षाएँ की जाती हैं -

क) स्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं पर पर्याप्त अधिकार
ख) विषय का सम्यक् ज्ञान एवं
ग) मूल लेखक के साथ सहानुभूति ।

यह अच्छे अनुवादक की प्रमुख योग्यताएँ हैं ।

7.6. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर अधिकार

अनुवाद की यह बुनियादी शर्त है कि अनुवादक को स्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए । शब्द कोश, विश्वकोश आदि संदर्भ ग्रंथ एक सीमा तक ही सहायक होते हैं, क्योंकि अधिकांश शब्दों के दूसरी भाषा में दर्जन भर पर्यायवाची दिए हुए होते हैं । इसलिए शब्द कोशों का सही प्रयोग जानने के लिए पहले दोनों भाषाओं पर अधिकार होना जरूरी है । अनुवादक में समान प्रभाव तथा संदर्भ को व्यक्त करने वाले शब्दों को तत्काल ढूँढ निकालने की क्षमता होनी चाहिए । अनुवादक को दोनों भाषाओं पर कितना अधिकार है, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि किसी विशेष शब्द की अर्थ छटाओं की उसे कितनी जानकारी है । अनुवादक जितनी कुशलता से प्रसंगानुसार ठीक पर्याय निकाल सकेगा, उसका अनुवाद उतना ही उत्तम होगा । अच्छा तो यह है

कि अनुवादक को स्रोत भाषा की अच्छी जानकारी हो और लक्ष्य-भाषा की शब्दावली के प्रयोग, अर्थ, वाक्य आदि की अच्छी पकड़ एवं लेखकीय गति हो । उसे यांत्रिक ढंग से शब्दों को मिलाना नहीं चाहिए, बल्कि उसे स्रोत भाषा में अभिव्यक्त संकल्पना को लक्ष्य भाषा में उतारने के लिए एक नवीन भाषकीय संरचना का निर्माण करना चाहिए । अनुवाद-प्रक्रिया की बुनियादी चीज़ तो अनुवादक की तत्काल द्विभाषिक प्रयोग की क्षमता होती है । प्रत्येक भाषा की शैली तथा सांस्कृतिक परिवेश की सटीक धारणा भी अनुवादक के लिए अपेक्षित है । स्रोत भाषा की संरचनाओं का लक्ष्य भाषा पर व्याघात न हो, इसके लिए स्रोत भाषा एवं लक्ष्य के आधार पर लक्ष्य-भाषा के समतुल्य प्रयोगों को ढूँढना चाहिए । इस दृष्टि से अनुवाद वास्तव में अनुवादक की द्विभाषिक क्षमता की कसौटी ही है ।

7.7. निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अनुवाद का कार्य सागरोल्लंघन के समान है । अनुवादक को हनुमानजी की तरह शब्द एवं अर्थ के सागर एवं गगन पार करते हुए लक्ष्य भाषा लंका में प्रवेश करना पड़ता है । सफल अनुवादक भाषाओं का ज्ञान, विषय का पूर्ण ज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक, सांस्कृतिक, शाब्दिक एवं पारिभाषिक विषयों का पूर्ण ज्ञान आदि की सहायता से अनुवाद संबंधी समस्याओं को हल कर सकता है । सफल अनुवादक का स्थान इतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि मूल लेखक का । आदर्श अनुवादक बनने हेतु आपको लक्ष्य भाषा, स्रोत भाषा, अनुवाद कार्य के लिए अपेक्षित शैली, उचित शब्द चयन, प्रभविष्णुता के रहस्य आदि का पूर्ण ज्ञान संप्राप्त करना पड़ता है ।

तभी आपके अनुवाद रूपी स्वर्ण में नई सुषमा की सुगंध संप्रसरित होगी ।

7.8. सारांश

अनुवाद ज्ञान-विज्ञान के प्रसरण का महासाधन बन गया है । विज्ञान और संस्कृति के प्रसार के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा रसात्मक साहित्य की महत्ता क्षण-क्षण प्रवर्धित होती रहती है । अनुवाद की इस महत्ता के साथ अनुवादकों की महत्ता भी संबधित है । अच्छे अनुवादक ज्यों-ज्यों सफलता के शेखर पर चढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों ज्ञान के मंजु मयूख एक भाषा से दूसरी भाषाओं में संप्रसरित होते जाते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवादकों की महत्ता बढ़ रही है । सफल अनुवादकों की माँग सभी भाषाओं में दृग्गोचर होती है । सफल अनुवादकों के लिए भी प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं संस्कार की आवश्यकता होती है । सफल अनुवादक के लिए अपेक्षित गुण एवं योगयताओं की मीमांसा प्रस्तुत इकाई में की गई है । भाषा, विषय, शैली, तंत्र निर्वहण, सहनशक्ति, निष्ठा आदि से संबंधित आयाम अनुवादक में अपेक्षित हैं । इस निबंध में यह तथ्य निरूपित किया गया है कि कोई भी अनुवादक स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के परिपूर्ण ज्ञान के बिना शालीन अनुवाद प्रस्तुत नहीं कर सकता । अनुवादक की दूसरी योगयता विषय ज्ञान से संबंधित है । निष्ठा एवं श्रद्धा के बिना कोई कार्य संपन्न नहीं हो सकता । अनुवादक में अपेक्षित चतुर्थ महत्वपूर्ण गुण सहनशक्ति है । अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न आयामों का निर्वहण सहन शक्ति के बिना संभव नहीं है । भाषांतरकार में अपेक्षित पंचम गुण एवं योग्यता समतुल्यता ज्ञान है । शब्द, पदबंध, मुहावरे, लोकोक्ति, वैज्ञानिक पदावली आदि के अनुवाद

में स्रोत भाषा के इन प्रतीकों के समतुल्य प्रतीकों को लक्ष्य भाषा में ढूँढना पड़ता है । इन प्रतीकों को पहचानने की योग्यता अनुवादक की सफलता रूपी किरीटश्री में नये मोर पंख जोड़ देती है । अनुवादक में अपेक्षित सबसे बड़ी योग्यता, कथ्य तथा कथन शैली से संबंधित स्तरीय निर्वहण है । अनुवाद इतना स्तरीय हो कि लक्ष्य भाषा पाठक अनुवाद पढ़कर ऐसा ही आनंद एवं ज्ञान प्राप्त करे, जैसा आनंद और ज्ञान मूल पाठ पढ़कर स्रोत भाषा का पाठक प्राप्त करता है । इस घटक में सफल अनुवादक में अपेक्षित अन्य गुणों और योग्यताओं का भी विश्लेषण किया गया है, यथा - अनुवाद कार्य में निष्ठा, निरंतर अभ्यास, प्रयुक्ति स्तर, उचित शैली प्रयोग, संस्कृति, परिवेश एवं प्रसंग का परिज्ञान, उचित शब्द चयन, वाक्य रचना विधान, मौलिकता, निकटतम शब्दों की पहचान, पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान, शब्द कोश का पूर्ण ज्ञान आदि । अनुवादक में अपेक्षित भाषा ज्ञान, विषय ज्ञान, तंत्र परिज्ञान, शैली आदि के संबंध में भी सुपरीक्षित अंश प्रस्तुत किये गये हैं ।

7.9. संभाव्य प्रश्न

I] आदर्श अनुवादक की योग्यताओं एवं गुणों का विवेचन कीजिए ।

II] **टिप्पणी लिखिए** -

i) समतुल्यता संबंधी योग्यता

ii) असफल लेखक अनुवादक बनता है ।

7.10. अभ्यास के प्रश्नों से संबंधित उत्तर

I. आदर्श अनुवादक में अपेक्षित योग्यताएँ एवं गुण

आदर्श अनुवादक किसी भी भाषा का कौस्तुभ रत्न माना जा सकता है । मूल लेखक एक भाषा की संपत्ति को बढ़ाता है, जब कि अनुवादक उस संपत्ति का अक्षय वितरण कई भाषाओं में करते हैं । ज्ञान-विज्ञान के मणि-माणिक्यों के संप्रवर्धन के लिए सफल अनुवादकों की सेवा अत्यंत महत्वपूर्ण है । ऐसे महत्वपूर्ण आदर्श अनुवादक में निम्नसूचित योग्यताएँ एवं गुण अपेक्षित हैं –

1. अनुवाद कार्य में आसक्ति
2. अनुवाद कार्य में निष्ठा
3. एतत्कार्य में निरंतर अभ्यास
4. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान
5. भाषा प्रयोग में प्रयुक्ति स्तर
6. व्याकारण का ज्ञान
7. उचित भाषा शैली प्रयोग
8. विषय का ज्ञान
9. सांस्कृतिक तत्वों का परिज्ञान
10. परिवेश का ज्ञान
11. प्रसंग का ज्ञान
12. पुनरुक्ति वर्जन
13. मूल पाठ की प्रतिष्ठापना
14. उचित शब्द चयन
15. वाक्य रचना विधान
16. मौलिकता
17. लिप्यंतरण प्रक्रिया की पहचान
18. लिप्यंतरण में लक्ष्य भाषा ध्वनि प्रयोग
19. प्राचीन एवं नवीन शैलियों का प्रयोग
20. मूल कृति का पठन

21. निकटतम शब्दों की पहचान
22. समनार्थक शब्द चयन : व्यक्तिवाचक संज्ञा के अनुवाद का वर्जन
23. उचित पदबंध का प्रयोग
24. पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान
25. मूलकृति से अनुवाद करना
26. बहुप्रचलित शब्द प्रयोग
27. शब्दानुवाद एवं भावानुवाद दोनों का प्रयोग
28. स्पष्टता नियोजन
29. पूर्वाग्रह एवं हठवादिता से मुक्ति
30. रोचकता एवं प्रभविष्णुता
31. पुनःपठन एवं संशोधन
32. शब्दकोश का सतत प्रयोग
33. इकाइयों की पहचान
34. पुनःसृजन
35. भाषा विज्ञान का सम्यक् ज्ञान
36. अर्थ संप्रेषण निष्ठा
37. प्रभाव साम्य
38. व्याख्यात्मक रचना
39. पुनः क्रोडीकरण
40. व्याकरण का पूर्ण ज्ञान

II] टिप्पणी

i) समतुल्यता संबंधी योग्यता

सफल अनुवादक के लिए भाषा ज्ञान एवं विषय ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । इस ज्ञान के साथ साथ उसमें गृहीत कार्य के प्रति निष्ठा भी अपेक्षित है । योग्यता एवं गुणों के कई अंशों के साथ-साथ उनमें समतुल्यता ज्ञान की भी अपेक्षा की जाती है । टिप्पणी में यह लिखना होगा कि समतुल्यता कथ्य एवं कथन दोनों से संबंधित है । हाँ, कथ्य की पुनःस्थापना के लिए ही

कथन-समतुल्यता होती है । सफल अनुवादक को यह जानना चाहिए कि स्रोत भाषा की शब्द शैली, पदबंध आदि के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य शब्द, पदबंध आदि क्या हैं । समतुल्य शब्द समानार्थी भी होना चाहिए । समतुल्यता प्रमुखतः निम्न अंशों में आवश्यक है -

1. शब्द
2. पद
3. पदबंध
4. मुहावरे
5. लोकोक्तियाँ
6. वाक्य रचना विधान
7. शैली
8. प्रतीक
9. संकेत ।

ii) असफल लेखक अनुवादक बनता है

रचना संसार में कभी कभी यह नारा सुनाई पड़ता है कि असफल्ल लेखक अनुवादक बनता है । काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं में कतिपय व्यक्ति किन्हीं कारणों से असफल हो जाते हैं । इनमें से चंद सज्जन मौलिक रचना क्षेत्र को तिलांजलि देकर अनुवाद क्षेत्र में प्रवेश करते हैं । ऐसे लोगों को देखकर यह कहा गया है कि असफल लेखक अनुवादक बनता है । उपर्युक्त कथन सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतरता , क्योंकि असफल लेखक असफल अनुवादक भी बन सकता है । असफल लेखक लेखन कार्य को ही तज सकते हैं । मौलिक रचना क्षेत्र में प्रवेश न करने वाले सज्जन अनुवाद को ही अपना क्षेत्र बनाकर उसमें सफल हो सकते हैं । इस घटक के एतद्विषयक संबंधित परिच्छेद के अन्य अंशों को भी उत्तर में सम्मिलित कर लें ।

7.11. शब्दावली (Glossary)

1.	आदर्श अनुवाद	-	Ideal Translation
2.	प्रसार	-	Spread, Expansion
3.	निष्ठा	-	Firm adherence
4.	आसक्ति	-	Attachment, Fondness
5.	प्रयुक्ति	-	Use,Application
6.	वर्जन	-	Eradication
7.	लिप्यन्तरण	-	Trans-Literation/Transcription
8.	पुनः क्रोडीकरण	-	De/Re-codification
9.	भाषा विज्ञान	-	Linguistics
10.	शब्द कोश	-	Dictionary
11.	प्रभविष्णुता	-	Impressiveness
12.	लिपि	-	Script
13.	लिखावट	-	Hand Writing
14.	निष्णात	-	Expert
15.	पुनरुक्ति	-	Repetition
16.	तादात्म्य	-	Unity, Becoming one with some one's soul
17.	प्रांजलता	-	Sincerity, Straight forwardness, Lucidity
18.	समकालीन	-	Contemporary
19.	पारिभाषिक	-	Technical
20.	विश्वविद्यालय	-	University
21.	पंजीयक	-	Registrar
22.	चिकित्सा शास्त्र	-	Medical Science
23.	औचित्य	-	Propriety
24.	तटस्थ	-	Neutral
25.	वजीर	-	Minister
26.	आलम पनाह/जहाँ पनाह	-	Emperor
27.	दरबार	-	Court
28.	शायर	-	Poet

29.	मूल पाठ	-	Original Text
30.	प्रतिस्थापना	-	Re-extablishment
31.	वाक्य विधाएँ	-	Kinds of Sentences
32.	संप्रेषण	-	Communication
33.	निवेशन	-	Colonization
34.	सरल वाक्य	-	Simple Sentence
35.	संश्लिष्ट वाक्य	-	Complex Sentence
36.	संयुक्त वाक्य	-	Compound Sentence
37.	मंदार मकरंद	-	Fragrance of flower 'Mandara'
38.	नामवाचक संज्ञा	-	Proper Noun
39.	नायक	-	Hero
40.	राजीव नयन	-	Lotus eyed Person
41.	समतुल्यता	-	Comparitiveness
42.	शालीन	-	Dignified
43.	लोकाक्ति	-	Proverb
44.	चारुता	-	Beauty
45.	पुनरवलोकन	-	To go through/read again
46.	स्थानातंरण	-	Transfer of Place
47.	वर्ज्य	-	Avoidable
48.	मन्मथ	-	God of Love and Beauty/Cupid
49.	पूर्वाग्रह	-	Pre Conceived Notion
50.	हठवादिता	-	Adament Attitude
51.	अंतरात्मा	-	Inner Soul
52.	चैतन्य	-	Consciousness
53.	कसौटी	-	Mould
54.	संशोधन	-	Revision
55.	नानार्थ शब्द कोश	-	Dictionery of words having multifarious different meanings
56.	पर्याय शब्द कोश	-	Dictionary of equivalents
57.	मूल सापेक्ष	-	Like Original
58.	यमक	-	A figure of speech - pun
59.	श्लेष	-	A figure of speech - Agnomination

60.	लोकमान्यता	-	Universal recognition
61.	अप्रचलित	-	Not universally known
62.	दीधिति	-	Light
63.	संरचना	-	Structure
64.	सजीवता	-	Liveliness
65.	पुनरुक्तवदाभास	-	A figure of speech in which words create impressions of repetition
66.	मानसिकता	-	Mentality
67.	अमरत्व	-	eternity
68.	धारणा	-	Concept
69.	हीन ग्रंथि	-	Inferiority Complex
70.	भाषिक संरचना	-	Literary/Linguistic Structure
71.	विलोप	-	Disappearance

7.12. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

निबंध

1. अच्छे अनुवादक के आवश्यक गुण - डॉ.मिताली भट्टाचारजी
2. अनुवाद - श्री.पी.के.बालसुब्रह्मणियन्
3. साहित्य का अनुवाद - अज्ञेय
4. अनुवाद - डॉ.वी.यस.नरवणे

ग्रन्थ

1. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन
2. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी

NOTES

NOTES

NOTES

इकाई आठ

अनुवाद की समस्याएँ

8.0. प्रस्तावना

8.1. उद्देश्य

8.2. अनुवाद की समस्याएँ

8.3. अनुवाद एक समझौता है

8.4. अनुवादक की वंचकता

8.4.1. अनुवाद की विड़म्बना

8.4.2. अपूर्णता

8.4.3. अनुवाद पाप है

8.5. अनुवाद की विभिन्न समस्याएँ

8.5.1. अनुवाद में सजीवता लाने की समस्या

8.5.2. पर्याय समस्या

8.5.3. समतुल्यता निर्णय की समस्या

8.5.4. मूल लेखक का मंतव्य

8.5.5. अनुवाद की भाषिक समस्या

8.5.6. अज्ञेय के भाषा समस्या संबंधी विचार

8.5.7. जीवन की भाषा का प्रयोग

8.5.8. शब्दों के ध्वनि-बिम्ब की प्रतिस्थापना की समस्या

8.5.9. अनुवाद तीसरी कृति

8.5.10. भाषाज्ञान की समस्या

8.5.10.1. अनुवाद में भाषा की चेतना

8.5.11. स्रोत भाषागत भावचित्र ग्रहण

8.5.12. कठिनता की समस्या

8.5.13. असीम अर्थग्रहण की समस्या : डॉ.मिताली जी का मत

8.5.14. मूल की आत्मा के साथ तादात्म्य

8.5.15. औचित्यपूर्ण शब्दों के प्रयोग की समस्या

8.5.16. मानार्थी शब्द निर्णय समस्या

8.5.17. सफल अनुवाद की समस्या

8.5.18. भाषिक अननुवाद्यता की समस्या

8.5.19. शैली की समस्या

8.5.20. अनुवाद में प्रज्ञा शक्ति

8.5.21. प्रतीक चयन

8.5.22. शब्द शक्ति के निरूपरण की समस्या

8.5.23. देश काल की माँग की समस्या

8.5.24. शाब्दिक अनुवाद की समस्या

8.5.25. भावानुवाद की समस्या

8.5.26. काव्यानुवाद की समस्याएँ

8.5.27. विल्हेम बान हम्बोल्ट के विचार मूल की अशुद्धियों के संबंध में

8.5.28. नाट्यानुवाद की समस्या

8.5.29. कथानुवाद की समस्याएँ

8.5.30. वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्या

8.5.31. गीतानुवाद की समस्या

8.5.32. अभिलेखानुवाद की समस्या

8.5.33. संकेतानुवाद

8.5.34. संकेताक्षरों का अनुवाद

8.5.35. काव्य शास्त्रीय संख्या ज्ञान की समस्या

8.5.36. मुहावरों के अनुवाद की समस्या

8.5.37. लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या

8.5.38. अलंकारों के अनुवाद की समस्या

8.5.39. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा प्रदेशों की संस्कृति की समस्या

8.5.40. पौराणिक शब्दों के अनुवाद की समस्या : डॉ.मिताली जी का मत

8.5.41. भाषिक अनुवाद की समस्या

8.5.42. योग्य अनुवाद की पहचान की समस्या

8.5.43. सफल मनोभूमि के पुनर्निमाण

8.6. निष्कर्ष

8.7. सारांश

8.8. प्रश्न

8.9. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

8.10. शब्दावाली

8.11. संदर्भग्रंथ एवं निबंध सूची

8.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधानों का आकलन भी किया जा रहा है । अनुवाद की समस्याओं का समग्र ज्ञान प्राप्त कर आप उनके परिष्करण के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं । इस घटक में अनुवाद की विभिन्न समस्याएँ, समतुल्यता समस्या, भाषा ज्ञान की समस्या, मूल की आत्मा के साथ संयोजन समस्या आदि का अंकन किया जा रहा है ।

8.1. उद्देश्य

संसार में कोई भी ऐसा कार्य नहीं जिसमें समस्याएँ उत्पन्न न होती हों । अनुवाद जैसे महत्वपूर्ण कार्य में समस्याओं का रहना सहज स्वाभाविक है । एक पुष्प को काटकर उसके पराग, रंग, सुगंध आदि को अलग अलग करना जितना कठिन है, अनुवाद कार्य भी उतना ही कठिन है । स्रोत भाषा के मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन कार्य है, क्योंकि इस प्रक्रिया में भाव, विचार, शैली, प्रतीक आदि बदल जाते हैं । विषय, शैली, भाषा, प्रतीक, बिंब, प्रत्यय, संकेत, मुहावरे, लोकोक्ति, अनुवाद के प्रकार आदि से संबंधित कई समस्याएँ इस प्रक्रिया में हमारे सम्मुख आती हैं । इन समस्याओं को हल करते हुए अनुवाद को सफलता के शिखर तक पहुँचाने हेतु कई मंजिलें पार करनी पड़ती हैं । प्रस्तुत घटक में अनुवाद से संबंधित कई समस्याओं का विवेचन करते हुए उनके समाधान भी सुझाये गये हैं, ताकि पाठक इस प्रक्रिया में निष्णात बन सकें । अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित समस्याओं से अवगत कराकर

पाठकों को दक्ष अनुवादक बनाना प्रस्तुत घटक का उद्देश्य है ।

8.2. अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद कार्य उतना ही कठिन है, जितना कि सेब का फल काटकर उसके रंग, रस एवं सुगन्ध को अलग अलग पात्रों में भरना । यह संभव नहीं है । तथापि यथासाध्य इन्हें पृथक्-पृथक् किये जाने का प्रयत्न किया जाता है । स्रोत भाषा के मूल पाठ के रस व गन्ध को यथातथा लक्ष्य भाषा में निविष्ट करना अत्यंत कठिन है । अनुवाद प्रक्रिया में भाव, विचार, कथन, शैली, प्रतीक आदि बदल जाते हैं । इस प्रक्रिया में विषय, शैली, भाषा ज्ञान, प्रतीक, बिंब, इकाई, पर्याय आदि से संबंधित कई समस्यायें सामने आती हैं । एक सफल अनुवादक इन समस्याओं को हल करता हुआ अनुवाद को मौलिकता का स्पर्श देता है । अनुवाद की विविध समस्याओं का समाधान यहाँ किया जा रहा है । पूर्णता जीवन का आद्य उपक्रम है । अनुवादक भी पूर्णता की खोज में अर्थ और शब्दों के महा आयाम लेकर साहित्यिक यात्रा कर रहा है । अनुवाद में कथ्यतः एवं कथनतः पूर्णता लाने का प्रयत्न किया जा रहा है । डॉ.मिताली भट्टाचार्य जी के शब्दों में अनुवादक मूल भाषा के लेखक के भाव का अनुवाद कर सकता है । किन्तु भावावेश को लक्ष्य भाषा में प्रतिष्ठापित करना अत्यंत कठिन है । मूल भाषा के शब्दों के ध्वनि बिंब, प्रतीक बिंब एवं अर्थ बिंब का पुनः प्रतिष्ठापन भी अतीव कठिन है ।

सुंदरी शब्द का अनुवाद Beautiful Lady, Woman, Female आदि रूपों में किया जाता है । मूल शब्द सुन्दरी का सौन्दर्य अनुवाद में लुप्त हो जाता

है । अनुवाद में पूर्णता का आनयन अत्यंत कठिन है ।

सूचना साहित्य में पूर्णता की आशा की जाती है । किन्तु शक्ति साहित्य में यह संभव नहीं है । अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के चयन में यदि त्रुटि हो जाती है तो अनुवाद नष्टप्राय हो जाता है ।

8.3. अनुवाद एक समझौता है

शब्द-ध्वनि को अन्य भाषा में ला पाना अत्यंत कठिन है । डॉ.तिवारीजी के शब्दों में रसात्मक साहित्य के जो सर्वोत्तम अनुवाद मिलते हैं, वे हर दृष्टि से समझौता मात्र होते हैं । अनुवादक रचना की रसात्मकता की पूरी रक्षा करना चाहे तो उसे मूल को अपनी दृष्टि से ढ़ालना पड़ता है । वह मूल का अनुवाद करते समय कभी-कभी अपने मन की बात कहने लगता है ।

8.4. अनुवादक की वंचकता

अनुवादक की वंचकता अनुवाद को कभी-कभी मूल से काफी अलग खींच ले जाती है । इटली में यह कहावत प्रचलित है - 'त्रडुत्तोरे त्रडुत्तोरे' याने अनुवादक वंचक होते हैं ।

बुराइयों एवं कठिनाइयों के बावजूद अनुवाद अनेक दृष्टियों से विश्व को एक सूत्र में एक बाँधे हुए हैं । उनके सहारे ही भिन्न भाषाभाषी कंधे से कंधे मिलाकर विश्व को आगे बढ़ा रहे हैं ।

8.4.1. अनुवाद की विडम्बना

एक कहावत है - सुन्दर स्त्रियाँ वफ़ादार नहीं होतीं और वफ़ादार स्त्रियाँ

सुन्दर नहीं होतीं । अनुवाद के संबंध में ऐसा ही विचार व्यक्त किया जाता है । अनुवाद मूलनिष्ठ होगा तो सुन्दर नहीं होगा और सुन्दर होगा तो मूलनिष्ठ नहीं होगा ।

8.4.2. अपूर्णता

डॉ.भोलानाथजी कहते हैं - हर भाषा अपने सांस्कृतिक परिवेश से संयुक्त रहती है । विभिन्न भाषाओं का सांस्कृतिक परिवेश पूणतया एक नहीं होता । उनमें न सभी प्रकार का वैचारिक साम्य होता है और न अभिव्यक्ति साम्य । यदि अभिव्यक्ति को सुन्दर बनाने का यत्न करते हैं तो मूल विचार ठीक से नहीं आ पाते । यह कहा जाता है कि अनुवाद पाप है ।

8.4.3. अनुवाद पाप है

कतिपय संदर्भों में अनुवाद मूल से दूर हट जाता है। धर्म के कट्टर सदस्य धर्मग्रन्थ के भक्त होते हैं । उन्होंने देखा कि अनुवाद के कारण धर्मग्रन्थ त्रुटिपूर्ण हो जाते हैं, अतः वे अनुवाद को पाप की संज्ञा देते हैं ।

8.5. अनुवाद की विभिन्न समस्याएँ

अनुवाद की विभिन्न समस्याओं का विवेचन किया जा रहा है । ये समस्याएँ इस प्रकार हैं -

8.5.1. अनुवाद में सजीवता लाने की समस्या

जैनेन्द्रजी के शब्दों में भाषा में शब्द अपना-अपना अर्थ लेकर इस तरह समाये रहते हैं मानो अपने में स्वयं खो ही गये हों । उनकी परस्पर पृथकता वहाँ

समाप्त हो जाती है । सब मिलकर मानो वे एक भाव को प्रकट करने लग जाते हैं । इस तरह के अनेकानेक तत्वों व वाक्यों को लेकर भाषा बनती है और वह निश्चित प्रभाव उत्पन्न करती है । इसलिए अधिकांशतः यह होता है कि जब हम शब्दों का अर्थ देते हैं और शब्दों के बीच में एकता डालने वाला भाव अनुवाद में से बच जाता है तो वह अनुवादक बेजान रह जाता है । भाषा में जान होती है । उस चैतन्य की ही धड़कन है जो कहने वाले को सुनने वाले से और लिखने वाले को पढ़ने वाले से जोड़ती है । भाषा इसी तरह व्यक्तियों और समूहों के बीच में आदान-प्रदान का माध्यम होती है और मानव-समाज में क्रमशः बढ़ती हुई एकता के विस्तार का साधन बनती है । भाषा में जान अगर निकल जाने दी जाती है तो अनुवाद कलेवार मात्र रह जाता है और वह जीवनोपयोगी नहीं हो पाता ।

8.5.2. पर्याय समस्या

अज्ञेय कहते हैं - साधारण शब्द भी जटिल समस्याओं को पैदा कर सकते हैं । अंग्रेज़ी के डॉन्सर शब्द के लिए हिन्दी के पर्याय ये हैं - नर्तकी, नटनी, नचनी, नाचनेवाली आदि । वैसे ये सब सुन्दर पर्याय हैं, किन्तु प्रत्येक में निहित भाव एक दूसरे से कितना भिन्न है ! प्रत्येक के उच्चारण मात्र से प्रकट होनेवाले समाजों या वर्गों के बीच कितनी बड़ी दरार है ! और भी शराब, सुरा, मदिरा, मद्य, हाला, मै, मय आदि शब्द, भोजन, आहार, खाना - ये सब शब्दकोशीय पर्याय हैं । फिर भी उनके अर्थों के अन्तर इतने व्यापक हैं कि उनको समझने के लिए कोई बड़ी बारीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती । अनुवाद में उचित पर्याय चुनने की समस्या विकट रूप धारण कर सकती है ।

8.5.3. समतुल्यता निर्णय की समस्या

समतुल्यता का निर्णय प्रमुख रूप से पुनः सृजन की प्रक्रिया है । डॉ.जी.गोपीनाथनजी लिखते हैं - पहला मसौदा तैयार करते समय जहाँ समतुल्यता की प्राप्ति में कठिनाई हो, वहाँ पर पाद टिप्पणी या व्याख्यात्मक शब्द या उपयुक्त विशेषण देकर अर्थ के ठीक संप्रेषण का प्रयास करना चाहिए । अनुवाद करने के बाद मूल के साथ मिलन करके अनुवाद का स्वयं अनुवादक संशोधन कर सकता है । फिर मूल को अलग रखकर अनुवाद को दुहराना चाहिए ।

8.5.4. मूल लेखक का मंतव्य

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के अनुसार लेखक क्या कहता है और उसका मंतव्य क्या है - यह समझने के लिए मूल का संदर्भ तथा निकटतम इकाई की शब्द कोशीय एवं व्याकरणिक विशेषताओं का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है । अर्थ निर्णय में ग्रन्थ के बृहत्तर संदर्भ को भी दृष्टि में रखना पड़ेगा । शब्दों का सामाजिक परिवेश अनुवादक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है । लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ में मूल के शब्द को किस रूप में उतारा जा सकता है - यह भी विचारणीय है ।

8.5.5. अनुवाद की भाषिक समस्या

भाषिक समस्या के अन्तर्गत शैली समस्या, पर्याय समस्या, पर्याय चयन समस्या, शब्द चयन समस्या, इकाइयों के चयन की समस्या आदि आती हैं । भाषा की विभिन्न इकाइयों की पहचान का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ।

8.5.6. अज्ञेय के भाषा समस्या संबंधी विचार

डॉ.अज्ञेयजी लिखते हैं - भाषा की अपनी ही कठिनाइयाँ हैं । मानवों के बीच संवाद के साधन के रूप में भाषा स्थान, काल, युग और उनकी परिस्थितियों से अनिवार्यतः गूँथी रहती है । एक समाज से दूसरे समाज, एक युग से दूसरे युग में संक्रमण मूल लेखक और अनुवादक के बीच की समस्याओं से कहीं अधिक गहन समस्याओं को अन्तर्ग्रस्त करता है । ऐसे 'पर्याय' के प्रयोग से, जो कि मूल लेखक के युग से संगत हो, रूढिवाद का दोष उत्पन्न हो सकता है और यदि मूल लेखक अपने समय में आधुनिकवादी रहा हो और भाषा के क्षेत्र मं नये प्रयोग करने वाला समझा जाता हो, तब तो यह उपहास्यपूर्ण ही प्रतीत होगा । दूसरी ओर मूल लेखक की भाषा का अपने युग से जैसा संबंध रहा हो, अनुवादक के युग में वैसा ही सम्बंध रखने वाली भाषा के प्रयोग द्वारा मूल लेखक और उसके युग के संबंध को दर्शाने के प्रयास से दूसरे प्रकार का भयंकर काल-भ्रम पैदा हो सकता है ।

8.5.7. जीवन की भाषा का प्रयोग

जैनेन्द्र कहते हैं कि अनुवाद के कार्य के तटों पर दो भाषाएँ हैं । मूल की भाषा एक है जो अनिवार्य है । उसका मुहावरा वहाँ के लोगों की रीति-नीति के अनुसार अलग रहता है । अनुवाद जिस में किया जाना है, वह भाषा बिलकुल दूसरी होती है और उसके रंग-ढंग में लहज़े मूहावरे में भी फ़र्क होता है । जरूरी है कि अनुवादक दोनों भाषाओं से परिचित हो । लेकिन जो उससे भी ज्यादा जरूरी है, वह यह कि जिस भाषा में अनुवाद करना हो, अनुवादक उस भाषा को

जानता बूझता ही न हो, बल्कि उसमें रहता-सहता भी हो । मूल भाषा के अच्छे परिचय से भी काम चल सकता है । लेकिन उल्थे में काम आने वाली भाषा तो जीवन की ही होनी चाहिए ।

8.5.8. शब्दों के ध्वनि-बिम्ब की प्रतिस्थापना की समस्या :

डॉ.मिताली जी का मत

स्रोत भाषा के शब्द के ध्वनि-बिम्बों को लक्ष्य भाषा में पुनः प्रतिस्थापित करने हेतु उसमें उपलब्ध ध्वनि-बिम्बों के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। डॉ.मितालीजी के शब्दों में यदि समान ध्वनि-बिम्ब व समुचित शब्द नहीं मिलें तो. अनुवाद अटपटा हो जायेगा । अनुवाद में अनुप्रास की छटा की पुनःप्रतिस्थापना न हो तो कविता का भाव-सौंदर्य कुंठित हो जायेगा ।

उदाहरण - ''इंद्र जिमि जंभ पर बाडब सुअंब पर रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है ।'' - इस पंक्ति में शब्दों के ध्वनि-बिम्बों की स्थापना एक सुयोग्य अनुवादक ही कर सकता है । शब्दों में मिलित ध्वनि-बिम्ब भाव में लचक पैदा करते हैं । अंग्रेज़ी में इन ध्वनि-बिम्बों की स्थापना करना बायें हाथ का खेल नहीं है ।

8.5.9. अनुवाद तीसरी कृति

क्रोचे के अनुसार अभिव्यक्ति ही व्यंजना है । अनुवाद कभी संभव हो ही नहीं सकता । कला या काव्य अभिव्यक्ति के नाम हैं और अभिव्यक्ति कला है या काव्य है, लेकिन साहित्य नहीं । अभिव्यक्ति अखण्ड और अद्वितीय होती है । उसका दूसरा रूप नहीं हो सकता है । डॉ.नगेन्द्र कहते हैं - काव्य का अर्थ है

अभिव्यजना और अभिव्यंजना अद्वितीय होती है । अतः अनुवाद कैसे हो सकेगा ? अतः जो लोग काव्य के अनुवाद की बात करते हैं, वे तो दूसरी कलाकृतियाँ हैं । शकुन्तला के अनेक अनुवाद हुए, इलियट के अनेक अनुवाद हुए । लेकिन ये तो अनुवाद नहीं हैं । वे तो दूसरी कृतियाँ हैं । शकुंतला की रचना को लेकर लक्ष्मणसिंह ने दूसरे रूप में रच दिया । लेकिन उसे अनुवाद नहीं कहा जा सकता । तत्व रूप से बात तो यही है । यों तो यह कहना ठीक है कि तत्वतः काव्य का अनुवाद संभव नहीं है, लेकिन व्यवहार में यह बात लागू नहीं हो सकती । तब तो एक भाषा के संपर्क से दूसरी भाषा के विकास में रुकावट आयेगी । अतः क्रोचे की बात व्यवहार रूप में ठीक नहीं है ।

8.5.10. भाषाज्ञान की समस्या

भाषाज्ञान अनुवादक की कार्यक्षमता का मूल धन है । भाषाज्ञान के लिए अनुवादक सफलता के सागर में डूब जायेगा । डॉ.मितालीजी के अनुसार भाषा का जितना ही अधिक ज्ञान अनुवादक में होगा, उसका अनुवाद उतना ही सुन्दर एवम् स्तरीय होगा ।

8.5.10.1. अनुवाद में भाषा की चेतना

जैनेन्द्र के शब्दों में जो लेखन मौलिक है वह गढ़ा हुआ और कृत्रिम नहीं होता । वह सहज और प्रवाही होता है । वह व्याकरण के अधीन नहीं हो तो व्याकरण उसमें गर्भित रहता है । ऐसा साहित्य लिखने और पढ़नेवाले के बीच ऐसी अंतरंगता पैदा कर देता है कि मानो व्यवधान ही न बचता हो - जहाँ भाषा

की चेतना बैठ सके । श्री तुकाराम रामप्रिय के शब्दों में अनुवाद की सफलता इसमें है कि मूल लेखक और अनुवाद के पाठक में एक ही प्रकार की संवेदना, सहानुभूति की घनिष्ठता और आत्मीयता पैदा हो ।

8.5.11. स्रोत भाषागत भावचित्र ग्रहण

जैनेन्द्रजी लिखते हैं - जानकारों द्वारा किए गए अनुवाद भी बेहद निकृष्ट बन पड़े हैं । कारण मूल-भाषा के शब्दों से परिचय होने पर भी भाव भंगिमाओं को पकड़ने की क्षमता, अभिव्यंजना की शक्ति तथा भावचित्र को पहले मानस में लेकर पुनः उतारने की शक्ति के न होने से अनुवाद निकृष्ट बन पड़ता है । भाव चित्र को इतर भाषा भाषी के प्रति सम्प्रेषणीय बनाना आवश्यक है । शब्दों के अर्थों का ज्यों का त्यों जमघट बनाकर उपस्थित करने से भाव की अन्विति खत्म हो जाती है । पढ़ने वाले तक प्रभाव के नाम पर कुछ भी नहीं पहुँच पाता । अनुवाद वही करे जो मूल की भाषा जाने । केवल रूस में कुछ वर्ष रहने और भाषा के शब्दों को जान लेने मात्र से टॉलस्टाय के अनुवाद की क्षमता नहीं आती ।

8.5.12. कठिनता की समस्या

कोई भी कठिन वस्तु अधिक समय तक लोकमान्य नहीं होती । अनुवाद यदि कठिन हो तो जनता उसे स्वीकार नहीं करती । अनुवादक को यह स्मरण रखना चाहिए कि उसका अनुवांद साधारण जनता के लिए है, न कि विद्वानों के लिए ।

तुलसीदास के अनुसार

सरल भणिति कीरति विमल सोइ आदरहि सुजान ।

8.5.13. असीम अर्थग्रहण की समस्या : डॉ.मिताली जी का मत

शब्दों में जितना अर्थ आता है, उनके बीच में और आस-पास में उनसे कुछ अधिक ही अर्थ हुआ करता है । उसको पकड़े और उतारे बिना अनुवाद परिपूर्ण और प्रभावोत्पादक नहीं हो सकता ।

डॉ.मिताली जी के शब्दों में उत्कृष्ट भाषा सांकेतिक हुआ करती है । जितना कहती है, उससे अधिक वह सुझाती है । सीमित के द्वारा वह असीम को झलकाती है । अनुवाद में असीम अर्थग्रहण की शक्ति आवश्यक है ।

8.5.14. मूल की आत्मा के साथ तादात्म्य

जैनेन्द्र बड़े मार्के की बात कहते हैं कि जब तक मूल का अर्थ ऐसा हृदयंगम न हो जाये कि वह अनुभूति में ध्वनित होता जान पड़े, तब तक कलम को रोके रखना ही अच्छा है । मूल की आत्मा के साथ जब अपना भाव चल निकले, तभी साथ-साथ कलम को भी चलाना चाहिए अन्यथा हठात् परिश्रम के बल से अनुवादक सफल नहीं हो सकेगा ।

8.5.15. औचित्यपूर्ण शब्दों के प्रयोग की समस्या

जीवन के प्रत्येक कर्म में औचित्य का निर्वहण होना चाहिए । जहाँ औचित्य कुंठित हो जाता है वहाँ कर्म भंग हो जाता है । । 'जगदगुरु' शब्द का अनुवाद 'Master of the World' के रूप में औचित्यपूर्ण नहीं है । 'जगद्गुरु'

की पवित्रता इन अंग्रेज़ी शब्दों में लुप्त हो गई है । लक्ष्य भाषा में जगद्गुरु शब्द का लिप्यन्तरण होना चाहिए । टिप्पणी द्वारा लिप्यंतरण की व्याख्या की आवश्यकता है ।

8.5.16. समानार्थी शब्द निर्णय समस्या

श्री तीर्थवसंत लिखते हैं - किसी भी भाषा के दो पर्यायवाची शब्द एक ही अर्थ के द्योतक नहीं होते और शब्द-कोश में दिए गए समानार्थी शब्दों की बुनियाद में कोई सूक्ष्म भेद अवश्य होता है । पर समानार्थी शब्दों में परिवर्तन करना सरल नहीं है । विशिष्ट शब्द के समानार्थक शब्द भाषा में उपलब्ध नहीं होते । 'माया' और 'लीला' शब्द के लिए समानार्थी शब्द उपलब्ध नहीं हैं । उनके लिए भी अंग्रेज़ी में ऐसे शब्द नहीं मिलते जो इनके निश्चित अर्थ दे सकें । काल-परिवर्तन से शब्दों के साथ कुछ परम्परागत अर्थ जुड़ जाते हैं । भिन्न संस्कृति वाले समाज में इनके समानार्थक शब्द नहीं मिलते । शब्दों के साथ जो अर्थ जुड़े हैं, उनका संबंध किसी विशेष समय व समाज से है । भाषा सदा बदलती रहती है जिससे पुरातन शब्द युगानुकूल नहीं रहते ।

8.5.17. सफल अनुवाद की समस्या

सृजनात्मक साहित्य में और अनुवाद में अंतर है । श्री तीर्थवसंत लिखते हैं - सृजनशील लेखक अपने भाषाचातुर्य से यथार्थ का अनुकरण करता है । उसे अपने जीवन में संसार से जो अनुभव प्राप्त होता है, उसको अपनी कला के माध्यम से अपनी भाषा में प्रस्तुत करता है और अनुवादक उसी अनुकृति का अनुकरण करता है । दोनों ही नकल करते हैं । मूल लेखक अपने भावों को

भाषा में उतारता है और दूसरा अपने मन में किसी दूसरे के भावों की प्रतिक्रिया के रूप में भावों का तर्जुमा करता है । अनुवाद ऐसा हो जो अनुवाद ही लगे या मौलिक रचना प्रतीत हो ।

अनुवाद में मूल के देश-काल एवं वातावरण को रखा जाय ।

8.5.18. भाषिक अननुवाद्यता की समस्या

भाषिक अननुवाद्यता की समस्या गंभीर समस्या है । इसे अलंकारों के अनुवाद की समस्या भी कहते हैं । वस्तुतः कई अलंकारों का अनुवाद हो ही नहीं सकता । यमक, श्लेष आदि अलंकारों का अनुवाद अत्यन्त कठिन है । भाषा की विभिन्न इकाइयों की प्रतिस्थापना अत्यन्त परिश्रमसाध्य है । ''धातु के बिना यह कार्य संभव नहीं है ।'' इसमें धातु का अर्थ विभिन्न शास्त्रों में अलग-अलग हैं । 'धातु' का एक अर्थ Metal है । पर इस अर्थ से काम नहीं चलेगा । व्याकरण में 'धातु' का अर्थ क्रिया का मूल रूप है । लौहशास्त्र में धातु का अर्थ लोहा है । चिकित्सा शास्त्र में धातु का अर्थ वीर्य है । धातु शब्द का अर्थ विषय की भिन्नता के अनुसार अलग-अलग होता है ।

8.5.19. शैली की समस्या

शैली की समस्या नितांत कठिन है । भाव एवं विचार का अनुवाद इतना कठिन नहीं हैं, जितना कि शैली के अनुवाद की समस्या होती है । रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रवचन शैली, गीतात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली आदि का प्रयोग किया है । लक्ष्य भाषा में इन सभी शैलियों का निवेशन असिधाराव्रत के समान है । रहस्यवादी शैली का आनयन अनुवाद में अतिदुष्क

है । इसी प्रकार समस शैली का अनुवाद कठिन मस्तिष्क-समर बन जाता है । हरिऔध की ''रूपोद्यान प्रफुल्ल प्राय लतिका राकेन्दु बिंबानना'' पंक्ति का अनुवाद सरल नहीं है । शैलीगत बिंब की प्रतिस्थापना बायें हाथ का खेल नहीं है । इस समस्या के निराकरण में अत्यंत अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है ।

8.5.20. अनुवाद में प्रज्ञा शक्ति

अज्ञेय अनुवाद की आंतरिक समस्याओं एवं प्रज्ञाशक्ति के संबंध में कहते हैं कि जहाँ तक अनुवादक की आंतरिक समस्याओं का संबंध है, उनको कीट्स के शब्दों में ''नकारात्मक योग्यता'' कहा जा सकता है । फिर भी कवि के मुकाबले में अनुवादक की मुख्य कठिनाइयों के कुछ लक्षणों पर बल देना आवश्यक है । रचयिता को केवल अपनी विषयवस्तु के संबंध में अपने व्यक्तित्व को परे रखना पड़ता है या निलंबित करना पड़ता है, किन्तु अनुवादक को तो वैसा मूल लेखक तथा लेख की विषयवस्तु के संबंध में भी करना पड़ता है । अनुवादक को लेखक को ही नहीं, लेखक की विषयवस्तु को ही नहीं, अपितु लेखक की तरह अपने आप को भी आत्मसात् करना पड़ता है । डॉ.मिताली जी के शब्दों में इसके लिए अनुवादक में प्रज्ञाशक्ति का द्विमुखी विस्तार और दोहरा आत्मनिषेध या अनुशासन होना आवश्यक है । कवि के पास या तो प्रतिभा होती है या कुछ नहीं होता । यदि प्रतिभा है तो कवि के लिए कोई समस्या नहीं रहती । किन्तु प्रतिभा के होते हुए भी अनुवादक की सारी समस्याएँ व्यापक रूप में उसके समक्ष उपस्थित रहती हैं ।

8.5.21. प्रतीक चयन

प्रतीक प्रतिस्थापन से भाषा की प्रगति होती है । प्रतीक शब्द सभी भाषाओं में समान संख्या में नहीं हैं । कभी कभी स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में ये प्रतीक शब्द समानार्थक नहीं होते । लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त प्रतीक यदि स्रोत भाषा में न हो तो अनुवादकार्य अत्यंत कठिन बन जाता है । भारतीय भाषाओं में उपलब्ध 'हारिल पक्षी' विदेशी भाषा क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं है । अतः हारिल प्रतीक का अनुवाद अत्यंत कठिन है । इसी प्रकार नरगिस का अनुवाद भारतीय भाषाओं में नहीं हो सकता । ऐसे संदर्भों में समीपस्थ प्रतीकों का प्रयोग करना चाहिए ।

8.5.22. शब्द शक्ति के निरूपण की समस्या

शब्द शक्ति के तीन प्रकार हैं - अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना । इनसे क्रमशः तीन प्रकार के अर्थ निकलते हैं - वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ । लक्षणा एवं व्यंजना का संबंध किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय एवं संस्कृति से जुड़ा रहता है । उस जाति में प्रचलित प्रतीकों का अर्थ समझे बिना उनका अनुवाद करना कठिन है । भारतीय भाषाओं में ''गधे'' का लक्ष्यार्थ महामूर्ख है, पर अंग्रेज़ी भाषा में 'He is a donkey' का अर्थ उससे मिलता नहीं है । 'गधे' के लक्ष्यार्थ का अनुवाद और भी कठिन है । यह गधों का राज्य है - इसके अनुवाद 'It is a State of donkeys' से ऐसा जबरदस्त अर्थ नहीं निकलता । इसी प्रकार 'owl' शब्द के अनुवाद में भी अर्थानयन कठिन है । अंग्रेज़ी में owl बुद्धिमान का प्रतीक है, जबकि हिन्दी में इसका प्रतीक शब्द 'उल्लू' महामूर्ख का

अर्थ द्योतक है । अतः अंग्रेज़ी 'owl' का अनुवाद उल्लू न होकर बुद्धिमान के रूप में करना होगा ।

8.5.23. देश काल की माँग की समस्या

श्री तीर्थवसंत कहते हैं - समय व्यतीत होने पर इलियट के अनुवाद पुराने पड़ गए हैं और उनके स्थान पर नए-नए उल्थे हो रहे हैं । रचना का संबंध विशिष्ट तौर तरीके से न जोड़ कर ऐसा नियोजन करना चाहिए जिसमें अनेकानेक रसों का एक साथ संचार हो । अनुवाद का उद्देश्य दूसरों को कुछ समझाना है । निर्णय करे कि जो अनुवाद वह प्रस्तुत कर रहा है, वह विद्यार्थियों के लिए है या आम लोगों के लिए है या विद्वानों के लिए है, अर्थात् वह किस वर्ग के लिए यह कार्य कर रहा है । सुष्ठु रूपान्तर तैयार करना चाहिए जिससे कि उसमें मूल की विशिष्टताएँ अपने आप उभर आयें ।

8.5.24. शाब्दिक अनुवाद की समस्या

शाब्दिक अनुवाद सूचना साहित्य में आवश्यक है । रसात्मक अनुवाद में शाब्दिक अनुवाद से काम नहीं चलता । कभी-कभी वाक्य-प्रति वाक्य अनुवाद से काम चल सकता है, पर शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद से अर्थद्योतन नहीं होता । अनुवादक को चाहिए कि वह आवश्यकता एवं औचित्य के अनुसार अनुवाद के प्रकार का चयन करे । शाब्दिक अनुवाद करते समय अनुवादक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि स्रोत भाषा के शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में प्रचलित समानार्थक शब्द चयन प्रसंग के अनुसार किया जा रहा है । यथा-बैंक शब्द प्रसंग के अनुसार विभिन्न अर्थ देता है, जैसे -

I went to Canara Bank

यहाँ बैंक का अर्थ पैसे की लेन देन के कार्यालय से संबंधित है

I bank upon you

मैं तुम पर आधारित हूँ ।

It is a blood bank

यह रक्त संग्रहशाला है ।

8.5.25. भावानुवाद की समस्या

किसी भी विषय का भावानुवाद किया जा सकता है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय के अनुवाद में भावानुवाद अनुपयुक्त है । रसात्मक साहित्य के अनुवाद में भावात्मक अनुवाद अपनाना पड़ता है । भावानुवाद करते समय भाव एवं शब्द-दोनों पर दृष्टि रखनी पड़ती है । भावानुवाद में अनुवाद कभी-कभी विस्तृत और कभी संक्षिप्त हो सकता है ।

8.5.26. काव्यानुवाद की समस्याएँ

हंबोल्ट के अनुसार काव्यानुवाद असंभव को संभव बानाने का प्रयत्न है । हंबोल्ट की यह धारणा अनुवाद जगत् में भय की आँधी उत्पन्न करती है । बहुत से अनुवादक इस मत को हृदय में स्थान देते हुए कविता के अनुवाद को विकृत रूप दे रहे हैं । यह धारणा केवल भ्रम है । हजारों कविताओं का अनुवाद अब तक हुआ है और आगे भी होगा । किसी-किसी के अनुसार काव्य के शाब्दिक अनुवाद से उसकी रंजना शक्ति नष्ट हो जाती है । काव्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को अपने हृदय में मूल कवि के हृदय को प्रतिष्ठापित करना चाहिए । कविता हृदय की वस्तु है । अतः अनुवाद में मूल कवि के हृदय को

पुनर्जीवित करना होगा अर्थात् अनुवादक को स्वयं मूल कवि का जीवन जीना होगा ।

8.5.27. विल्हेम बान हम्बोल्ट के विचार मूल की अशुद्धियों के संबंध में

अनुवाद को स्वच्छंद रूप से ऐसी किसी व्याख्या को जो मूल रचना में अभिप्रेत नहीं है, थोपना नहीं चाहिए । अशुद्धियाँ दूर करना उसका कार्य नहीं है । टैगोर ने अपने अनेक दार्शनिक निबंधों में उपनिषद् के श्लोक के विभिन्न अर्थ भिन्न-भिन्न स्थलों पर दिए हैं । लेखक के भाव का अनुवाद करना चाहिए । अनुवाद को एक काव्यात्मक शैक्षिक साधन के रूप में अथवा सृजनात्मक आत्माभिव्यक्ति के कलात्मक साधन के रूम में लिया जा सकता है । कलाकार अनुवादक अपने आप को समान स्थिति में पाता है । पूर्णतः वफ़ादारी से बँध जाता है । प्रकाशमय और छायापूर्ण स्थलों में यदि अनुवादक प्रकाशमय और छाया के सभी भेद दूर कर दे तो मूल कृति का चित्र नीरस एवं जीवन शून्य हो जायेगा ।

8.5.28. नाट्यानुवाद की समस्या

नाटक साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें अभिनय एवं रंगमंच से संबंधित सूक्ष्म तत्वों को भी अनुवाद में स्थान देना पड़ता है । नाटक में निहित स्रोत भाषा एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक विषयों का अनुवाद अत्यंत कठिन है । विशेष व्याख्या के द्वारा इन तत्वों को सुलझाना आवश्यक है । नाटकों में प्रयुक्त कंचुकी, सूत्रधार आदि शब्दों का अनुवाद संभव नहीं है ।

8.5.29. कथानुवाद की समस्याएँ

कहानी एवं उपन्यास का अनुवाद नाटक एवं काव्य के अनुवाद की अपेक्षा सरल है । अनुवाद का यह प्रकार इसलिए सरल है कि इसमें भावों की अभिव्यक्ति सीधे ढंग से होती है । कथा साहित्य में अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति आदि तत्व कम होते हैं । अतः यह प्रकार कठिन नहीं है । आवश्यकता के अनुसार कहानी एवं उपन्यास के अनुवाद में शब्दानुवाद एवं भावानुवाद के सम्मिश्रण को अपनाना पड़ता है ।

8.5.30. वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्या

वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को मूल भाषा के शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में निर्धारित विशेष शब्दों को ही अपनाना पड़ता है । इस प्रकार के साहित्य के अनुवाद में भावुकता सहायक नहीं बनती । विशेष शास्त्र में निर्धारित विशिष्ट शब्द का ही प्रयोग करना पड़ता है, जैसे गणित में 'Triangle' के लिए त्रिकोण शब्द निर्धारित है । अनुवाद में इसी शब्द का प्रयोग होना चाहिए । कभी-कभी एक ही शब्द भिन्न-भिन्न शास्त्रों में भिन्न-भिन्न अर्थ देता है । शास्त्र के अनुवाद एवं स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में निर्धारित शब्द चुनना पड़ता है, यथा -

काव्य शास्त्र में रस - काव्यानंद
दर्शन शास्त्र में रस - परम सत्ता
पाकशास्त्र में रस - विशिष्ट तत्वों से युक्त द्रव ।

8.5.31. गीतानुवाद की समस्या

गीतानुवाद अत्यंत कठिन है, क्योंकि गीतों का अनुवाद करते समय शब्द

और भाव पर ही नहीं, बल्कि स्वर, ध्वनि एवं राग पर भी ध्यान देना पड़ता है । विभिन्न भाषाओं में प्रचलित रागों से परिचित अनुवादक ही गीतों का अनुवाद कर सकता है ।

8.5.32. अभिलेखानुवाद की समस्या

अभिलेखानुवाद अत्यंत कठिन है । अभिलेख की लिपि, तत्कालीन शब्दावली आदि का ज्ञान न हो तो अभिलेख का अनुवाद समुद्र संतरण के समान हो जाता है । प्राचीन लिपि अथवा अन्य भाषाओं में लिखित अभिलेख का अनुवाद करते समय उन लिपियों के ज्ञाताओं की सहायता लेनी पड़ती है । अभिलेख के अनुवादक को इतिहास का ज्ञान भी परम आवश्यक है ।

8.5.33. संकेतानुवाद

संकेत भिन्न-भिन्न शास्त्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में होते हैं । संकेतों को समझने के लिए शास्त्रज्ञान की आवश्यकता पड़ती है । लिपि शास्त्र में विभिन्न संकेत होते हैं, यथा - ,, :, ;, ! आदि ।

गणित शास्त्र में कई संकेत हैं, जैसे - + ____ x < > . ∴ . = आदि । इन संख्या संकेतों का अर्थ जाने बगैर अनुवाद नहीं हो सकता । आधुनिक कविताओं में इन संकेतों का प्रयोग हो रहा है । मानव-दया = O !

8.5.34. संकेताक्षरों का अनुवाद

अनुवाद करते समय यह देख लेना चाहिए कि किन संकेताक्षरों का उल्लेख ग्रंथ में हुआ है, यथा - महा. = महा भारत, रा. = रामायण, पृ.रा. =

पृथ्वीराज रासो, M V = Merchant of Venice मै. = मैथिलीशरण गुप्त । विभिन्न शास्त्रों में संकेताक्षर पृथक् पृथक् होते हैं । सतत पठन से संकेताक्षर संबंधी समस्या हल कर सकते हैं ।

8.5.35. काव्य शास्त्रीय संख्या ज्ञान की समस्या

दर्शन एवं काव्यशास्त्र में कूट पद रचना में, शास्त्रीय ग्रंथों में शब्दों के स्थान पर संख्याओं का प्रयोग किया जाता है, यथा -

1 = परब्रह्म

2 = दो आँखें अथवा दो हाथ

3 = त्रिमूर्ति अथवा तीन लोक

उपर्युक्त **शास्त्रीय शब्द** एवं संख्याओं के ज्ञान की समस्या अभ्यास से हल हो जाती है ।

8.5.36. मुहावरों के अनुवाद की समस्या

मुहावरों का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में उपलब्ध ऐसे ही अर्थयुक्त मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए । यही अर्थ देने वाले मुहावरों का चयन करना आवश्यक है । मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद नहीं करना चाहिए । 'He is in hot water' का अर्थ है 'वह बड़ी तकलीफ में है ।' इसका निकटतम समानार्थक मुहावरा है 'काँटों में फँसना' - वह काँटो में फँसा है । यह हिन्दी मुहावरा भी अंग्रेज़ी मुहावरे का पूर्ण समनार्थक नहीं है, तथापि हम इसे निकटतम समानार्थक कह सकते हैं । यदि एतद्वत् मुहावरे का प्रयोग न करके 'वह गरम पानी में है' - के रूप में शाब्दिक अनुवाद करे तो अनुवाद अत्यंत हास्यास्पद होगा । इसी

प्रकार 'He is the blue eyed boy of his teacher' वाक्य में प्रयुक्त 'blue eyed boy' का अर्थ 'परम प्रिय' है । हिन्दी में इस मुहावरे का निकटतम समानार्थक मूहावरे ''आँखों का तारा'' या ''जिगर का जिगर'' के रूप में करना है । अगर ऐसा अनुवाद न करके 'वह अध्यापक का नील नेत्र बालक है' - शाब्दिक अनुवाद करें तो अनुवाद हास्यस्पद ही नहीं, वरन् अर्थघातक भी होगा । इस प्रकार के वाक्य दोष-कोश मे स्थान पाने योग्य हैं ।

8.5.37. लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या

मूहावरों के अनुवाद की तरह लोकोक्तियों का अनुवाद भी अत्यंत कठिन कार्य है । मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी जाति, समाज एवं भाषा की खास संपत्ति हैं । जनता के संपर्क में ये मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ आप ही आप निर्मित होती हैं । लोकोक्तियों में विशेष समाज की संस्कृति की मुहर अंकित रहती है । लोकोक्तियों में धार्मिक विश्वास की छाया भी होती है । इस प्रकार की लोकोक्तियों के अनुवाद बायें हाथ के खेल नहीं है । ये लोकोक्तियाँ मानव-जाति की अनुभूति रूपी सागर के रत्न हैं । हिन्दी की एक लोकोक्ति है ''जैसे बोओगे तैसे पाओगे ।'' ठीक ऐसी ही लोकोक्ति अंग्रेज़ी में है - 'As you sow, so you reap'. कन्नड में समानार्थक लोकोक्ति है - ''माडिद्दुण्णो महाराया'' । ये सभी समानार्थक लोकोक्तियाँ हैं । 'Be a Roman while in Rome'. इसका अर्थ है ''रोम में रहते समय रोमन के रूप में रहो ।'' इसकी समानार्थक लोकोक्तियाँ अन्य भाषाओं में भी हैं, यथा - 'व्रज में गोपालराम और साकेत में दशरथ राम' । 'दिया तले अंधेरा' का अनुवाद 'Gloom beneath the light' के रूप में हो

सकता है । दोनों में लोकोक्तियों की सुषमा है ।

8.5.38. अलंकारों के अनुवाद की समस्या

अलंकारों का अनुवाद असिधाराव्रत के समान है । शब्दालंकारों का अनुवाद बहुत कठिन है । अर्थालंकारों का अनुवाद तब संभव है, जब स्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं में समानार्थक उपमान एवं प्रतीकों का उपयोग हो । शब्दालंकार का समध्वनि प्रयोग कठिन है । अनुप्रास का अनुवाद सरल नहीं है । उदाहरण -

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में ।

कविता में 'चारु चंद्र की चंचल किरणें - में 'च' तीन बार आया है । अतः इस में वृत्यनुप्रास अलंकार है । इसका अनुवाद अंग्रेज़ी में इसी नाद सौंदर्य के साथ तब संभव होगा, जब 'चारु चंद्र चंचल' शब्दों के लिए समध्वनि युक्त तीन शब्द मिलें । यह संभव नहीं है । इसी प्रकार निम्न सूचित वाक्य में निहित अलंकार युक्त अनुवाद अत्यंत कठिन है -

Let it be a day or night
With the utmost might
Fight for the right.

इसका साधारण अनुवाद किया जा सकता है । किन्तु वृत्यनुप्रास युक्त अनुवाद अत्यंत दुष्कर कार्य होगा । सांस्कृतिक चेतना से समंचित वाक्य का अनुवाद और भी कठिन है -

'मंगल सूत्र परम धन स्त्री का ।'

इसका अनुवाद अंग्रेज़ी में इसलिए कठिन है कि वहाँ मंगल सूत्र बाँधने

की प्रथा नहीं है । इसी प्रकार विशेष पशु पक्षियों के नामों का अनुवाद नहीं किया जा सकता । अंग्रेज़ी के 'नाइटिंगेल' का अनुवाद भारतीय भाषाओं मे नहीं हो सकता । ऐसे संदर्भों में उसी शब्द का प्रयोग उचित दिखाई पड़ता है । व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अनुवाद वर्ज्य है ।

8.5.39. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा प्रदेशों की संस्कृति की समस्या

स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा प्रदेशों की संस्कृति का ज्ञान सफल अनुवादक के लिए अत्यंत आवश्यक है । इस संस्कृति की जानकारी के बिना अनुवाद असफलता का पर्याय बन जाता है । लक्ष्य भाषा एवं स्रोत भाषा के क्षेत्र भिन्न भिन्न होने के कारण, उनकी संस्कृति भी पृथक्-पृथक् होती है । अतः संस्कृति से संबंधित भाव या वस्तु के संकेत-शब्द समान नहीं होते । **तिलक** का प्रयोग हिन्दू धर्म में होता है । ''गोविंद का ललाट तिलक से शोभित है'' - का अनुवाद अंग्रेज़ी में करना कठिन है, क्योंकि तिलक का प्रयोग यूरोपीय संस्कृति में नहीं है । इसी प्रकार मंगल सूत्र, सप्तपदी, अग्नि साक्षी आदि सांस्कृतिक बिंब संमचित शब्दों का अनुवाद अत्यंत कठिन है । एसं संदर्भों में शब्द का लिप्यंतरण तथा टिप्पणी का सहारा एक मात्र शरण्य उपाय है । इसी प्रकार सांस्कृतिक गरिमा से अभिमण्डित आचार्य, गुरु, सूत्रधारी, याज्ञिक, सोमयाजी आदि शब्दों का अनुवाद संभव नहीं है ।

8.5.40. पौराणिक शब्दों के अनुवाद की समस्या : डॉ.मितालीजी का मत

गंभीर अर्थ बिंब से युक्त मिथक या पौराणिक शब्दों का अनुवाद हो ही

नहीं सकता । डॉ.मिताली जी ने इस प्रकार के निम्न सूचित शब्दों का उल्लेख किया है -

संजीव करे सबकी रक्षा, वेंकटेश्वर, गिरिधर, गोपाल, सुरसांतक आदि । ये शब्द पौराणिक हैं । इन में पौराणिकता एवं सांस्कृतिकता के अर्थ बिंब हैं । इन शब्दों को यथा तथा रखना चाहिए । 'संजीव करे सबकी रक्षा' वाक्य में संजीव का अर्थ है 'हनुमानजी । इस शब्द में हनुमानजी की संजीवनी शक्ति का सागर निनाद ध्वनित है । हिमालय जाकर संजीवनी औषधि लाने का कथा प्रसंग संजीव शब्द में रणित है । संजीव शब्द के बदले में तत्पर्यायवाची शब्द हनुमान, आंजनेय, अंजनानंदन, वायुपुत्र, मारुती, बजरंगबली आदि का प्रयोग करने से मूल शब्द की गरिमा प्रकाश में नहीं आती । लेखिका आगे लिखती हैं कि जब तक हम **कथोत्थ** से अवगत नहीं होंगे, तब तक हनुमानजी की शक्ति का पूर्ण बोध अनुवाद में नहीं होगा ।

8.5.41. भाषिक अनुवाद की समस्या

भाषिक अनुवाद की समस्या प्रमुखतः अलंकारों से संबंधित है । इसका अन्य नाम अलंकारों के अनुवाद की समस्या है । भाषिक संरचना श्लेष और यमक के कारण अननुवाद्य हो जाती है, यथा -'धातु' शब्द का अनुवाद अत्यंत कठिन है । पर्याय शब्द विभिन्न शास्त्रों में अलग अलग है । व्याकरण में धातु शब्द का अर्थ क्रिया शब्द का मूल है - यथा - आ, जा, कर आदि । इस धातु से ही अन्य रूप बनते हैं - जैसे करना, करेगा, किया, की आदि । चिकित्सा शास्त्र में धातु का अर्थ पुष्टि है । लौह शास्त्र में धातु का अर्थ लौह है, जैसे -

सोना, चाँदी आदि । इसी प्रकार रस शब्द के अनुवाद में भाषिक अननुवाद्यता की समस्या उत्पन्न होती है । इसके अनुवाद में व्याख्या, कुंडली आदि का प्रश्रय लेना पड़ता है ।

8.5.42. योग्य अनुवाद की पहचान की समस्या

महेन्द्र चतुर्वेदी के अनूसार अनुवाद बड़ा ही कठिन कार्य है । कई दृष्टियों से वह मौलिक लेखन की अपेक्षा कठिनतर है । किन्तु इस सत्य के सर्वथा विपरीत आम तौर से लोगों में प्रमुखतः पढ़े लिखे लोगों में भी यह धारणा प्रचलित है कि अनुवाद कार्य सहज कार्य है और कोई भी व्यक्ति थोडे से परिश्रम से यह कार्य कर सकता है । इस भ्रान्ति के निराकरण की बड़ी आवश्यकता है । अतः अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या है कि इस कठिन काम के प्रति एक सही परिप्रेक्ष्य कैसे उत्पन्न किया जाये । संस्थाओं में ऐसी दायित्व भावना जगायी जाये कि वे योग्यता को ही एकमात्र कसौटी मानें । अनुवाद विषयक व्यापक भ्रांति का निराकरण हो और अनुवादक को उसका उचित गौरव प्राप्त हो । क्रोचे ने अपने अभिव्यंतजना-सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए लिखा था - यह या तो अभिव्यंजना है या वह अभिव्यंजना नहीं है । अच्छी और बुरी अभिव्यंजना निरर्थक पद है । कुछ यही बात अनुवाद के संबंध में कही जा सकती है - या तो अनुवाद अनुवाद है या अनुवाद नहीं है । अच्छे या बुरे अनुवाद की कल्पना निरर्थक है ।

8.5.43. सफल मनोभूमि के पुनर्निमाण

डॉ.वी.एस.नरवणे के अनुसार पूर्ण भावबोध के लिए यह आवश्यक है

कि अनुवादक उस मनोभूमि का पुनर्निमाण करे, जो रचना करने की स्थिति में की गई थी । वस्तुतः उसे इनसे भी आगे बढ़ना पड़ेगा और उस रहस्यमय क्षण की खोज करनी पड़ेगी जो कि लेखक की थी । लेखक की तरल अनुभूति घनीभूत होकर साकार होती है । उसे पूर्ण कर्मठता के साथ लेखक की लीक पर चलना पड़ेगा, याने अनुवादक को उसी स्थिति में पहुँचना पड़ेगा । मानसिक स्थिति वाद्य वृन्द के समान होती है जिसमें विभिन्न वाद्य यंत्र स्वर छेडते हैं । वे स्वर एक दूसरे के साथ झंकृत होते हैं और समन्वित होकर समवेत संगीत का समारम्भ करते हैं ।

दार्शनिक दृष्टि से अनुवाद की स्थिति कला के रूप में सदैव निराशाजनक ही रहेगी । आध्यात्मिक दृष्टि से इसकी रचना को वस्तुतः एक कृति की प्रतिलिपि की अनुकृति कहा जा सकता है ।

8.6. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि अनुवाद की विभिन्न समस्याओं का परिष्करण सुयोग्य अनुवादक ही कर सकता है । अनुवाद करते समय सफल, मनोभूमि का पुनर्निमाण करना पड़ता है । भाषा ज्ञान व विषय ज्ञान की समस्याएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । सुयोग्य महारथी की तरह अनुवादक अपने कार्य क्षेत्र में इन समस्याओं का परिष्करण करता हुआ सफलता की दिशा में आगे बढ़ता है । कथ्य, कथन शैली, प्रतीक ग्रहण, शब्द चयन, उचित संकेत आदि से संबंधित समस्याओं का परिष्करण अनुवादक को नई क्षमता प्रदान करता है ।

8.7. सारांश

प्रस्तुत निबंध में अनुवाद कार्य में संभाव्य समस्याओं का विवेचन किया गया है । अनुवाद कार्य शिखरारोहण है । हनुमान जैसे योग्य व्यक्ति ही अनुवाद कार्य रूपी समुद्र को पार कर सकता है ।

अनुवाद मौलिक रचना की तरह ही अत्यंत कठिन कार्य है । कतिपय विद्वानों के अनुसार मौलिक कार्य से भी यह अधिक कठिन है, क्योंकि इस प्रक्रिया में अनुवादक को अन्य भाषा के मूल लेखक के हृदय को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करना पड़ता है । विषय, भाषा, शैली, संवेदनशीलता आदि से संबंधित कई समस्याएँ पार करने के उपरांत अनुवादक मूल पाठ को लक्ष्य पाठ का रूप दे सकता है । यह जन्म-प्रदान कार्य की तरह कठिन है और अत्यंत आनंददायक भी है । इस निबंध में अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित कई समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

अनुवाद कार्य को मौलिक रूप प्रदान करने हेतु अनुवादक को 'पूर्णता' समस्या का सामना करना पड़ता है । प्रत्येक दृष्टि से अनुवाद को पूर्ण बनाने का भगीरथ प्रयत्न करना पड़ता है । शब्द, वाक्य, अर्थ, स्तर, ध्वनि, अभिव्यक्ति, प्रतीक, समतुल्यता, स्वाभाविकता आदि समस्याएँ नवीन कुम्भकर्णों के रूप में अनुवादक रूपी राम के सम्मुख आ जाती हैं । प्रसंगोचित शब्द प्रयोग, अनुवाद के प्रकार का चयन, विभिन्न पर्यायों में से अत्यंत निकटतम शब्द का चयन, अनुवाद में सजीवता का आनयन आदि कार्य सफल योग्य अनुवादक से ही संभव है ।

अनुवाद में चैतन्य लाने की समस्या अनुवादक की योग्यता का परीक्षण है । सजीवता अनुवाद में प्राण-प्रतिष्ठापना करती है । मूल लेखक का मनस्तत्व जान कर अर्थ प्रेषण प्रक्रिया अपनानी पड़ती है । इस मंतव्य की पुनःस्थापना लक्ष्यभाषा में योग्य अनुवादक ही कर सकता है । समतुल्यता, भाषिक इकाइयों का चयन, लक्ष्य भाषा में निकटतम प्रतीकों की पहचान, पर्याय पर्याप्तता निर्णय, युग समाज, संप्रदाय, जीवन आदि का प्रतिनिधित्व करनेवाली भाषा का प्रयोग आदि समस्याएँ चक्रव्यूह का स्मरण दिलाती हैं ।

अनुवाद कार्य की एक प्रमुख समस्या चित्र, बिंब आदि की स्थापना के रूप में हमारे सम्मुख आती है । कथ्य और कथन की समस्त विशेषताओं से समंचित होकर अनुवाद तीसरी कृति का रूप ले लेता है । तृतीय कृति वत् स्वरूप रूपायन की समस्या अत्यंत नैपुण्य संपन्न व्यक्ति ही कर सकता है ।

लक्ष्य भाषा तथा स्रोत भाषा के समग्र ज्ञान के बिना अनुवादक पंगु बन जाता है । स्रोत भाषा गत भावचित्र ग्रहण, अभिव्यक्ति की कठिनता, असीम अर्थ छवि ग्रहण आदि समस्याएँ लंका प्रवेश के समान हैं । शैली की समस्या, प्रज्ञा शक्ति प्रयोग, शब्द शक्ति, अनुवाद के प्रकार का चयन, अनुवाद विधा के अनुसार शैली निर्णय, संकेत चयन, लोकोक्ति तथा मुहावरों के समतुल्य प्रतीकों का निर्णय, काव्यानुवाद में रस, छंद, अलंकार, ध्वनि, बिंब आदि का निर्वहण, संस्कृति संबंधी शब्दों का चयन आदि कई समस्याओं का पूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत घटक में किया गया है ।

8.8. प्रश्न

i) अनुवाद कार्य में संभाव्य विषय संबंधी समस्याओं का विवेचन कीजिए ।

ii) अनुवाद कार्य में संभाव्य कथन व शैली संबंधी समस्याओं की मीमांसा कीजिए ।

8.9. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

i] अनुवाद कार्य में संभावव्य विषय संबंधी समस्याएँ

अनुवाद कार्य में कथ्य और कथन दोनों से संबंधित समस्याएँ सुरसा की तरह मुँह खोलकर हमारे सम्मुख आ जाती हैं । लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा का ज्ञान अनुवाद में आवश्यक है । उससे भी अधिक आवश्यकता विषय-ज्ञान की है । अनुवाद में विषय ज्ञान के बिना भाषा ज्ञान निरूपयोगी हो जाता है ।

विषय ज्ञान से संबंधित समस्याँए ये हैं -

i) मूल पाठ को आत्मसात् करने की समस्या
ii) कथ्य की प्रतिस्थापना में लक्ष्य पाठ में पूर्णता की समस्या
iii) लक्ष्य भाषागत विषय विवेचंन में सजीवता लाने की समस्या
iv) मूल लेखक के मंतव्य को अभिव्यक्त करने की समस्या
v) विषय संबंधी समतुल्यता की समस्या
vi) विषय प्रतिपादन में आधुनिकवादिता
vii) विचारों के विशद अन्तरण की समस्या
viii) कथ्य की दृष्टि से अनुवाद को तृतीय कृति के सम्मान योग्य बनाने की समस्या
ix) विषय ज्ञान की समस्या
x) स्रोत भाषागत भाव चित्रण की समस्या
xi) अन्विति की समस्या
xii) भावाभिव्यक्ति जटिलता की समस्या
xiii) काव्यानुवाद में द्व्यर्थी संरचना की समस्या

xiv) असीम अर्थग्रहण की समस्या
xv) मूल की आत्मा के साथ तादात्म्य
xvi) विषय प्रतिपादन में शालीनता की समस्या
xvii) सफल अनुवाद की समस्या
xviii) सृजनात्मकता की समस्या
xix) अनुवाद में प्रज्ञा एवं प्रांजलता की समस्या
xx) अनुवाद में मौलिकता आनयन की समस्या
xxi) भावबोधक प्रतीक चयन की समस्या
xxii) देश काल की माँग की समस्या
xxiii) वैज्ञानिक साहित्य में अनुवाद के प्रकार के चयन की समस्या
xxiv) रसात्मक साहित्य के भावानुवाद की समस्या
xxv) काव्यानुवाद की भावगत समस्या
xxvi) मूल पाठ की अशुद्धि की समस्या
xxvii) नाट्य अनुवाद की कथ्यगत समस्या
xxviii) कथानुवाद की तात्विक समस्या
xxix) वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के अनुवाद में शास्त्र ज्ञान की समस्या
xxx) गीतानुवाद की समस्या
xxxi) अभिलेखानुवाद से संबंधित समस्या
xxxii) समतुल्य मुहावरों के चयन की समस्या
xxxiii) समतुल्य लोकोक्तियों के चयन की समस्या
xxxiv) अलंकारों के अनुवाद में भाव विश्लेषण की समस्या
xxxv) स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा प्रदेशों की संस्कृति की समस्या
xxxvi) पौराणिक साहित्य की समस्या
xxxvii) आत्म विश्वास की समस्या
xxxviii) सफल मनोभूमि के पुनर्निमाण की समस्या

उपर्युक्त समस्याओं का विश्लेषण अपेक्षित है ।

ii] अनुवाद कार्य में संभाव्य कथन व शैली से संबंधित समस्याएँ

अनुवाद के विषय विवेचन की समस्याओं के साथ साथ कथन अर्थात् शैली से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । विषय आत्मा है

तो शैली शरीर है । शरीर की उपेक्षा नहीं की जा सकती । अनुवाद करते समय कथन संबंधी कई समस्याएँ हमारे सम्मुख आती हैं । शैली-चयन, शब्द-चयन, पर्याय-चयन, सांस्कृतिक शब्द-चयन आदि में सावधानी बरतनी पड़ती है । शैली संबंधी समस्याएँ ये हैं -

1) मूल पाठ की शैली को आत्मसात् करने कीं समस्या
2) शैली की पूर्णता की समस्या
3) लक्ष्य भाषा के कथन में सजीवता लाने की समस्या
4) मूल लेखक की शैलीगत विशेषताओं के विश्लेषण की समस्या
5) शैली संबंधी समतुल्यता की समस्या
6) अनुवाद की भाषिक समस्या
7) भाषा की विभिन्न शैलियों की समस्या
8) भाषा स्वरूप की समस्या
9) शैली निवेशन में आधुनिकवादिता की समस्या
10) अभिव्यक्ति से संबंधित विभिन्न तत्वों व पर्यायों की समस्या
11) स्रोत भाषा की विभिन्न शैलियों की समस्या
12) वास्तविक जीवन में प्रयुक्त भाषा की समस्या
13) शब्दों के प्रतिपादन की समस्या
14) भाषा ज्ञान की समस्या
15) अनुवाद की भाषा में चेतना लाने की समस्या
16) संप्रेषण की समस्या
17) शैली संबंधी कठितना की समस्या
18) वैज्ञानिक शास्त्रीय अनुवाद में एकार्थ प्रतिपादन की समस्या
19) मूल शैली के साथ तादात्म्य
20) औचित्य पूर्ण शब्दों के प्रयोग की समस्या
21) समानार्थी शब्द निर्णय समस्या
22) भाषिक अननुवाद्यता की समस्या
23) शैली के अनुवाद की समस्या
24) शैली की सरलता की समस्या
25) प्रतीक-चयन की समस्या
26) शब्द-चयन की समस्या

27) शाब्दिक अनुवाद की समस्या
28) काव्यानुवाद की शैलीगत समस्या
29) मूल शैली की अशुद्धि की समस्या
30) नाट्यानुवाद में शैलीगत समस्या
31) कथानुवाद में अभिव्यक्ति की समस्या
32) वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य में पर्याय-चयन की समस्या
33) शब्द चयन की समस्या
34) गीतानुवाद में राग नियोजन की समस्या
35) अभिलेख के अनुवाद में शब्द समस्या
36) संकेताक्षरों के अनुवाद की समस्या
37) काव्य शास्त्रीय संख्या ज्ञान की समस्या
38) मुहावरों के अनुवाद में शाब्दिक समस्या
39) अलंकारों के अनुवाद में उपमान व प्रतीकों के चयन की समस्या
40) सांस्कृतिक शब्द समस्या
41) पौराणिक शब्दों की समस्या
42) आत्म विश्वास की समस्या

उपर्युक्त समस्याओं का विश्लेषण अपेक्षित है ।

8.10. शब्दावली

1.	बिंब	-	Image
2.	तथापि	-	Despite, Inspite of
3.	यद्यपि	-	Though
4.	पृथक्	-	Separate
5.	पूर्णता समस्या	-	Problem of Perfection
6.	आयाम	-	Dimension
7.	ध्वनि बिंब	-	Suggestive Imagery
8.	प्रतीक बिंब	-	Symbolic Imagery
9.	अर्थ बिंब	-	Semantic Imagery
10.	सूचना साहित्य	-	Literature of knowledge/Information
11.	सजीवता	-	Liveliness

12.	कलेवर	-	Body
13.	चैतन्य	-	Liveliness, Consciousness
14.	मंतव्य	-	Opinion, View
15.	मसौदा	-	Draft
16.	पाद टिप्पणी	-	Foot Note
17.	संप्रेषण	-	Communication
18.	संवाद	-	Dialogue
19.	रूढिवाद	-	Traditionalism
20.	आधुनिकवादी	-	Modernist
21.	दरार	-	Crack
22.	बारीकी	-	Delicacy, Miniature
23.	उल्था	-	Translation
24.	बाडब	-	The Sea fire
25.	लचक	-	Elasticity/Twist
26.	व्यंजना	-	Suggestion
27.	अद्वितीय	-	Second to none, first
28.	मर्मज्ञ	-	Expert
29.	अंतरंगता	-	Inwardness
30.	व्यवधान	-	Break
31.	प्रवाही	-	Fluent
32.	अन्विति	-	Link
33.	माया	-	Illusion
34.	सृजनशील	-	Creative
35.	अननुवाद्यता	-	Non-translatability
36.	श्लेष	-	Duality
37.	धातु	-	Root, verb root
38.	वर्णनात्मक शैली-		Descriptive style
39.	प्रतीकात्मक शैली	-	Symbolic style
40.	आनयन	-	To bring
41.	निवेशन	-	Investing
42.	नकारात्मक	-	Negative
43.	निलंबित करना	-	To suspend

44.	आत्म निषेध	-	Self Negation
45.	अनुशासन	-	Discipline
46.	द्विमुखी	-	Dual faces
47.	हारिल	-	A bird which does not touch the earth
48.	नरगिस	-	Narcissus flower
49.	अभिधा	-	Literal meaning
50.	लक्षणा	-	Implied meaning
51.	व्यंजना	-	Suggested meaning
52.	वाच्यार्थ	-	Word meaning
53.	लक्ष्यार्थ	-	Figurative meaning
54.	व्यंग्यार्थ	-	Ironical meaning
55.	रंजनाशक्ति	-	Power of entertainment
56.	धारणा	-	View point, Capacity
57.	पुनर्जीवित	-	To reinstall/ To re-live
58.	अभिनय	-	Acting
59.	सूत्रधार	-	Narrator
60.	कथानुवाद	-	Translation of Fiction
61.	वक्रोक्ति	-	Innvendo, oblique utterance
62.	भावुकता	-	Emotional
63.	सन्तरण	-	To cross
64.	अभिलेख	-	Record
65.	संकेत	-	Symbol
66.	लिपिशास्त्र	-	Science of scripts
67.	काव्य शास्त्र	-	Science of poetry, poetics
68.	मुहावरा	-	Idiom
69.	लोकोक्ति	-	Proverb
70.	उपमान	-	The object of comparison
71.	उपमेय	-	The subject of comparison
72.	वृत्यनुप्रास	-	A kind of alliteration
73.	सप्त पदी	-	Seven circum ambulations as a part of Hindu wedding ceremony

74.	याज्ञिक	-	Pandit who conducts Holy fire rituals
75.	संजीव	-	An epithet for Hanuman
76.	अभिव्यंजना सिद्धांत	-	Expressionalism
77.	समवेत संगीत	-	Chorus collective singing
78.	रूपक	-	Metaphor
79.	अतिशयोक्ति	-	Exaggeration

8.11. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध सूची

I] निबंध

1. अनुवाद की समस्याएँ - डॉ.मिताली भट्टाचारजी
2. अनुवाद - श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन
3. सूचना साहित्य का अनवाद - श्री अशोकजी
4. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.यस.नरवणे
5. साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - डॉ.नगेन्द्र

II] ग्रन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद कला : कुछ विचार - सं.आनन्द प्रकाश खेमाणी, वेद प्रकाश
3. काव्यानुवाद की समस्याएँ - सं.डॉ.भोलानाथ तिवारी एवं महेन्द्र चतुर्वेदी
4. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - सं. डॉ.भोलानाथ तिवारी

NOTES

NOTES

NOTES

इकाई नौ

अनुवाद के विभिन्न सिद्धांत

9.0. प्रस्तावना

9.1. उद्देश्य

9.2. अनुवाद के विभिन्न सिद्धांत

9.3. अनुवाद का अर्थ

9.3.1. ट्रान्सलेशन शब्द

9.3.2. भाषिक इकाईयाँ

9.3.3. इकाईयों में अंतर

9.4. अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत

9.4.1. अनुवाद सिद्धांतों की व्यापकता

9.4.2. सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण का सिद्धांत

9.4.3. 'न छोड़ो न जोड़ो' सिद्धांत : डॉ.मिताली एवं डॉ.भोलनाथ जी का मत

9.4.4. सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण सिद्धांत का विश्लेषण

9.4.5. सांस्कृतिक सिद्धांत

9.4.6. पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत

9.4.7. अर्थ संप्रेषण सिद्धांत

9.4.8. समतुल्यता सिद्धांत

9.4.9. नाइडा का समतुल्यता सिद्धांत

9.4.10. कैटफोर्ड द्वारा प्रदत्त अनुवाद की परिभाषा

9.4.11. भाषिक अर्थ सिद्धांत

9.4.12. पर्याय सिद्धांत

9.4.13. वाक्य में अर्थ निर्धारण सिद्धांत

9.4.14. विभिन्न भाषा समानार्थी शब्द सिद्धांत

9.4.15. आत्मनिष्ठ सिद्धांत

9.4.16. समन्वय सिद्धांत

9.4.17. व्याख्या सिद्धांत

9.4.18. प्रभाव साम्य सिद्धांत

9.4.19. प्लेटो : अनुकरण

9.5. निष्कर्ष

9.6. सारांश

9.7. अभ्यास : प्रश्न

9.8. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

9.9. शब्दावली

9.10. संदर्भ ग्रंथों व निबंधों की सूची

9.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे । अनुवाद को सफल, सुन्दर एवं सक्षम बनाने हेतु एतद्विषयक सिद्धांतों एवं तत्वों का पूर्ण ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । प्रिय पाठको, प्रत्येक महान व्यक्ति जीवन के विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में कतिपय सिद्धांतो का पालन करता है । इसी प्रकार आपको अनुवाद के क्षेत्र में सव्यसाची बनने हेतु भाषांतरण संबंधी निश्चित नियमों का पालन करना प्रड़ेगा । तभी आपकी सफलता रूपी किरीटश्री में नये मयूर पंख विराजित हो सकेंगे । सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण, अर्थ संप्रेषण, समतुल्यता आदि सिद्धांतों के निर्वहण से अनुवाद में नई कांति-किरणों का प्रस्फुटन होता है ।

9.1. उद्देश्य

प्रत्येक कार्य के निर्वहण की एक सुनिश्चित प्रणाली अथवा पद्धति होती है । इस प्रणाली एवं पद्धति के सुनिर्धारित नियम एवं सिद्धांत होते हैं । इन सिद्धांतों का अनुपालन करते हुए निश्चित कार्य का निर्वहण करना पड़ता है । विज्ञान के सिद्धांत सर्वजन विदित हैं । अनुसंधान के भिन्न-भिन्न सिद्धांत होते हैं । इसी प्रकार वैश्विक औपयोगिकता गुण से समंचित अनुवाद पद्धति के विशिष्ट सिद्धांत हैं । अनुवाद करते समय अनिवार्य रूप से इन सिद्धांतों का पालन करना चाहिए । तब अनुवाद सुन्दर एवं समग्र बन सकता है ।

इन सिद्धांतो की जानकारी अनुवादक को समग्रता प्रदान करती है । इन सिद्धांतों के ज्ञान के बिना अनुवाद विषय का अध्ययन तथा अनुवाद कार्य दोनों

अपूर्ण रह जायेंगे । अनुवाद कार्य में हमें यह ज्ञात रहना चाहिए कि अमुक संकल्पना के लिए लक्ष्य भाषा में कौन सा प्रतीकात्मक पर्याय है, अर्थात् समतुल्य शब्द कौन-सा है । इस दिशा में समतुल्यता सिद्धांत से हमें सहायता मिलती है, जिससे हम जान सकते हैं कि establishment के लिए समतुल्य शब्द सिब्बंदी है । यह जानकारी समतुल्यता सिद्धांत एवं शास्त्रज्ञान सिद्धांत से प्राप्त होती है । इसी प्रकार अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में हमें कई सिद्धांत सहायक बनते हैं, यथा-ध्वनि निवेशन सिद्धांत, रूप ज्ञान सिद्धांत, शब्द चयन सिद्धांत, अर्थ संप्रेषण सिद्धांत, प्रतीक सिद्धांत, व्याख्या सिद्धांत, प्रभाव समता सिद्धांत, पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत, सांस्कृतिक एकीकरण सिद्धांत आदि ।

अनुवाद से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों के विश्लेषण द्वारा पाठकों को सुयोग्य अनुवादक बनाना तथा अनुवाद कार्य में सफलता का प्रतिष्ठापन करना प्रस्तुत इकाई का लक्ष्य है ।

9.2. अनुवाद के विभिन्न सिद्धांत

हमारा युग विज्ञान का युग है । अक्षर संसार में भी यह अनुवाद का युग है । अनुवाद के इस युग में विभिन्न भाषाओं की विषय-संपत्ति तथा अभिव्यक्ति बढ़ती जा रही है । भाषा का रत्नकोश प्राप्त कर मनुष्य अन्य जीव कोटि की अपेक्षा अधिक संपन्न हो गया है । मानवमात्र की सभ्यता, संस्कृति तथा शालीनता की सर्वोच्च उपलब्धि भाषा है । संसार के विभिन्न राष्ट्रों में सहस्रों भाषाएँ हैं । मानव के मन और मस्तिष्क की ऊर्जा इन भाषाओं के ज्ञान और शक्ति साहित्यों में बह रही है । इस ऊर्जा को प्राप्त करने हेतु इन सभी भाषाओं की जानकारी

अपेक्षित है, जो संभव नहीं है । इस समस्या का परिहार केवल अनुवाद से हो सकता है । अनुवाद भाषा की सामाजिक शक्ति को अन्य भाषाओं में वितरित करता है । इसके माध्यम से स्रोत भाषा की विजय वैजयंती लक्ष्य भाषा को प्राप्त होती है । अनुवाद वह साधन है, जिससे लक्ष्य भाषा के कथ्य एवं कथन की वृद्धि में चार चाँद लग जाते हैं ।

9.3. अनुवाद का अर्थ

अनुवाद का अर्थ पुनःकथन है । पर यह पुनःकथन अन्य भाषा में होता है । एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में पुनः अभिव्यक्त करना ही अनुवाद है ।

9.3.1. ट्रान्सलेशन शब्द

अंग्रेजी का 'ट्रान्सलेशन' शब्द लैटिन के 'ट्रान्सलेटम' शब्द से आया है । ट्रान्स का अर्थ है - इस पार या दूसरी ओर । 'लाटम' का अर्थ 'टु कैरी' ले जाना, दूसरी ओर ले जाना - पारवहन, अर्थात् एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है । इन दोनों भाषाओं के भाषिक अंग अर्थात् वाक्य रचना, शब्द चयन आदि अलग-अलग हैं । मूलपाठ की भाषा स्रोतभाषा है । जिस भाषा में अनुवाद होता है, वह लक्ष्य भाषा है । अनूदित पाठ सहपाठ है ।

9.3.2. भाषिक इकाइयाँ

प्रत्येक भाषा की अपनी अलग भाषिक इकाइयाँ होती हैं । ध्वनि, शब्द,

रूप, वाक्य, अर्थ, मुहावरे और लोकोक्ति से संबंधित ये विशेषताएँ उस भाषा के अविभाज्य अंग हैं । ये अंग अन्य भाषाओं में अलग होते हैं । स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति शब्दतः एवं अर्थतः समान नहीं होती । डॉ. एस. एम. रामचन्द्रस्वामी के शब्दों में - ''पूर्णतः समान अभिव्यक्ति का आशय है कि मूल पाठ को पढ़कर लक्ष्य भाषाभाषी भी वही अर्थ ग्रहण करता है ।'' पर ये अभिव्यक्तियाँ एक समान नहीं होतीं, क्योंकि इन दोनों भाषाओं की भाषिक इकाइयाँ समान नहीं होंतीं । अनुवाद स्रोत भाषा का यथासाध्य समतुल्य प्रतिष्ठापन लक्ष्य भाषा में करता है । मूल पाठ और सहपाठ एक जैसे नहीं होते ।

9.3.3. इकाइयों में अंतर

भाषिक इकाइयों में अंतर गोचर होता है । स्रोत भाषा की इकाइयों के समशब्द लक्ष्य भाषा में कभी-कभी नहीं होते । अंग्रेजी के उपपद A, An, The हमारी भाषाओं में नहीं हैं । हिन्दी का 'ने' प्रयोग अन्य भाषाओं में उपलब्ध नहीं है । द्रविड भाषाओं के क्रियारहित वाक्य अन्य भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं । अंग्रेजी के बॉय व बॉय्स के स्थान में हिन्दी में 'लड़का, लड़के, लड़कों' रूप हैं । अंग्रेजी के 'कम' के लिए हिन्दी में 'आ, आओ, आइये, आयें' - चार रूप हैं । एक भाषा की इकाइयों में जो पारस्परिक संबंध होता है, वह प्रसंग साहचर्य अन्य भषाओं में नहीं होता । इन सभी भेदों के होते हुए भी अनुवाद में समतुल्य कथ्य एवं कथन का प्रतिष्ठापन करने का प्रयत्न किया जाता है । अतः अनुवाद को एक समझौता माना जा संमता है । डॉ. मिताली भट्टाचारजी के शब्दो में -

'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव, सहज और समान अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है ।'

9.4. अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत

विभिन्न विद्वानों ने अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद में अर्थ संप्रेषण, अर्थ विश्लेषण, सहपाठ, अर्थ नियोजन, मूल पाठ और सहपाठ में प्रभाव समता, सांस्कृतिक संदर्भ, पुनःक्रोडीकरण आदि के संबंध में जो दृष्टिकोण व्यक्त किये हैं, उनके आधार पर अनुवाद के कतिपय सिद्धांत प्रतिष्ठापित हुए हैं । प्रमुख सिद्धांत ये हैं - अर्थ संप्रेषण सिद्धांत, व्याख्या सिद्धांत, समतुल्यता सिद्धांत, प्रभाव समता सिद्धांत, सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण का सिद्धांत, पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत आदि । उपर्युक्त सिद्धांतों का विवेचन करते हुए डॉ. एस. एम. रामचन्द्रस्वामी कहते हैं कि ये सभी सिद्धांत कथ्य और कथन के समतुल्य विन्यास को स्पष्ट करते हैं ।

9.4.1. अनुवाद सिद्धांतों की व्यापकता

अनुवाद सिद्धांतों की व्यापकता के संबंध में डॉ. बाल सुब्रह्मणियन लिखते हैं कि अनुवाद सिद्धांत अनूदित साहित्य के संदर्भ में ही विकसित और पल्लवित हुए हैं । प्रत्येक अनूदित कृति का अपना अनुवाद सिद्धांत होता है, चाहे वह व्यक्त न हुआ हो । ये सिद्धांत अतीव व्यापक होते हैं ।

9.4.2. सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण का सिद्धांत

प्रत्येक भाषा का सांस्कृतिक परिवेश होता है । शब्द के साथ उसका

सांस्कृतिक अर्थ बिम्ब जुड़ा रहता है । प्रत्येक भाषा के ऐसे कई शब्द होते हैं, जो उस भाषा क्षेत्र के सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भों से जुड़े हुए रहते हैं । ऐसे शब्दों का अनुवाद करते समय मेलिनोवस्की के साहचर्य संदर्भ सिद्धांत context of situation का प्रश्रय लेना पड़ता है । भाषा के सांस्कृतिक संदर्भों की जानकारी के बिना अनुवाद करना अत्यन्त कठिन हो जाता है । मेलिनोवस्की के अनुसार अनुवाद सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण (Unification of Cultural Contexts) है । इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के बीच में सेतुबन्धन का कार्य करता है ।

9.4.3. 'न छोड़ो न जोड़ो' सिद्धांत : डॉ.मिताली एवं डॉ.भोलानाथ जी का मत

डॉ.भोलानाथ तिवारी एवं डॉ. मितालीजी के अनुसार स्रोत भाषा के मूल पाठ का अनुवाद लक्ष्य भाषा में पूर्णतः संभव नहीं है । अनुवाद में कुछ छूटता है और कुछ जुड़ता है । यह अनुवाद का सर्वप्रथम सूत्र है - 'कुछ न छोड़ो कुछ न जोड़ो' । सचमुच यह आदर्श सिद्धांत है, पर ऐसा नहीं होता । साहिन्य जैसे शैली प्रधान विषयों में शैलीय तत्व छूट जाते हैं और अनुवाद को सक्षम बनाने हेतु कतिपय अंश जोड़ दिये जाते हैं । तब इस सिद्धांत के साथ-साथ अनुवाद चिंतन में 'कुछ जोड़ो कुछ छोड़ो' नामक नया सिद्धांत जुड़ता है ।

9.4.4. सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण सिद्धांत का विश्लेषण

डॉ.जी.गोपीनाथन सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण सिद्धांत का विश्लेषण करते हुए कहते हैं - एकता निवेशन की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की

परिकल्पना के अंतर्गत सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण अनुवाद की एक व्याख्या है । इसमें अन्य कतिपय सिद्धांतों को भी समाहित कर सकते हैं । अनुवाद की इस परकाय प्रवेश प्रक्रिया में स्रोत भाषा की संस्कृति की आत्मा एवं शरीर, अर्थ एवं शैली का अन्य भाषिक संस्कृति के अर्थ एवं शैली तत्वों में अंतरण एवं एकीकरण हो जाता है । यह प्रक्रिया एक पुनः सृजन की माँग करती है । अनुवाद मूल की आत्मा या अर्थ की नयी भाषा एवं उसकी संस्कृति के संदर्भ में एक व्याख्या का रूप धारण करता है । भारतीय परंपरा के अनुसार वाक् अर्थात् शैली, शब्द एवं अर्थ पार्वती एवं परमेश्वर की तरह अभिन्न या संयुक्त हैं । ये अर्धनारीश्वर के रूप में अभिन्न हैं । परन्तु पार्वती एवं परमेश्वर के रूप में उनका स्वतंत्र अस्तित्व भी है । इसी तरह अर्थ एवं शैली की बुनावट पाठ में इस तरह होती है कि उन्हें अलग करना कठिन है । परन्तु अनुवाद जैसे प्रायोगिक विषयों में उनके द्वन्द्वात्मक अस्तित्व को हमें स्वीकारना होगा । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि किसी भी पाठ में अर्थ संरचना एवं शैलीगत संरचना का संश्लेषण मिलता है ।

9.4.5. सांस्कृतिक सिद्धांत

श्री बालसुब्रह्मणियन के शब्दों में अनुवाद के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व की ओर मेलिनोवस्की जैसे समाज शास्त्रियों ने इशारा किया है । प्रत्येक भाषा का एक सांस्कृतिक परिवेश होता है, जिसके निर्माण में उसके बोलनेवाले लोगों की परम्परा, इतिहास, भौगोलिक पृष्ठभूमि आदि का हाथ रहता है । प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक शब्द होते हैं, जिनसे एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं

कतिपय संबंध जुड़े रहते हैं । अनुवाद के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययनों के सन्दर्भ में उनके साहचर्य - सन्दर्भ का सिद्धांत (Context of Situation) अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

स्रोतभाषा की संस्कृति अनुवाद की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व है । अतः स्रोतभाषा के सांस्कृतिक तत्वों को लक्ष्य भाषाभाषी तक कैसे संप्रेषित करें, इस पर मेलिनोवस्की ने यह निष्कर्ष निकाला है कि अनुवाद सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण (Unification of Cultural Contexts) है । उनके इस सूत्र की व्याख्या करते हुए आर. हेच. रोबिन्स बताते हैं – ''जहाँ भी लक्ष्य भाषा में सांस्कृतिक एकता का अभाव रहता है, वहाँ पर मूल के शब्दों का एकल शब्दों द्वारा 'अनुवाद' अपर्याप्त हो जाता है । ऐसे स्थानों पर व्याख्या एवं अतिरिक्त सूचनाओं की आवश्यकता होती है, जिससे कि सांस्कृतिक संदर्भ की पुनर्रचना हो सके ।'' – General Linguistics - An Introductory Linguistic Sciences and Language Survey (P.28) - M.A.K.Halliday. The Linguistic Sciences and Language Teaching (P.130) - के अनुसार साहित्यिक अनुवाद में मूल पाठ के समग्र संदर्भ को ध्यान में रखना पड़ता है । अनुवाद सांस्कृतिक सेतुबन्धन का कार्य करता है ।

9.4.6. पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत

अमेरिकन भाषावैज्ञानिक विलियम फौवले के अनुसार अनुवाद पुनः क्रोडीकरण (Re-codification) है । इसमें दो कोड़ हैं -

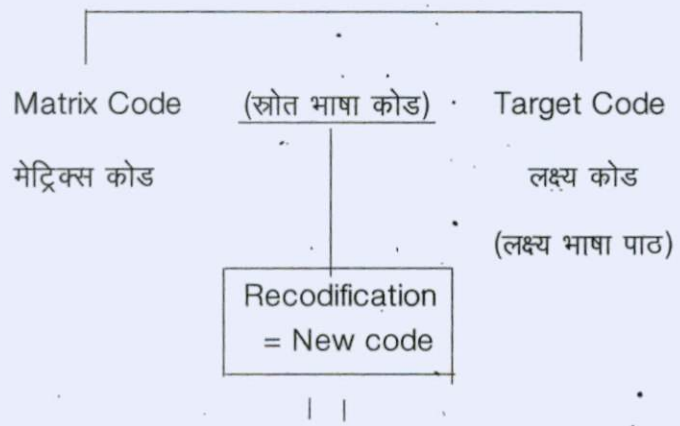

इस क्रोडीकरण में अनुवाद वैलिड कोड के रूप में स्थापित होता है - It emerges as a code in its own right and establishes itself as a valid code. अनुवादक मैट्रिक्स कोड़ में प्राप्त सूचनाओं के कोड को लक्ष्य कोड की सीमा में निविष्ट करता है । यह एक नया कोड बन जाता है । इसमें अनुवादक 'मूलनिष्ठता' के प्रश्न से अधिक चिंतित नहीं होता । साहित्यिक अनुवाद कभी कभी स्वतंत्र कृति सा दृग्गोचर होने लगता है ।

9.4.7. अर्थ संप्रेषण सिद्धांत

अर्थ संप्रेषण सिद्धांत के अनुसार अनुवाद में अर्थ का पारवाहन या पुनः कथन होता है, अर्थात् एक भाषा में व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है , याने अर्थ को मूल पाठ के स्थान बिन्दु से लक्ष्य भाषा पाठ के स्थान बिन्दु तक पहुँचाया जाता है । इसमें पूर्णार्थ का संप्रेषण होता है । यह पूर्णार्थ अभिधार्थ से आगे बढ़कर लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को भी समेटता चलता है । अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया में अनुवादक पाठक की तरह संरचनार्थ, प्रयोगार्थ, सहप्रयोगार्थ, संपृक्तार्थ आदि को अर्थ सीमा में ग्रहण करता है । अर्थ और शब्द साहित्य के

सहतत्व हैं । वे जल वीचि और पार्वती परमेश्वर के समान हैं । मूलपाठ का विश्लेषण अर्थ और शब्द को अलग करता है । अर्थग्रहण के उपरान्त मूल पाठ की इकाइयों को लक्ष्य भाषा की इकाइयों में संक्रमित करता है । इस प्रक्रिया में अनुवादक अर्थ क्षेत्र सिद्धांत (Field Theory of meaning), घटकीय विश्लेषण का सिद्धांत (Componential Analysis of meanings) और भाषाओं की अंतरण परक तुलना प्रणाली (Method of Transfer Comparison) की सहायता लेता है ।

समायोजन द्वारा अनूदित पाठ को रूप दिया जाता है । डॉ.भट्टाचारजी के शब्दों में सर्जक बनकर अनुवादक रचयिता की भूमिका निभाता है । अर्थ संयोजन तब सफल होता है, जब अनूदित पाठ मूल पाठ का समानार्थक हो । अर्थ संप्रेषण में कुछ जुड़ता है, कुछ छूटता है । अतः कह सकते हैं कि अनुवाद अनुवाद ही है, वह मूल नहीं हो सकता ।

9.4.8. समतुल्यता सिद्धांत

अनुवाद मूल पाठ का निकट प्रतिस्थापन है । समतुल्य प्रतीकों के द्वारा स्रोत भाषा के प्रतीकों को लक्ष्य भाषा में व्यक्त किया जाता है । डॉ.रामचन्द्र स्वामी के अनुसार अनुवादक का आद्य कर्तव्य मूल पाठ का अर्थ ग्रहण है । उसे स्रोत भाषा का अर्थ ग्रहण करता पड़ता है । अर्थ निश्चयन के लिए प्रधान सहायक तत्व ये हैं :-

1. स्थान 2. काल 3. संदर्भ 4. अनुतान 5.बलाघात

6. मुहावरे 7. लोकोक्ति 8. विशेष प्रयोग 9. उपसर्ग 10.प्रत्यय

11. शब्द शक्ति 12. व्यंजना 13. लिंग 14. वचन 15. समास ।

इन की सहायता से मूल पाठ का अर्थ समझकर अनुवादक लक्ष्य भाषा में उसका समानार्थ लाने का प्रयास करता है । वह लक्ष्य भाषा में समानार्थी अभिव्यक्ति की खोज करता है । इसके लिए वह मूल पाठ की इकाई के स्थान में समानर्थी लक्ष्य भाषा की इकाई को प्रतिस्थापित करता है । समरूपी पर्यायों का मिलना कठिन है । अतः समतुल्य रूप अपनाता है, जिससे कि लक्ष्य भाषाभाषी भी अनूदित पाठ से वही अर्थ ग्रहंण करे, जो स्रोत भाषाभाषी मूल पाठ से ग्रहण करता है । इसमें अर्थ न अधिक हो, न कम हो, न कुछ हटकर हो । समतुल्य सिद्धांत या समतुल्यता सिद्धांत का अर्थ यह नहीं है कि उसमें सभी शब्द समानार्थक हों । ये शब्द निकटतम अर्थ प्रतीक होते हैं ।

9.4.9. नाइडा का समतुल्यता सिद्धांत

ई.ऐ.नाइडा कहते हैं - अनुवाद का तात्पर्य यह है कि मूल भाषा के संदेश को अर्थ व शैली की दृष्टियों से लक्ष्य भाषा में निकंटतम, सहज समतुल्यता के साथ प्रकट किया जाय - Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in the meaning and secondly in the style. समतुल्यता सिद्धांत के प्रमुख समर्थक हैं - ई. ऐ. नाइडा और जे. सी. कैटफोर्ड ।

9.4.10. कैटफोर्ड द्वारा प्रदत्त अनुवाद की परिभाषा

कैटफोर्ड अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार देते हैं - Translation is the replacement of textual material in one language by equivalent textual material in an other language. अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामाग्री का लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामाग्री द्वारा प्रतिस्थापना है ।

डॉ.जी.गोपीनाथन के अनुसार कैटफोर्ड भाषा के रूप तत्वों से अर्थ तत्व को अधिक महत्व देते हैं ।

9.4.11. भाषिक अर्थ सिद्धांत

समतुल्य का अर्थ पूणतः समानर्थी शब्द नहीं होते । भाषिक अर्थ से संबंधित सिद्धांत कई हैं । आगे इनका विवरण दिया जा रहा है । शब्दार्थ विश्लेषण में इनसे सहायता मिलती है ।

9.4.12. पर्याय सिद्धांत

भाषा में पूर्ण पर्यायवाची शब्द नहीं होते, समानर्थी शब्द समपर्याय नहीं हैं, यथा -

(अ) गणेश - विघ्नेश, पार्वती पुत्र
(आ) ग्रंथ - पुस्तक, किताब

ये पर्यायवाची शब्द नहीं है । इनको समानार्थी मान लेने पर भी इनसे अलग-अलग अर्थ निकलत्ते हैं ।

9.4.13. वाक्य में अर्थ निर्धारण सिद्धांत

भिन्न-भिन्न वाक्यों में प्रयुक्त एक ही शब्द का समान अर्थ नहीं होता ।

उदाहरण -

1. मैंने एक घर खरीदा ।
2. आज घर का घर शहर में गया है ।
3. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का ।

9.4.14. विभिन्न भाषा समानार्थी शब्द सिद्धांत

विभिन्न भाषाओं में समान कहे जानेवाले शब्दों में पूर्ण समानधर्मिता नहीं होती । ये तथाकथित समानार्थी शब्द हैं, जैसे हिन्दी का जलज व अंग्रेजी का लोटस तथाकथित समानार्थी शब्द मात्र हैं ।

9.4.15. आत्मनिष्ठ सिद्धांत

अनुवाद में मूल के प्रभाव के कुछ अंश नष्ट हो जाते हैं । अनूदित सामग्री में अभिव्यक्त अनुभव जितना ही आत्मनिष्ठ होता है, उतना ही अर्थ घटता रहता है ।

9.4.16. समन्वय सिद्धांत

डॉ.जी.गोपीनाथन अनुवाद संबंधी सिद्धांतों का समन्वय करते हुए अनुवाद के समन्वय सिद्धांत का प्रतिपादन इस प्रकार करते हैं - अनुवाद के संदर्भ में अर्थ ही पाठ की आत्मा है, जिसका अन्तरण होता है और शैली ही वह आवरण या शरीर है, जिसमें अर्थ रूपी आत्मा निवास करती है । जब शैली को भाषा के रूप में लेते हैं, तब भाषा के विभिन्न स्तरों को शैली के लिए भी लागू कर सकते हैं । इस तरह शैली का शब्द रूप एवं वाक्य के स्तरों में विभाजन कर सकते हैं । ये सभी मिलकर पाठ का आवरण या शरीर बनता है । अनुवाद की प्रक्रिया

में अर्थ या आत्मा का अन्तरण होता है, जबकि स्रोत पाठ की शैली का, विभिन्न स्तरों द्वारा प्रतिस्थापन होता है । अनुवाद की एक विशेषता यह है कि मूल की शैली के कुछ गुण भी लक्ष्य पाठ की शैली में आत्मा या अर्थ के साथ अन्तरित होते हैं । ज़ेक विद्वान एन्टन पापोविच द्वारा प्रतिपादित अभिव्यक्ति का विस्थापन (Shift of expression) नामक सिद्धांत इस प्रसंग में उपयोगी है । उनके अनुसार मूल की शैली की भाषिक विशेषताओं का लक्ष्य पाठ की शैली में संगुंफन सीधे संभव नहीं है । यह उचित विस्थापन की प्रक्रिया से ही संभव है । स्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं के शैलीगत वैषम्य के कारण ही यह विस्थापन आवश्यक हो जाता है ।

9.4.17. व्याख्या सिद्धांत

मेडम मदनिकोवा का विचार है कि अनुवाद एक तरह से टीका टिप्पणी करना है । यह व्याख्या प्रक्रिया शास्त्रीय अनुवाद में अधिक होती है । धार्मिक एवं पौराणिक ग्रन्थों के रूपान्तरण में भी व्याख्या का सहारा लिया जाता है ।

अनुवाद भाष्य माना जाता है । कुछ ऐसे अंश होते हैं, जिनका अनुवाद नहीं किया जाता है, जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञा, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पारिभाषिक शब्दावली, सांस्कृतिक प्रतीक शब्द आदि । अनुवाद में इनकी व्याख्या करनी पड़ती है । साहित्यिक अनुवाद में शैलीय तत्व की व्याख्या करने की आवश्यकता होती है । मूल पाठ को लक्ष्य भाषा तक पहुँचाने तक विषय की व्याख्या करनी पड़ती है ।

अनुवाद मूलतः व्याख्या है । डी.जी.ओझेटि के अनुसार अनुवाद टिप्पणी का सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप है । नाइडा भी मानते हैं कि अनुवाद में कुछ न कुछ व्याख्या होती है । रोमन यागबसन कहते हैं कि अनुवाद स्रोतभाषा के शाब्दिक प्रतीकों की व्याख्या है, जो लक्ष्य भाषा के शाब्दिक प्रतीकों से की जाती है । जेम्स ह्यूम्स अनुवाद को आलोचनात्मक व्याख्या का नाम देते हैं ।

9.4.18. प्रभाव साम्य सिद्धांत

डॉ.रामचन्द्रस्वामी एवं डॉ. भोलानाथ जी यह मत व्यक्त करते हैं कि अनुवाद में कथ्य और कथन की दृष्टियों से मूल पाठ एवं अनूदित पाठ में कुछ अन्तर होता ही है । स्रोत भाषा की इकाइयों की समानार्थी इकाइयाँ लक्ष्य भाषा में नहीं होतीं । 'कुछ न छोड़ो कुछ न जोड़ो' सिद्धांत अनुवाद में संभव नहीं है । अनुवाद में कुछ अंश छूट ही जाते हैं । कविता आदि के अनुवाद में छूट जानेवाले अंशों का पुनःसृजन होना चाहिए । यहाँ अनुवादक कवि बन जाता है । अपनी प्रतिभा के बल पर मूल सामग्री को बीज रूप में लक्ष्य भाषा में ऐसा प्रस्तुत करता है कि उसे पढ़कर लक्ष्यभाषी उसी प्रकार प्रभावित होता है, जिस प्रकार मूल पाठ को पढ़कर स्रोत भाषाभाषी प्रभावित होता है । अनुवाद को सशक्त बनाने हेतु इसमें नये अंश जोड़ दिये जाते हैं । यह प्रभावधर्मी अनुवाद है । यह पाठक प्रधान अनुवाद है । इस अनुवाद का लक्ष्य, लक्ष्यभाषा का पाठक है । स्रोतभाषा से अनभिज्ञ होने पर भी लक्ष्य भाषा का पाठक अनुवाद की प्रभविष्णुता के कारण अनुवाद से पूर्ण आनन्द प्राप्त करता है ।

9.4.19. प्लेटो : अनुकरण

डॉ.वी.एस.नरवणे लिखते हैं - प्लेटो के अनुसार मूल लेखक स्वयं सत्य तक, जो कि आदर्श है, नहीं पहुँच पाता, बल्कि एक अनुकरण, जो कि बाह्यार्थ है, कर पाता है । यदि हम प्लेटो के अन्तिम निर्णय को भी मान्यता न दें, तब भी वास्तविकता यही है कि प्रत्येक अनुवादक एक सीमा तक एक अनुवाद का अनुवाद करता है । पहले अनुवादक तो कवि स्वयं है, जो सर्वप्रथम साधारण भाषा को सौन्दर्यात्मक अनुभव की भाषा में रूपांतरित करता है, अथवा जैसे कि प्रत्येक युग में रहस्यवादियों ने दावा किया है कि पहला अनुवादक कवि है, जो मानवीय भावनाओं को सुग्राह्य बनाने के हेतु सृष्टिकर्ता के संगीत को स्वरबद्ध करता है ।

9.5. निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों के पूर्ण ज्ञान तथा तन्निर्वहण से ही हम स्रोत भाषा की संपत्ति को अनुवाद के माध्यम से लक्ष्य भाषा में वरदान के रूप में प्रदान कर सकते हैं । ये सिद्धांत वे आयाम हैं, जो अनुवाद में कथ्य, कथन, शैली, मूल छवि आदि की प्रतिस्थापना में हाथ बँटाते हैं । सिद्धांत सफलता के कल्प वृक्ष हैं । सांस्कृतिक सिद्धांत, पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत, आत्मनिष्ठ सिद्धांत, भाषिक अर्थ सिद्धांत आदि का निर्वहण अनुवाद के कलेवर में उज्ज्वल ऊर्जा उत्पन्न करता है ।

9.6. सारांश

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के शास्त्रीय पक्ष के विभिन्न रहस्यों का

समुद्‌घाटन किया गया है । अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी एतत्कार्य की सफल संपन्नता, ज्ञान प्रसरण तथा वैश्विक ज्ञान प्राप्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है । प्रस्तुत निबंध में अनुवाद कार्य की महत्ता निरूपित करते हुए इस कार्य की सुचारु संपन्नता हेतु आवश्यक नियमों का उल्लेख किया गया है । ये नियम ही अनुवाद के सिद्धांत हैं । मूल पाठ का भाषांतरण सिंधु-संतरण के समान है । स्रोत भाषा के पाठ का समपाठ लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना एक उत्तरदायित्वपूर्ण परिश्रम का कार्य है । मूल लेखक के हृदय को अपने हृदय में सन्निविष्ट कर लक्ष्यभाषा में उसका पुनःप्रतिष्ठापन करना एक सुयोग्य अनुवादक से ही संभव हो सकता है । यह संभावना अथवा संभाव्यता एक सुयोग्य सुप्रशिक्षित अनुवादक ही कर सकता है । भाषा की विभिन्न इकाइयाँ, यथा-ध्वनि, रूप, शब्द, वाक्य, अर्थ, प्रोक्ति आदि का पुनःप्रतिष्ठापन निश्चित नियमों के अधीन है । अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि मूल की सुगंध उससे संप्राप्त हो सके । अनुवाद के सिद्धांत मूलतः इन्हीं इकाइयों पर आधारित हैं । इन इकाइयों के अतिरिक्त अन्य तत्व भी सिद्धांतो के आधारभूत तत्व बनते हैं, यथा - भाषाज्ञान, व्याकरण, उपमान, प्रतीक, संस्कृति, संप्रदाय, शास्त्रज्ञान, भाषाविज्ञान, मुहावरे, लोकोक्ति, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान, अलंकार, रसयोजना, गुण, रीति, वृत्ति, औचित्य, ध्वनि, छन्द, भावसंप्रेषण, अर्थद्योतन आदि । सफल अनुवाद कार्य के समग्र निर्वहण हेतु आवश्यक ज्ञान प्रदायक सिद्धांतों का विवेचन इस लेख में हुआ है । ये सिद्धांत अनुवाद रूपी महासौध के आधारस्तंभ हैं ।

इस घटक में अनुवाद के निम्नसूचित प्रमुख सिद्धातों का विश्लेषण

किया गया है - भाषाज्ञान सिद्धांत, ध्वनिव्यवस्था सिद्धांत, अर्थ संप्रेषण सिद्धांत, ज्ञान प्रसरण सिद्धांत, व्याख्या सिद्धांत, समतुल्यता सिद्धांत, प्रभाव समता सिद्धांत, एकीकरण सिद्धांत, पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत, सांस्कृतिक सिद्धांत, भाषिक सिद्धांत, प्रतिष्ठापना सिद्धांत, अर्थ निष्ठ सिद्धांत आदि । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सिद्धांतों के अनुपालन से अनुवाद कार्य सुन्दर, सुबोध एवं सफल बन सकता है ।

9.7. अभ्यास : प्रश्न

1. अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों का विवेचन कीजिए ।

2. **टिप्पणी लिखिए -**

   अ. समतुल्यता सिद्धांत

   आ. सांस्कृतिक एकीकरण सिद्धांत ।

9.8. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

I] अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों का विवेचन

ज्ञान विज्ञान की निरंतर प्रगति के साथ अनुवाद का महत्व दिन में द्विगुणित एवं रात में चतुर्गुणित बढ़ रहा है । अनुवाद प्रस्तुत वैज्ञानिक युग में वैश्विक प्रक्रिया का रूप ले रहा है । अनुवाद के माध्यम से हम विभिन्न भाषाओं में निहित ज्ञान के समुद्र के रत्न प्राप्त कर सकते हैं । इसके बिना हमारी भाषा अधिक संपन्न नहीं हो सकती है । जिस भाषा में अनुवाद कार्य सुचारु रूप से संपन्न होता है, वह भाषा महत्वपूर्ण बन जाती है । इस कार्य के सुचारु निर्वहण से संबंधित विभिन्न सिद्धांतो की जानकारी अत्यंत आवश्यक है । सिद्धांतों का

ज्ञान अनुवाद कार्य रूपी खड्ग को तेज बना सकता है जिससे कि हम अज्ञान को काट सकते हैं ।

अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत ये हैं -

1. ध्वनि व्यवस्था सिद्धांत
2. शब्द चयन सिद्धांत
3. अर्थ संप्रेषण सिद्धांत
4. व्याख्या सिद्धांत
5. समतुल्यता सिद्धांत
6. प्रभाव साम्य सिद्धांत
7. सांस्कृतिक संदर्भों के एकीकरण का सिद्धांत
8. पुनःक्रोडीकरण सिद्धांत
9. साहचर्य संदर्भ सिद्धांत
10. 'न वर्जन न ग्रहण' सिद्धांत 'न छोड़ो न जोड़ो' सिद्धांत
11. परकाय प्रवेश सिद्धांत
12. अर्थक्षेत्र सिद्धांत
13. घटकीय विश्लेषण सिद्धांत
14. तुलनात्मक सिद्धांत
15. भाषिक अर्थ सिद्धांत
    * पर्याय सिद्धांत
    * वाक्य में अर्थ निर्धारण सिद्धांत
    * विभिन्न भाषागत समानार्थी शब्द सिद्धांत
16. आत्मनिष्ठ सिद्धांत
17. समन्वय सिद्धांत
18. अभिव्यक्ति विस्थापन सिद्धांत
19. अनुकरण सिद्धांत

उपर्युक्त सिद्धांतों का परिचय देते हुए उनका महत्व निरूपित करना आवश्यक है ।

II] (अ) समतुल्यता सिद्धांत

अनुवाद के सिद्धांतों में समतुल्यता सिद्धांत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । यह सिद्धांत अनुवाद के मूलभूत कार्य का निरूपण करता है । अनुवाद कार्य में समतुल्यता के निर्वहण से ही शालीनता संपन्न होती है । अनुवाद का अर्थ ही समतुल्यता-नियोजन है ।

स्रोतभाषा के मूल पाठ का, लक्ष्यपाठ में समतुल्य सहपाठ नियोजन ही अनुवाद है, अर्थात् स्रोतभाषा में जो मूल सामग्री है, उसे कथ्य एवं कथन की दृष्टि से समतुल्यता के धरातल पर पुनःप्रतिष्ठापित करता पड़ता है । यह समतुल्यता मूलपाठ तथा सहपाठ से संबंधित है । इसी तत्व से मूल लेखक का हृदय लक्ष्यभाषा में पुनःप्रतिष्ठापित होता है । समतुल्यता सिद्धांत का ज्ञान अनुवादक को समग्रता प्रदान करता है । समतुल्यता निम्न सूचित तत्वों में अपेक्षित है -

स्थान, काल, संदर्भ, अनुतान, बलाघात, मुहावरे, लोकोक्ति, विशेष प्रयोग, उपसर्ग, प्रत्यय, शब्दशक्ति, व्यंजना, लिंग, वचन, समास आदि । इनकी सहायता से मूल पाठ का अर्थ समझकर लक्ष्य भाषा में अनुवादक समानार्थ स्थापित कर सकता है । समतुल्य रूप अपनाकर अनुवादक अर्थ संप्रेषण में सफल होता है ।

ई.आई.नाइडा समतुल्यता सिद्धांत के प्रसिद्ध समर्थक हैं । जे. सी. कैटफोर्ड ने भी इस दिशा में काफी कार्य किया है ।

(आ) सांस्कृतिक एकीकरण सिद्धांत

अनुवाद ज्ञान ही नहीं, वरन् सांस्कृतिक भाव संपत्ति भी प्रदान करता है । वस्तुतः अनुवाद स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा के बीच में संस्कृति के विभिन्न तत्वों का रेशमी पट बुनता है । अनुवाद से हम केवल विषय ज्ञान ही नहीं, वरन् संस्कृति का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं ।

प्रत्येक शब्द के साथ उसका सांस्कृतिक अर्थबिंब जुड़ा रहता है । इन

शब्दों का अनुवाद इतना सरल नहीं है, क्योंकि इन शब्दों का सीधा संबंध उस भाषा तथा उस भाषा के समाजों की संस्कृति के साथ जुड़ा रहता है, यथा - आचार्य, गृहलक्ष्मी, सप्तपदी, मंगलसूत्र आदि शब्दों के शाब्दिक अनुवाद से पूर्ण अर्थ द्योतन नहीं होगा । मंगलसूत्र वह पवित्र सूत्र है जिसे हिंदू संस्कृति का अनुयायी वर विवाह के समय वधू को पहनाता है । जिस अनुवादक को इस सांस्कृतिक चेतना का ज्ञान नहीं है, वह मंगलसूत्र शब्द का अनुवाद वेलफेत्रेरत्रेड के रूप में करेगा । इसी प्रकार जनेऊ का अर्थ क्रासथ्रेड के रूप में करेगा । उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सांस्कृतिक ज्ञान के बिना अनुवाद कार्य अटपटेपन का प्रदर्शनालय बन जायेगा ।

सांस्कृतिक अर्थबिंब के सफल संप्रेषण से अनुवाद सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण संपन्न कराता है । एकीकरण हृदय को हृदय से मिलाता है । मेरिनोवस्की इसलिए अनुवाद को सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण मानते हैं अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के बीच में सेतुबंधन का कार्य करता है । निम्नसूचित अंशों का प्रस्तुतीकरण उत्तर में अपेक्षित है -

1) अनुवाद के द्वारा सांस्कृतिक परकाय प्रवेश
2) अनुवाद के द्वारा सांस्कृतिक तत्वों का प्रचार
3) सांस्कृतिक साहचर्य सिद्धांत
4) आर. एच. रोहिन्स का सांस्कृतिक व्याख्या सिद्धांत ।

9.9. शब्दावली

1.	सिद्धांत	-	Principle
2.	अक्षर	-	Letter
3.	शालीनता	-	Dignity

4.	ऊर्जा	-	Energy
5.	वितरित करना	-	To distribute
6.	पारवहन	-	To take somebody or something to other side.
7.	सहपाठ	-	Co-Text
8.	भाषिक इकाई	-	Linguistic Unit
9.	साहचर्य	-	Co-existance, Co-movement
10.	पुनःक्रोडीकरण	-	Recodification
11.	एकीकरण	-	Unification
12.	सेतुबंधन	-	Construction of bridge
13.	लक्ष्य भाषा	-	Target Language
14.	स्रोतभाषा	-	Source Language,
15.	विस्थापना	-	Shift

9.10. संदर्भ ग्रंथों व निबंधों की सूची

निबंध

1. अनुवाद के विविध सिद्धांत - डॉ. यस. यम. रामचन्द्रस्वामी
2. अनुवाद - श्री पी. के. बालसुब्रह्मणियन
3. अनुवाद : एक सांस्कृतिक सेतु- डॉ.जी.गोपीनाथन
4. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे
5. अनुवाद के प्रकार - डॉ.मिताली भट्टाचारजी
6. अनुवाद : एक विचार - डॉ.नगेन्द्र ।

ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. General Linguistics - An Introductory - Linguistic Sciences and Language Survey - M.A.K. Holliday
3. अनुवाद - सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ।

NOTES

ಆದೇಶ ಸಂಖ್ಯೆ : ಕರಾಮುವಿ/ಅಸಾವಿ/4–060/2013–2014 ದಿನಾಂಕ : 24–09–2013
ಒಳಪುಟ : 60 GSM MPM ವೈಟ್ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪೇಪರ್ ಮತ್ತು ಹೊರಪುಟ: 170 GSM ಆರ್ಟ್‌ಕಾರ್ಡ್
ಮುದ್ರಕರು : ಅಭಿಮಾನಿ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್ ಲಿ., ಬೆಂಗಳೂರು–10 ಪ್ರತಿಗಳು : 1,200

Karnataka State Open University

Manasagangotri Mysore - 570 006

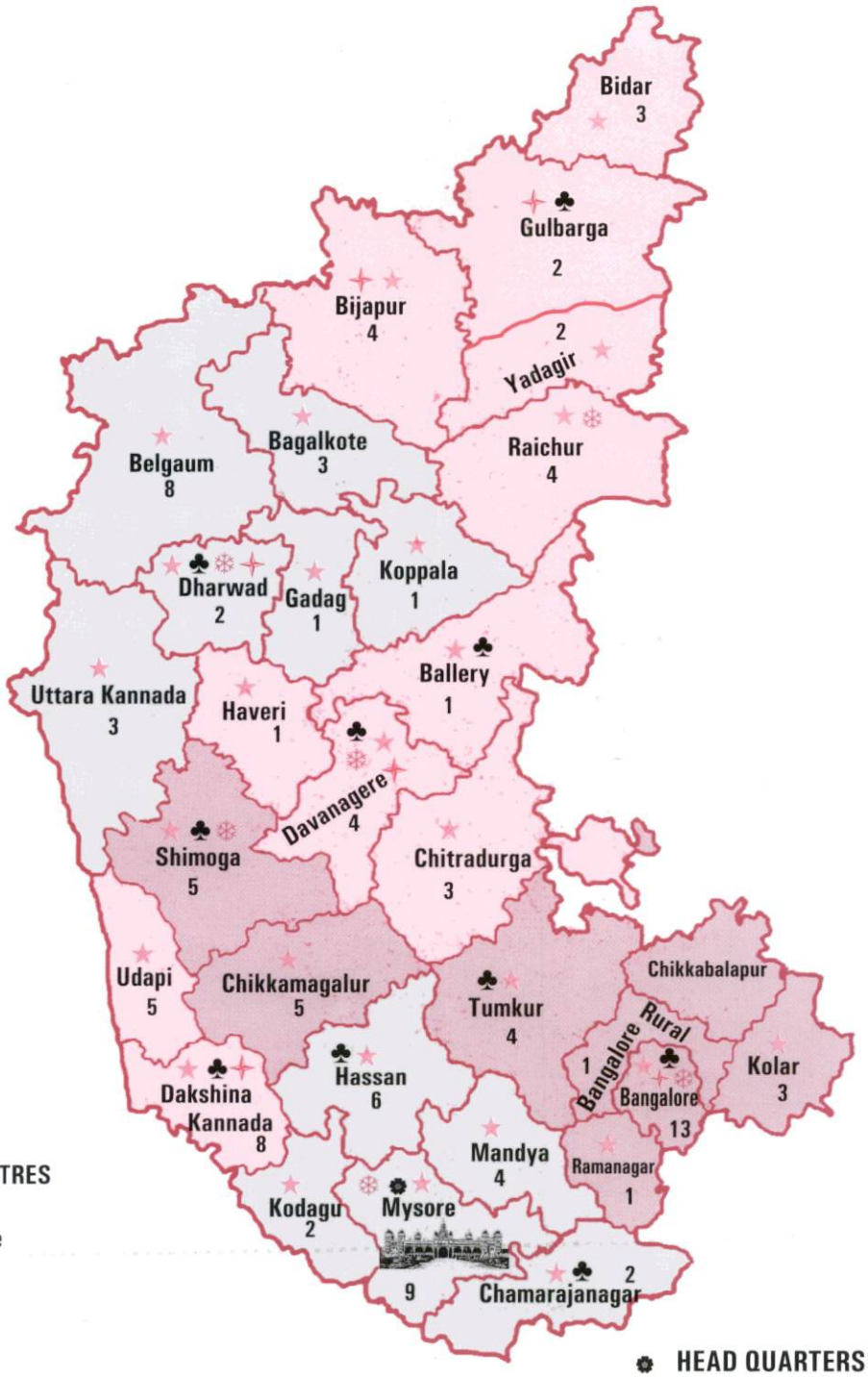

♣ **REGIONAL CENTRES**

Bangalore
Davanagere
Gulbarga
Dharwad
Shimoga
Mangalore
Tumkur
Hassan
Chamarajanagar
Bellary

HEAD QUARTERS

Total Study Centres : 111

Regional Centres : 10

B.Ed Study Centres : 10

M.Ed Study Centres : 08

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.

INSTRUCTIONAL SYSTEM